जैन भारती

मार्च 2015 • वर्ष 63 • अंक 3 • वार्षिक ₹ 200

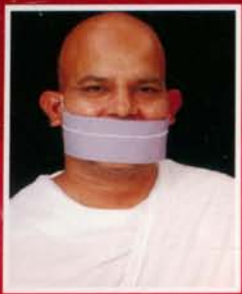

मैत्री

धार्मिक लोग अपने आराध्य की उपासना करते हैं। धर्म के क्षेत्र में उपासना अथवा भक्ति का मूल्य है। धर्म का दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व है - सदाचार। उसका धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से ऊंचा स्थान है। नास्तिक मनुष्य को भी सदाचारी बनना चाहिए ताकि स्वस्थ समाज की रचना हो सके।

एक मुनि अपने कुटीर में योगनिद्रा में सो रहा था। आधी रात के समय अकस्मात् उसकी नींद टूटी। उसने देखा कि उसके कक्ष में कोई सुंदर आकृतिवाला पुरुष दीपक के प्रकाश में कुछ लिख रहा है।

मुनि ने पूछा - आप कौन हैं? कहां से आए हैं? किसलिए आए हैं? यहां क्या कर रहे हैं?

आगन्तुक ने उत्तर दिया - मैं भगवान का दूत हूँ। भगवान के पास से आया हूँ। भगवान के भक्तों की सूची बनाने के लिए मनुष्य-लोक में आया हूँ। इस सूची में पहला नाम मैं आपका ही लिख रहा हूँ।

साधु ने कहा - मैं भगवान का भक्त नहीं हूँ। मैं न तो मंदिर आदि में जाता हूँ और न ही भगवान का नाम जपता हूँ। इसलिए भगवान के भक्तों की सूची में मेरा नाम कृपा करके न लिखें।

बात समाप्त हो गई। रात बीती। दिन भी बीत गया। फिर रात हुई। मुनि सो गया। मध्यरात्रि का समय। मुनि की नींद टूट गई। वही पुरुष फिर से मुनि को दिखाई दिया।

ऋषि ने कहा - अरे! कल मैंने स्पष्ट कहा था कि मैं भगवान का भक्त नहीं हूँ फिर आज पुनः क्यों आए?

भगवान के दूत ने कहा – महामानव! कल मैं उन महापुरुषों की सूची बना रहा था, जिनको भगवान प्रिय हैं। आज मैं उन श्रेष्ठ पुरुषों के नाम लिख रहा हूँ, जो भगवान को प्रिय हैं। आप भगवान में श्रद्धा रखते हैं या नहीं, किन्तु भगवान तो आप पर कृपालु हैं, क्योंकि आप प्राणी मात्र के प्रति मैत्री की भावना रखते हैं। उक्त भी है -

हे प्रभो! मेरे मन में सब प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव, गुणी जनों के प्रति प्रमोदभाव, दुःखियों के प्रति करुणाभाव और विपरीत वृत्तिवालों के प्रति मध्यस्थ भाव बना रहे।

आचार्य श्री महाश्रमण

वर्ष 63 | मार्च 2015 | अंक 03

जैन भारती

परामर्शक
डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

प्रधान संपादक
कमल कुमार दुगड़

संपादक
सुरेंद्र कुमार बोरड़

प्रकाशकीय कार्यालय
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,
कोलकाता - 700 001
फोन : 033-2235 7956 / 2234 3598
फैक्स : 033-2234 3666
इमेल : info@jstmahasabha.org
वेबसाइट : www.jstmahasabha.org

आवरण : **गौरीशंकर**

मूल्य : 20/-
सदस्यता शुल्क : वार्षिक 200/-रु.
त्रैवार्षिक 500/- रु.
दसवर्षीय 1500/- रु.

मुद्रक :
आकार अक्षर प्रेस प्रा. लि.
158 लेनिन सरणी, कोलकाता - 700013
मोबाइल : 9903211215 / 9830747699

अनुक्रम

संबोध		
संपादकीय		
ऋषभ : अहिंसोन्मुखी समाज के प्रथम कर्णधार	आचार्य महाप्रज्ञ	07
आचार्य भिक्षु : साध्य-साधन के विविध पहलू	आचार्य महाप्रज्ञ	10
आचार्य मघवागणी	प्रस्तुति : कमल कुमार दुगड़	14
हृदय बसे गुरुवर माणकगणी	आचार्य महाश्रमण	18
आचार्य माणकगणी	प्रस्तुति : सुरेंद्र कुमार बोरड़	19
वैज्ञानिक दृष्टि में सजीव और निर्जीव की भेदरेखा	आचार्य तुलसी	22
विश्व शांति का सूत्र है अहिंसा	आचार्य महाश्रमण	26
नारी	स्वामी विवेकानंद	30
सोच के उजाले	साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा	32
मीडिया में स्त्री विमर्श	प्रो. शंभुनाथ	34
संत पुरुष (कविता)	आचार्य महाश्रमण	36
तिलोत्तमा (बंगला कहानी)	वनफूल (अनुः डॉ. पी.के.मुखोपाध्याय)	37
छमा बड़न को चाहिए	सं	42
स्वास्थ्य, प्रसन्नता और प्रेक्षा	मुनि किशनलाल	45
मातृ-भक्ति के कुछ अनूठे उदाहरण	सं.	47
महासभा संवाद		49
अहिंसा यात्रा अमृत संदेश		60
काशी में सर्वधर्म सम्मेलन		68
ज्ञानशाला संवाद		70
सभा संवाद		71
विविध		87

भिक्खु दृष्टांत

बात करामात

बूंदी में सवाईराम ओस्तवाल से चर्चा करते समय भिक्षु ने कहा - 'गाय और भैंस के मुंह के आगे अधिक चारा डालने पर वे उसे इधर-उधर बिखेर देते हैं।'
वह बोला - 'मुझे पशु बना दिया।' वह नाराज हो गया।
तब स्वामीजी ने कहा – 'तुम यदि पशु हो गए, तो मेरा ज्ञान चारा हो जाएगा।' ऐसा कहने पर वह राजी हो गया। फिर उसने भिक्षु को गुरु बना लिया।

. कृष्णार्पण

किसी समय वेषधारी साधुओं ने सवाईराम से कहा - 'हमने तेरापंथी साधुओं को इस प्रकार उत्तर दिया, इस प्रकार उत्तर दिया, उन्हें परास्त कर दिया।
तब सवाईराम बोला - 'दो जनों के झगड़ा होने पर एक आदमी अपने घर को कृष्णार्पण कर देता है। दूसरा कलह करने से डरता है, अपने घर की सुरक्षा करता है। इसी प्रकार तेरापंथी साधु अपने साधुपन की सुरक्षा करता है। वह अंट-संट बोलने से भय खाता है। तुमने अपना घर कृष्णार्पण कर रखा है। तुम्हारे सामने अपने साधुपन की सुरक्षा का प्रश्न नहीं। इसलिए तुम जैसा मन में आता है, वैसा बोलते हो।' यह कह उसने उन वेषधारी साधुओं को निरुत्तर कर दिया।

. झूठी चुगली

एक दिन चर्चा करते समय वेषधारी साधुओं ने कहा - 'तुम हमें दोषी बतलाते हो। पर तुम्हारे गुरुओं को भी छोटे किवाड़ खोलने का दोष लगता है।
तब सवाईराम ने कहा -'किसी राजा का एक मंत्री राजस्व का गबन नहीं करता। दूसरा मंत्री उससे द्वेष रखता था, इसलिए उसने उसकी शिकायत की - 'यह राजस्व का गबन करता है।'
राजा ने दोनों को इकट्ठा कर पूछा, तब चुगलखोर मंत्री ने कहा - 'इसने बच्चों को सरकारी पन्ने, स्याही और लेखनी दी है।'
तब उस मंत्री ने कहा - 'मैंने बच्चों को पन्ने, स्याही और लेखनी दी है, वे उन्हें पढ़ाने के लिए दी हैं। वे शिक्षित होने पर सरकारी सेवा में ही लगेंगे।' यह सुन राजा प्रसन्न हो गया। चुगलखोर मंत्री लज्जित हो गया।
जैसे चुगलखोर ने झूठी चुगली की और दोष बतलाया, वैसे तुम भी छोटा किंवाड़ खोलने का दोष बतलाते हो, इसलिए तुम भी झूठे हो।'

सबसे बड़ी त्रासदी

आचार्य तुलसी

रेशम के धागों में लगी गांठों को सुलझाना सरल नहीं है। मनुष्य का मन भी रेशम के धागे जैसा जटिल है। उसे सुलझाने के प्रयत्न भी उलझनों को बढ़ाने वाले हो जाते हैं। इन्हीं उलझनों के कारण मनुष्य अपनी संस्कृति के प्राणवान पहलुओं को नजरअंदाज कर देता है। हिंदुस्तान की संस्कृति में अपनेपन की पुट है, अहिंसा एवं करुणा की पदचाप है, सदाचार की आहट है। बावजूद इसके पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्ते टूट रहे हैं। अपनेपन की सोच धुंधली हो रही है। हिंसा और क्रूरता की वारदातें बढ़ रही हैं। दुराचार की रफ्तार तेज हो रही है। यह सब क्यों होता है? क्या हम अपनी संस्कृति को भूल गए हैं? क्या इस देश की धरती पर नई संभावनाओं के अंकुर नहीं फूटेंगे? ये सब कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जो दिन-रात आंखों में खटकते रहते हैं।

हिंदुस्तान की अपनी पहचान है। आज उसके सामने भी पहचान का संकट सिर उठाए खड़ा है। ऐसा संकट तब आता है, जब कोई समाज या देश परिवर्तन के दौर से गुजरता है। परिवर्तन के इस दौर में मूल्य-मानक बदलते हैं, भूमिकाएं बदलती हैं, जीवनशैली बदलती है, पर व्यक्ति ज्यों का त्यों स्थिर रहता है। जिस समय व्यक्ति की पहचान उसके राष्ट्र के आधार पर होने लगेगी, राष्ट्रीय पहचान का संकट अपने आप समाप्त हो जाएगा।

परिवर्तन वह तत्त्व है, जिसके प्रभाव से जड़ और चेतन कोई भी मुक्त नहीं है। परिवर्तन का अपना चरित्र है। उस चरित्र को सही आकार तब मिलता है, जब व्यक्ति अपनी विचारधारा, दृष्टि और सोच में भी सही परिवर्तन लाता है। जब तक परिवर्तन की अवधारणा स्पष्ट नहीं होती, अहिंसा और सदाचार के मूल्य भी स्वीकृत नहीं होते। कुछ लोगों का चिंतन है कि हिंदुस्तान की धरती पर राम आए, कृष्ण आए, महावीर आए, गांधी आए और भी अनेक महापुरुष आए। वे हिंसा और क्रूरता को नहीं मिटा सके। क्या अब उनका नामशेष किया जा सकता है? प्रश्न ठीक है। हमें इस बात को नहीं भूलना है कि यह संसार है। इसमें क्रूरता भी रहेगी, करुणा भी रहेगी, हिंसा भी रहेगी, अहिंसा भी रहेगी। दुराचार भी रहेगा, सदाचार भी रहेगा। हमें एक ही काम करना है कि क्रूरता, हिंसा एवं दुराचार का पलड़ा भारी हो रहा है, उसके स्थान पर करुणा, अहिंसा और सदाचार का पलड़ा भारी करना है। अहिंसा के प्रति आस्थाशील लोग यह छोटा-सा संकल्प स्वीकार कर लें, तो देश की सांस्कृतिक पहचान स्थिर हो सकती है।

आज की सबसे बड़ी त्रासदी है चारित्रिक मूल्यों के प्रति अनास्था। एक पीढ़ी की अनास्था आने वाली कई पीढ़ियों में संक्रांत हो जाती है। इसी प्रकार आस्था का भी संक्रमण हो सकता है। मेरा यह निश्चित विश्वास है कि जिस दिन चरित्र की आस्था संक्रमणशील हो जाएगी, चरित्रहीनता और मूल्यहीनता की खोखली दीवारें भरभराकर गिर पड़ेंगी।

अहिंसा सार्वभौम की कल्पना

आचार्य महाप्रज्ञ

अहिंसा की शक्ति से हम सब परिचित नहीं हैं। उसकी उपयोगिता के कुछ पहलू अस्पष्ट हैं, इसलिए हम उसे नकार रहे हैं, किन्तु उसकी सृजनात्मक शक्ति के प्रति हमारी आस्था गहरी नहीं है।

प्रत्येक शक्ति के विकास के लिए त्रिसूत्री कार्यक्रम आवश्यक होता है - शोध, प्रयोग और प्रशिक्षण। वैज्ञानिक विकास के साथ यही त्रिसूत्री कार्यक्रम जुड़ा हुआ है।

हम अपेक्षा करते हैं कि अहिंसा के क्षेत्र में बलिदानी कार्यकर्ता मिले। इसकी पूर्ति कैसे संभव हो? जिसके नये-नये आयाम नहीं खोजे जाते, वह वस्तु पुरानी पड़ जाती है। पुरानी के प्रति कोई आकर्षण नहीं हो सकता। किसी भी वस्तु की सच्चाई को प्रमाणित करने की कसौटी बनता है प्रयोग।

अहिंसा की व्याख्या ज्यादा हो रही है। उसके प्रयोग नहीं हो रहे हैं। इसलिए अहिंसा के उपदेश जनता को आकर्षित नहीं कर रहे हैं।

लोग सोचते हैं – हिंसा में शक्ति है, आकर्षण है। हजारों-हजारों लोग हिंसा की रणभूमि में प्राण-विसर्जन कर देते हैं, पर अहिंसा की रणभूमि में प्राणार्पण करने वाले इने-गिने लोग भी दुर्लभ हैं। इस अंकन में कोई अतिरंजन नहीं प्रतीत हो रहा है। पर इस स्थिति के निर्माण में प्रशिक्षण के अभाव की भूमिका को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। हिंसक शस्त्रास्त्रों पर शोध, प्रयोग और प्रशिक्षण के पीछे हजारों-हजारों वैज्ञानिक और प्रशिक्षक लगे हुए हैं। प्रतिदिन लाखों-लाखों पुलिस के जवानों और सैनिकों का अभ्यास चलता रहता है। किन्तु अहिंसा के प्रशिक्षण की कहीं कोई व्यवस्था नहीं है। और न कहीं उसके प्रति कोई आकर्षण उत्पन्न करने की योजना है। ऐसी स्थिति में अहिंसा के विकास की कोई कल्पना नहीं की जा सकती। अहिंसक समाज की रचना मात्र एक स्वप्न बनी हुई है। उसे साकार करने के लिए अहिंसा सार्वभौम एक परिकल्पना है, एक साधन है, एक उपाय है।

हिंसा की बाढ़ को रोकने का विकल्प है अहिंसा। अहिंसा के विकास का साधन है उसका प्रशिक्षण। अहिंसा सार्वभौम माध्यम बनेगा, उसके प्रति आकर्षण उत्पन्न करने का और प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं को अहिंसा की रणभूमि में व्याप्त करने का।

शस्त्रसज्जित सैनिक मारने की बात सोचता है। वह मरने की बात नहीं सोचता। वह मर सकता है, पर संकल्प दूसरों को मारने का ही रखता है।

अहिंसा का प्रशिक्षित कार्यकर्ता मरने की बात सोच सकता है, पर दूसरों को मारने की बात कभी नहीं सोच सकता। यह अभय के विकास की प्रक्रिया सरल नहीं है, फिर भी प्रयत्न के द्वारा उसे सरल और संभव बनाया जा सकता है।

संपादकीय

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा कोलकाता से प्रकाशित **जैन भारती** पत्रिका का प्रवेशांक पाठकों को सौंपते हुए एक अनिर्वचनीय आह्लाद की अनुभूति हो रही है। जैन भारती मूलतः नैतिक-आध्यात्मिक विमर्श की मासिक पत्रिका है, जिसमें संबोध, संधान, संदर्भ, समुत्थान, साहित्य, स्वास्थ्य और संप्रति जैसे सप्त सकारों में विभाजित आलेख प्रकाशित किए जा रहे हैं। इस पत्रिका का उद्देश्य धार्मिक एवं तात्विक विश्लेषण, मूल्यान्वेषण, अनुशीलन आदि के अतिरिक्त साहित्य, संस्कृति एवं सामाजिकता से संबंधित रचनाओं के द्वारा समाज में नैतिकता की प्रतिष्ठा एवं मानवीय चरित्र का उन्नयन करना है।

उक्त प्रयोजन हेतु जैन भारती में मानव जीवन को विशेष रूप से प्रभावित करने वाले प्रमुख पहलुओं के साथ-साथ वैचारिक उन्मेष, परिष्कृत रंजन एवं मानवीय व्यवहार से संबंधित रचनाएँ, महिलाओं, किशोरों एवं बालमन पर आधारित सामग्री, स्वास्थ्यपरक एवं योग-साधना, प्रेक्षाध्यान आदि से संबंधित लेख, मानव जीवन से गहरा सरोकार रखने वाली कुछ ज्ञानवर्धक तथा मननीय सामग्री और अध्यात्म, धर्म, दर्शन, जीवन, समाज, राजनीति एवं अन्य क्षेत्रों में विभिन्न विद्वानों के चयनित विचार, सूक्तियाँ एवं इन विषयों से संबंधित अद्यतन सूचनाएँ प्रकाशित की जा रही हैं। इनके अतिरिक्त महासभा एवं देशभर में फैली तेरापंथी सभाओं द्वारा संचालित विभिन्न आध्यात्मिक, सामाजिक एवं संघीय गतिविधियों की जानकारी एवं अन्य समाचार भी प्रकाशित किए जा रहे हैं।

हमें परम प्रसन्नता है कि जैन भारती के प्रवेशांक में अहिंसोन्मुखी समाज व्यवस्था के प्रथम सूत्रधार और मानव संस्कृति के आदि संस्कर्ता भगवान ऋषभ के जीवनदर्शन से इस पत्रिका की शुरुआत कर रहे हैं, जिनका जन्म एवं दीक्षा कल्याणक दिवस 14 मार्च, चैत्र वद 8 को पड़ता है। भगवान ऋषभ का जन्म ऐसे समय में हुआ जब मानव जाति अपने पेट की क्षुधा से घिरा केवल व्यक्तिनिष्ठ जीवन जी रहा था। वह समय कर्तृत्व पर नहीं, भोक्तृत्व पर आधारित था। सामग्री की तुलना में उपभोगकर्ताओं की संख्या अधिक थी। क्षुधातुर

जनता उदरपूर्ति के लिए संघर्ष पर उतारु हो रही थी। भगवान ऋषभ ने उस विषम स्थिति में अभावग्रस्त जनता का नेतृत्व किया और उसके पुरुषार्थ को जगाकर कर्म करने के लिए प्रेरित किया। परिणामतः कृषि, उद्योग और शिल्प का विकास हुआ। पहिए की खोज से विज्ञान की दिशा में पहला कदम उठा।

इस अंक में प्रकाशित तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के लेख से हमें भगवान ऋषभ के जीवन के एक महत्वपूर्ण पक्ष को समझने का अवसर मिलेगा, जिनके माध्यम से वर्तमान की बहुत सारी समस्याओं का समाधान मिल सकता है। हिंसा, इन्द्रिय-लोलुपता, कथनी-करनी में भेद के इस युग में ऋषभ एक आदर्श पुरुष के रूप में सामने आते हैं।

इस अंक का दूसरा महत्वपूर्ण आलेख जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आद्याचार्य भिक्षु पर है, जिन्होंने जैन-परंपरा में एक नए आलोक की सृष्टि की। उन्होंने जिस सत्य का उद्घाटन किया, वह सूर्य की तरह प्रभामय एवं शाश्वत था और आज भी उसकी सामयिकता सर्वत्र बनी हुई है। आचार्य भिक्षु ने हिंसा और अहिंसा, व्यवहार और परमार्थ का विश्लेषण किया, जो आज के युग की एक महती अपेक्षा है।

तेरापंथ के पंचम आचार्य मघवागणी का जन्म दिवस एवं स्वर्गवास दिवस भी इसी माह में है और छठे आचार्य माणकगणी का दीक्षा दिवस, युवाचार्य पद एवं आचार्य पद दिवस भी इसी माह में मनाया जाता है। मानवीयता, मूल्य बोध और चारित्रिक औदात्त से युक्त, जैन आगमों के धुरन्धर विद्वान एवं आत्मगुणों की साधना में अनन्य इन वीतराग आचार्यो ने तेरापंथ धर्मसंघ के विकास और समाज में धर्म, संस्कृति के प्रति अनुराग पैदा करने में उल्लेखनीय योगदान किया है। तेरापंथ धर्मसंघ ही नहीं, पूरी मानव जाति उनके अवदानों के प्रति नतमस्तक है।

हिंसा आज के युग की सबसे बड़ी त्रासदी है। संपूर्ण विश्व आतंकवाद और हिंसा से त्रस्त है। हिंसा के अनेक हेतु हैं, जिनको समझने की आवश्यकता है और उसी परिप्रेक्ष्य में अहिंसा की अवधारणा को जानने और उन्हें अपने जीवन में अपनाने की जरूरत है। इस अंक में प्रस्तुत है तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य महातपस्वी श्री महाश्रमणजी का आलेख, जो इस समय देश-विदेश में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का शंखनाद करते हुए यात्रायित हैं और अहिंसक स्वस्थ समाज की सरंचना के लिए कृतसंकल्प है। यह लेख हिंसात्मक प्रवृत्ति के गहन परतों को उद्घाटित करता है।

8 मार्च पूरी दुनिया में विश्व महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह सर्वविदित है कि जीवन के हर क्षेत्र में नारियों ने अपनी प्रतिभा, शक्ति और सामर्थ्य को सिद्ध किया है। उन्हें जब भी अवसर मिला है, उन्होंने प्रमाणित किया है कि वे किसी भी अर्थ में कमतर नहीं हैं, इसके बावजूद स्त्री के जीवन में कष्टों और दुखों की कमी नहीं है। इसके लिए पितृसत्ता, पुरुष प्रभुत्ववाद और धार्मिक कूपमंडूकता जिम्मेदार है। महिला सशक्तीकरण पर अनेक कुछ कहे जा रहे हैं तथापि महिलाओं के साथ आज जो कुछ हो रहा है, वह किसी से छिपा नहीं है।

यह अंक स्त्री विमर्श पर स्वामी विवेकानंद, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी एवं प्रख्यात विद्वान प्रो. शंभुनाथ के आलेख से समृद्ध हुआ है। इन आलेखों से भारतीय परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की स्थिति उजागर होती है।

बंगला के सुख्यात कथाकार वनफूल की कहानी तिलोत्तमा इस अंक का एक सुखद अनुभव-सा है।

इस अंक के प्रकाशन में हमें तेरापंथ धर्मसंघ के चारित्रात्माओं एवं अन्य विद्वानों का सहयोग मिला है, जिसके लिए हम अंतर्मन से कृतज्ञ हैं।

जैन भारती का यह अंक पाठकों की नजरों में कैसा ठहरता है यह उनकी निष्पक्ष प्रतिक्रिया से ज्ञात होगा। हमने तो अपनी चेष्टा भर की है। अस्तु।

कमल कुमार दुगड़

भगवान ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस के अवसर पर विशेष

भगवान ऋषभ का जीवन एक समग्र जीवन है। अगर हम हिंसा के संदर्भ में उनके जीवन का अध्ययन करें और आज की स्थितियों से उसकी तुलना करें, तो अच्छे समाज, अच्छी समाज-व्यवस्था और चरित्र निर्माण के सारे उपादान सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं।

ऋषभ : अहिंसोन्मुखी समाज के प्रथम कर्णधार

आचार्य महाप्रज्ञ

अहिंसोन्मुखी समाज व्यवस्था के प्रथम सूत्रधार हैं भगवान ऋषभ। रोटी के अभाव में हिंसा बढ़ती है यह कोई नई बात नहीं है। भगवान ऋषभ के समय को देखें तो पाएंगे कि जब कल्पवृक्ष कम हो गए, तो एक समस्या पैदा हुई। उस समय के यौगलिकों का जीवन कल्पवृक्ष के आधार पर चलता था। कालांतर में उनकी क्षमता कम हो गई। वे लोगों की अपेक्षाओं की पूर्ति करने में कमजोर हो गए तो एक बड़ी समस्या पैदा हो गई। सब जानते हैं कि जब खाने वाले अधिक हो जाएं और खाद्य सामग्री कम हो जाए तो फिर हिंसा ही बढ़ेगी। मैंने ऋषभायण में लिखा -

स्वत्व-हरण छीना-झपटी का अतिक्रमण का वेग बढ़ा
शांति भंग का, मौन भंग का, सब पर जैसे नशा चढ़ा।
क्या यह सच है सच अभाव में बन जाता है विकृत स्वभाव
उपादान पर समय समय पर, होता व्यक्त निमित्त-प्रभाव।।

जो यौगलिक सदा शांत रहते थे, लड़ाई-झगड़ा करना जानते ही नहीं थे, उनमें एकदम परिवर्तन आ गया और उनमें कलह और झगड़े शुरू हो गए। विभिन्न चीजों पर अधिकार जमाया जाने लगा। ममकार की भावना बलवती बनी। 'यह मेरा है', इस तरह की बात कही जाने लगी।

हम इस बात को न भूलें कि अभाव में आदमी का स्वभाव भी बिगड़ जाता है। यह बहुत बड़ी सच्चाई है कि अभाव की स्थिति में हम वैसे नहीं रह जाते, जैसे पहले थे। उस समय के यौगलिकों का स्वभाव ही बिगड़ गया। बीच में बहुत सारे उतार-चढ़ाव आते हैं, बहुत कुछ परिवर्तन होता है। आखिर यह व्यवस्था की गई कि तुम किसी पर अधिकार मत करो। किंतु ऐसी व्यवस्था ज्यादा दिन तक चली नहीं। जहां सामग्री कम और उपभोक्ता ज्यादा होते हैं वहां दंड व्यवस्था भी ज्यादा कार्यकारी नहीं होती।

ऋषभ ने जब अराजकता को देखा तो उन्होंने समझ लिया कि ऐसे तो काम नहीं चलेगा। उन्होंने समझ लिया कि भूख की समस्या हिंसा को जन्म दे रही है। तब ऋषभ ने उनको खेती करना सिखाया। खेती उस समय लोगों के लिए बिलकुल नया प्रयोग था। उससे पहले लोग जानते भी नहीं थे कि कृषि क्या होती है, कैसे की जाती है? ऋषभ ने उनको खेती की पद्धति बताई। कुंभकारों को मृत्तिका से बर्तन बनाना सिखाया। बैलगाड़ी की रचना की। माना जाता है कि जिस दिन पहिये और धुरी का विकास हुआ, वह विज्ञान की दिशा में पहला कदम था। कहा जा सकता है कि पहिया विज्ञान का आदि स्रोत साबित हुआ। विकास का माध्यम है गति और गति का माध्यम है पहिया। आज ऑटो, यान और अंतरिक्ष यान तक की रचना हो चुकी है, किंतु पहिये की प्रासंगिकता खत्म नहीं हुई। पहिया इनमें भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। चाहे भूमि पर चलने वाले हों या आसमान में उड़नेवाले, पहिया सबके लिए जरूरी है।

> ऋषभ का जीवन एक बहुत महत्वपूर्ण अध्याय है, किंतु जैनों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। न समाज व्यवस्था के सूत्रों की ओर ध्यान दिया, न अहिंसोन्मुखी समाज व्यवस्था की ओर ध्यान दिया। 'अहिंसा परमो धर्मः' का नारा तो बहुत लगाते हैं किंतु जुलूस की समाप्ति के बाद यह नारा भी जैसे झंडों, बैनरों की तरह संभाल कर रख दिया जाता है। हमारा ध्यान ही नहीं जाता इस बात पर कि जो अभी हम बोल रहे थे, जिसका महत्त्व बता रहे थे, जिसे जयजयकार कर रहे थे, उसके साथ हमने वही किया जो गर्म कपड़ों के साथ करते हैं। सर्दी गई और उन्हें आगामी एक वर्ष के लिए संभाल कर रख दिया जाता है।

पहिये के रूप में ऋषभ द्वारा किया गया विकास सबसे महत्वपूर्ण विकास था। समाज की वह अवस्था, जिसमें अभाव की स्थिति न हो, आदर्श स्थिति कही जाती है। एक ओर अभाव और दूसरी ओर उपदेश। कैसा लगेगा? हम दार्शनिक दृष्टि से विचार करें तो दो प्रकार के कारण माने जाते हैं – उपादान कारण और निमित्त कारण। उपादान हमारे भीतर है, किंतु जब तब निमित्त कारण अहिंसा के विकास के अनुकूल नहीं मिलते, तब तक जीवन में अहिंसा का विकास नहीं हो सकता। हमें निमित्तों पर भी ध्यान देना है। अच्छी व्यवस्था भी उसका निमित्त बनती है। जहां अच्छी व्यवस्था है, वहां अहिंसा को बढ़ने का मौका मिलता है। व्यवस्था में खामी और कमी है तो फिर वहाँ हिंसा को अपने पैर पसारने का मौका मिलता है। हमें इन सचाइयों को ध्यान में रखना चाहिए।

ऋषभ का जीवन एक समग्र जीवन है। उन्होंने अध्यात्म का विकास किया। भारतीय संस्कृति में आत्मा को एक सर्वोपरि सत्य माना जाता है। आत्मा की खोज को एक महत्वपूर्ण खोज माना जाता है। प्रश्न होगा कि आत्मा की खोज किसने की? यौगलिक युग में न तो लोग दर्शन को जानते थे, न शास्त्र को जानते थे, न विज्ञान से उनका कोई परिचय था। न उनके पास कोई विकसित भाषा थी। न कोई संबंधों का जाल था। एक-वैयक्तिक अवस्था में सब जी रहे थे। लड़ाई-झगड़े का तो प्रसंग ही नहीं था। अपेक्षाएं सबकी पूरी हो जाती थीं, फिर लड़ाई-झगड़े का प्रसंग कहां से आता? प्रकृति पर आधारित जीवन था। सबकी आवश्यकताएं भी बहुत सीमित थीं। इसलिए व्यवस्था और अनुशासन की कोई जरूरत नहीं थी। न कोई राजा था, न कोई प्रजा। सब पूर्ण स्वतंत्रता का उपभोग कर रहे थे।

परिवर्तन तो तब शुरू हुआ, जब आवश्यकताएं बढ़ने लगीं और साधन सीमित होने लगे। जब तक कल्पवृक्षों से आवश्यकता पूरी होती रही, तब तक शांति से सब कुछ चलता रहा। किंतु जैसे ही वृक्ष कम हुए और उनकी क्षमता कम हुई, संघर्ष उभरने लगा। यहीं से राजा और शासक का उद्‌भव होता है। कहा जा सकता है कि एक भूख के आधार पर समाज की इतनी बड़ी संरचना होती है, व्यवस्था होती है। अगर हम भगवान ऋषभ के चरित्र का अध्ययन करें और आज की स्थितियों से उसकी

तुलना करें, हिंसा के संदर्भ में भगवान ऋषभ के जीवन का अध्ययन करें तो एक ऐसा चित्र हमारे सामने आता है कि अच्छा समाज, अच्छे समाज की व्यवस्था, अच्छी अर्थव्यवस्था और अच्छे चरित्र का निर्माण कैसे हो? इसकी सारी उपादान सामग्री हमें ऋषभ के जीवन-चरित्र में मिल जाती है।

ऋषभ का जीवन एक बहुत महत्वपूर्ण अध्याय है, किंतु जैनों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। न समाज व्यवस्था के सूत्रों की ओर ध्यान दिया, न अहिंसोन्मुखी समाज व्यवस्था की ओर ध्यान दिया। 'अहिंसा परमो धर्मः' का नारा तो बहुत लगाते हैं किंतु जुलूस की समाप्ति के बाद यह नारा भी जैसे झंडों, बैनरों की तरह संभाल कर रख दिया जाता है। हमारा ध्यान ही नहीं जाता इस बात पर कि जो अभी हम बोल रहे थे, जिसका महत्व बता रहे थे, जिसे परमधर्म कह रहे थे, उसके साथ हमने वही किया जो गर्म कपड़ों के साथ करते हैं। सर्दी गई और उन्हें आगामी एक वर्ष के लिए संभाल कर रख दिया जाता है।

> माना जाता है कि जिस दिन पहिये और धुरी का विकास हुआ, वह विज्ञान की दिशा में पहला कदम था। कहा जा सकता है कि पहिया विज्ञान का आदि स्रोत साबित हुआ। विकास का माध्यम है गति और गति का माध्यम है पहिया। आज ऑटो, यान और अंतरिक्ष यान तक की रचना हो चुकी है, किंतु पहिये की प्रासंगिकता खत्म नहीं हुई। पहिया इसमें भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

ऋषभ का गहराई से अध्ययन करें तो वर्तमान की बहुत सारी समस्याओं का समाधान संभव हो सकता है। महावीर का जीवन संयम का जीवन है, त्याग का जीवन है, निवृत्ति का जीवन है, पर उसे हम सर्वांगीण व्यवस्था का जीवन नहीं कह सकते। जहां समाज व्यवस्था का जीवन है, वहां तो ऋषभ के जीवन को ही आदर्श के रूप में सामने रखना पड़ेगा। उनके जीवन का एक बड़ा भाग अहिंसोन्मुखी समाज की व्यवस्था करने वाले प्रथम कर्णधार का है। उनके जीवन का दूसरा भाग आत्मोन्मुखी साधक की उत्कृष्ट साधना का है।

भगवान ऋषभ ने जहां समाज व्यवस्था दी, वहीं आत्मा का ज्ञान भी दिया। समाज व्यवस्था जीवन यात्रा को चलाने के लिए है। वह हमारा लक्ष्य नहीं है। हमारा लक्ष्य है आत्मा और उसकी शुद्धि तक पहुंचना। मैं मानता हूँ कि पूरा भारतीय चिंतन इन दो व्यवस्थाओं में समाहित हो जाता है। हम केवल पदार्थवादी नहीं हैं। केवल भौतिकवादी नहीं है। जीवन की आवश्यकता की पूर्ति में ही दिन-रात लगे रहनेवाले कीड़े-मकोड़े नहीं हैं। जीवन की आवश्यकता को पूरा इसलिए करते हैं कि उससे मोक्ष की साधना और आत्मोपलब्धि कर सकें। हमारा उद्देश्य है आत्मा और उसकी पवित्रता तक पहुंचना। समाज व्यवस्था हम जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए करते हैं। अच्छी समाज व्यवस्था आत्म साधना में सहायक बनती है।

यह एक सच्चाई है कि दर्शन का विकास, अध्यात्म का विकास प्रायः उन लोगों ने किया, जिनके सामने रोटी की कोई समस्या नहीं थी। कोई अपवाद भी हो सकता है, किंतु यह एक बहुत बड़ा सच है कि अध्यात्म साधना के क्षेत्र में अधिकतर वे लोग ही आगे बढ़े, जो जीवन में पूर्ण रूप से निश्चिंत थे। इसलिए ऋषभ को याद करना, उस महापुरुष के अवदानों की स्मृति करना महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने समाज के सामने पहली बार समग्रता का दर्शन रखा। केवल पदार्थवादी होना जीवन की समग्रता नहीं है। केवल आत्मवादी होना भी जीवन की समग्रता नहीं है। पदार्थ के बिना जीवन का काम नहीं चलता और आत्मा के बिना जीवन पवित्र नहीं बनता। दोनों मिलते हैं तो बात परिपूर्ण होती है।

सभी विचारशील और बौद्धिक व्यक्तियों को मिलकर एक नया प्रकल्प समाज के सामने प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे अहिंसोन्मुखी समाज के निर्माण का एक ढांचा बनाया जा सके।

भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर विशेष

तेरापंथ के संस्थापक आचार्य भिक्षु ने नीतिशास्त्र की उस व्यवस्था का खंडन किया, जिसमें कहा गया है कि 'ग्रेटेस्ट गुड ऑफ दी ग्रेटेस्ट नम्बर' – अधिक से अधिक लोगों का अधिक से अधिक सुख या हित हो। अर्थात बहुसंख्यकों के लिए अल्पसंख्यकों का बलिदान उचित है। नीतिशास्त्र की यह मान्यता राजनीति से प्रेरित कही जाएगी।

आचार्य भिक्षु : साध्य-साधन के विविध पहलू

आचार्य महाप्रज्ञ

जीवन और मृत्यु

मनुष्य की पहली जिज्ञासा है जीवन और अन्तिम जिज्ञासा है मृत्यु। शेष जिज्ञासाएं इस द्वन्द्व के बीच में हैं।

जीवन क्या है? इसके पहले क्या था? मौत क्या है? इसके पश्चात क्या होगा? सत्यान्वेषण की रेखा के ये प्रधान बिन्दु हैं। जीवन से पूर्व और मौत के पश्चात क्या है और क्या होगा? इन प्रश्नों के समाधान में आचार्य भिक्षु की कोई नई देन है, यह मैं नहीं जानता। जीवन और मृत्यु हमारी दृष्टि के स्पष्ट कोण हैं। इनकी व्याख्या को उन्होंने अवश्य ही आगे बढ़ाया है। सामान्य धारणा के अनुसार जीवन काम्य है और मौत अकाम्य। प्राणियों में तीन एषणाएं हैं, उनमें पहली है 'प्राणैषणा'। वैदिक ऋषियों ने कहा - "हम सौ वर्ष जिएं।" (यजुर्वेद, 36/24)। भगवान महावीर ने कहा - "सब जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता।" यही विचार मनोवैज्ञानिक सुखवाद का आधार बन गया। साधना की दृष्टि से भगवान महावीर ने कहा – "जीवन और मृत्यु की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए।" व्यास भी इसी भाषा में बोलते हैं - जीवन और मृत्यु का अभिनंदन करो। (महाभारत, शांतिपर्व, 245/15)

आचार्य भिक्षु की चिन्तन-दिशा स्वतंत्र नहीं थी। उनका चिन्तन जैनागमों की परिक्रमा किए चला, पर परिक्रमा का मार्ग उन्होंने विस्तृत बना दिया। उन्होंने कहा - जीवन और मृत्यु अपने आप में न काम्य है और न अकाम्य। ये परिवर्तन के अवश्यम्भावी चरण हैं। पहले चरण में प्राणी नये जीवन के लिए आता है और दूसरे में नये जीवन के लिए चला जाता है। पुद्‌गल की भूमिका में जीवन काम्य है और मृत्यु अकाम्य। आत्मा की भूमिका में जीवन और मृत्यु न काम्य है और न अकाम्य। असंयममय जीवन और मृत्यु अकाम्य है, संयममय जीवन और मृत्यु काम्य। निष्कर्ष की भाषा में असंयम अकाम्य है और संयम काम्य। काम्य और अकाम्य सापेक्ष हैं। इनका निर्णय साध्य के आधार पर ही किया जा सकता है।

साध्य दो भागों में विभक्त है – जीवन या जीवन-मुक्ति। प्रवृत्ति का क्षेत्र है जीवन। उसका स्रोत है - रागात्मक या द्वेषात्मक भाव या असंयम। मृत्यु जीवन का अनिवार्य परिणाम है, इसलिए जो जीना चाहता है, वह मरना भी चाहता है। परिणाम की दृष्टि से यही संगत है। जीवन जीना चाहता है, मरना नहीं चाहता, यह रुचि की दृष्टि से ही संगत हो सकता है। किन्तु रुचि की अपेक्षा आचरण में अधिक बल होता है। अधर्म करने वाला धर्म का फल

चाहता है। आचरण अधर्म का और रुचि धर्म के फल की – यह संघर्ष है। इसमें विजयी आचरण होता है। वह रुचि को परास्त कर जीव को अपने पीछे ले चलता है।

सच तो यह है कि जो मरना नहीं चाहता, वह जीना भी नहीं चाहता। मृत्यु से मुक्ति वही पा सकता है, जो जीवन से मुक्ति पा सके। इस विवेक के बाद हम एक बार सिंहावलोकन करेंगे। रुचि की अपेक्षा सत्य यह है कि जीवन काम्य है, मृत्यु अकाम्य। आचरण की अपेक्षा सच यह है कि जिसे जीवन काम्य है, उसे मृत्यु भी काम्य है और जिसे मृत्यु अकाम्य है, उसे जीवन भी अकाम्य। आचार्य भिक्षु ने इस साध्य की कसौटी पर साधन को परखा। परख का परिणाम उन्होंने इन शब्दों में रखा - "अध्यात्म की भाषा में जीवन साध्य नहीं है। साध्य है जीवन की मुक्ति, उसका साधन है संयम। इसलिए संयम ही काम्य है। असंयम जीवन-मुक्ति का साधन नहीं है, इसलिए वह अकाम्य है। असंयत जीवन भी अकाम्य है और उसे चलाने के साधन भी अकाम्य हैं। संयत जीवन भी काम्य है और उसे चलाने के साधन भी काम्य हैं। साधन वही होता है जो साध्य के सर्वथा अनुकूल हो। जीवन-मुक्ति की साधना तभी हो सकती है जबकि जीवन टिके। जीवन अन्न और पानी के बल पर टिकता है। उसका अर्जन प्रवृत्ति से होता है, इसलिए सब काम्यों का मूल प्रवृत्ति है। इस तर्क के आधार पर जीवन-मुक्ति का साधन जीवन, जीवन का साधन अन्न-पानी और उसका साधन प्रवृत्ति है। इसलिए ये सब काम्य हैं।"

आचार्य भिक्षु ने इस कारण-परम्परा को पूर्ण सत्य नहीं माना। उन्होंने कहा - जीवन-मुक्ति का साध्य, संयत जीवन और अन्न-पान के अर्जन की प्रवृत्ति संयत हो तो यह क्रम साध्य के अनुकूल है, इसलिए काम्य हो सकता है। जीवन-मुक्ति का साध्य, असंयत जीवन और अन्न-पान के अर्जन की प्रवृत्ति असंयत हो तो यह क्रम साध्य के अनुकूल नहीं है, इसलिए यह अकाम्य है। साध्य जीवन-मुक्ति का न हो, जीवन और अन्न-पान के अर्जन की प्रवृत्ति असंयत हो तो वह अकाम्य ही है। यह दिशा साध्य और साधन दोनों से शून्य है। आचार्य भिक्षु के धर्म और अधर्म, अहिंसा और हिंसा के पृथक्करण की भेद-रेखा यही है। उन्होंने कहा :

"जीव जीता है, वह अहिंसा या दया नहीं है। कोई मरता है, वह हिंसा नहीं है। मारने की प्रवृत्ति हिंसा है और मारने की प्रवृत्ति का संयम करना अहिंसा है।"

उन्होंने दृष्टान्त की भाषा में कहा - चींटी जीवित रहे इसलिए आपने उसे नहीं मारा, यह अहिंसा या दया है तो हवा का झोंका आया, चींटी उड़ गई, आपकी दया भी उड़ गई। किसी का पैर टिका, वह मर गई, आपकी दया भी मर गई। जो अहिंसा किसी जीव को जिलाने के लिए होती है वह उसकी मौत के साथ चली जाती है और जो अपनी जीवन-मुक्ति के लिए होता है वह संयम में परिणत हो जाती है।

आचार्य भिक्षु की भाषा में संयम और धर्म अभिन्न हैं। जीवन और मृत्यु की इच्छा असंयम है, इसलिए वह अधर्म है। वह अहिंसा नहीं है, किन्तु मोह है। मोहात्मक प्रवृत्ति से जीवन की परम्परा का अन्त नहीं होता, बल्कि वह बढ़ती ही है।

मोह-मूढ़ मानस का साध्य जीवन बन जाता है। जो जीवन को साध्य मानकर जीता है, वह पवित्रता या संयम को प्रधान नहीं मान सकता। संयम को प्रधानता वही दे सकता है जिसका साध्य जीवन-मुक्ति हो।

आत्मौपम्य

एक आदमी लोहे का लाल-लाल तपा हुआ एक गोला संड़ासी से पकड़कर लाता है और कहता है :

हे धर्म संस्थापको ! लो, इस गोले को एक क्षण के लिए अपनी हथेली में लो। यह कहकर उस आदमी ने गोले को आगे बढ़ाया, परन्तु सबने अपने हाथ पीछे खींच लिए। यह देख उसने कहा :

'ऐसा क्यों ? हाथ क्यों खींच लिए ?'

'हाथ जल उठेंगे।'

'क्या होगा जलेंगे तो ?'

'वेदना होगी।'

जैसे तुम्हें वेदना होती है वैसे क्या औरों को नहीं होती ?

'सब जीवों को अपने समान समझो। सब जीवों के प्रति इसी गज और माप से काम लो।

भगवान महावीर ने कहा - "सब जीवों को आत्मतुल्य समझो" (दशवैकालिक, 10/15)।

महात्मा बुद्ध ने कहा - "दण्ड से सब डरते हैं, मृत्यु से सब डरते हैं। दूसरों के अपनी तरह जानकर, मनुष्य किसी

दूसरे को न मारे, न मरवाए" (धम्मपद दण्ड वर्ग-1)।

योगीराज कृष्ण ने कहा था - "जो योगयुक्त आत्मा है, जो सर्वत्र समदर्शी है, वह सब जीवों में अपनी आत्मा को और अपनी आत्मा में सब जीवों को देखता है" (गीता, 6/29)।

यह आदर्श वाणी है। साधना के पहले सोपान में आदर्श और व्यवहार का पूर्ण सामंजस्य नहीं होता, वह सिद्धि काल में होता है। मान्यता और आचरण में विरोध नहीं होता, ऐसा नहीं मानना चाहिए। मनुष्य जो कुछ मानता है वही करता है, यह एकान्त सत्य नहीं है। मान्यता यथार्थ होने पर भी कुछ ऐसी अनिवार्यताएं या दुर्बलताएं होती हैं कि मनुष्य मान्यता के अनुरूप आचरण नहीं कर पाता। वीतराग आत्मा के सिद्धान्त और आचरण में कोई विसंगति नहीं होती। अवीतराग की पहचान सात बातों से होती है - 1. वह हिंसा करता है, 2. असत्य बोलता है, 3. अदत्त लेता है, 4. इन्द्रिय-विषयों का आस्वादन करता है, 5. पूजा-सत्कार चाहता है, 6. यह सपाप है, यों कहता हुआ भी उसका आचरण करता है और 7. कथनी के अनुरूप करणी नहीं करता।

आवश्यकता की कोई सीमा नहीं है। आवश्यक हिंसा को अहिंसा माना जाए तो हिंसा कोई रहेगी ही नहीं। आवश्यकता की सृष्टि दुर्बलता के तत्त्वों से होती है। वे हिंसा को अहिंसा में बदल सकें इतनी क्षमता उनमें नहीं है, इसलिए आवश्यक हिंसा भी हिंसा है।

यह एक बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक तथ्य है, इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। केवल सिद्धान्त और आचरण में गति लाने का प्रयत्न हुआ। फलस्वरूप हिंसा ने अहिंसा का रूप ले लिया। हिंसा उपादेय नहीं है - यह मान्यता पक्ष रहा। जीवन-निर्वाह के लिए हिंसा अनिवार्य है - यह व्यवहार-पक्ष रहा। यह स्पष्ट विसंगति है, इसे मिटाने का और कोई मार्ग नहीं समझा, तब ये व्याख्याएं स्थिर होने लगीं -

1. आवश्यक हिंसा, हिंसा नहीं है।

2. बहुतों के लिए थोड़ों की हिंसा, हिंसा नहीं है।

3. बड़ों के लिए छोटों की हिंसा, हिंसा नहीं है।

आचार्य भिक्षु ने इस ओर जनता का ध्यान खींचा कि यह दोहरी भूल है। एक तो हिंसा करना और दूसरे हिंसा को अहिंसा मानना। उन्होंने आत्म-विश्वास के साथ कहा - हिंसा कभी और किसी भी परिस्थिति में अहिंसा नहीं हो सकती। इनमें पूर्व और पश्चिम की-सी दूरी है।

उन्होंने तर्क की भाषा में कहा - आवश्यकता की कोई सीमा नहीं है। आवश्यक हिंसा को अहिंसा माना जाए तो हिंसा कोई रहेगी ही नहीं। आवश्यकता की सृष्टि दुर्बलता के तत्त्वों से होती है। वे हिंसा को अहिंसा में बदल सकें इतनी क्षमता उनमें नहीं है, इसलिए आवश्यक हिंसा भी हिंसा है।

महात्मा गांधी ने जीवन की विसंगति पर प्रकाश डालते हुए लिखा है - "श्रद्धा और कर्म में विरोध किसलिए? विरोध तो अवश्य है ही। जीवन एक झंखना है। इसका ध्येय पूर्णता अर्थात आत्म-साक्षात्कार के लिए मंथन करने का है। अपनी निर्बलता और अपूर्णताओं के कारण आदर्श को नीचे गिराना नहीं चाहिए। मुझमें निर्बलता और अपूर्णता दोनों हैं, इसका दुःखद भान मुझे है। हालांकि बोरसद के लोगों के सामने मैंने अपने सहोदर चूहे, चींचड़ के विनाश का समर्थन किया, तथापि मैंने जीव-मात्र के प्रति शाश्वत प्रेम-धर्म का शुद्ध रूप भी बतलाया। इसका पूर्णता से पालन मुझसे इस जन्म में न हो सके तथापि इस सम्बन्ध की मेरी श्रद्धा तो अविचल रहेगी।"

वर्तमान का नीतिशास्त्र कहता है - 'ग्रेटेस्ट गुड ऑफ दी ग्रेटेस्ट नम्बर' – अधिक से अधिक लोगों का अधिक से अधिक सुख या हित हो। इसमें विरोधी हितों की कल्पना है। बहुसंख्यकों के लिए अल्पसंख्यकों के बलिदान को उचित माना गया है। इसी सिद्धान्त ने बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक का झगड़ा खड़ा किया है। नीतिशास्त्र की इस मान्यता पर राजनीति का प्रभाव है। एक तन्त्र की प्रतिक्रिया जनतन्त्र के रूप में हुई। जनतन्त्र का अर्थ है - अल्पसंख्यकों पर बहुसंख्यकों का राज्य और बहुमत के सामने अल्पमत की पराजय। इस भावना का प्रतिबिम्ब नीतिशास्त्र पर पड़ा और वह सर्वभूत-आत्मभूत की बात भूल गया।

मध्यकालीन धर्मशास्त्र के व्याख्याता भी इस भूल से अपने को बचा नहीं सके। उन्होंने भी बहुमत का साथ

दिया। इसलिए आचार्य भिक्षु ने क्रान्ति के स्वर में कहा "बहुतों के हित के लिए थोड़ों के हित को कुचल देना उतना ही दोषपूर्ण हैं जितना कि थोड़ों के हित के लिए बहुतों को कुचलना। एक आदमी सौ रोगी मनुष्यों को स्वस्थ करने के लिए 'ममाई' करता है - एक मनुष्य के शरीर को क्षत-विक्षत कर खून निकालता है - एक आदमी सिंह और कसाई को मारकर अनेक जीवों को मृत्यु के मुंह में जाने से बचाता है। इनमें धर्म बताने वालों की श्रद्धा विशुद्ध नहीं है।

राजतंत्र में राजा के जीवन का असीम मूल्य था। उसकी या उसके परिवार की इच्छा की वेदी पर मनुष्यों तक की बलि हो सकती थी। एक पौराणिक कथा के अनुसार एक राजकन्या की इच्छा पर राजा ने वैश्य-पुत्र को मारने की आज्ञा दे दी। प्रमुख नागरिक राज्यसभा में गए। राजा ने उनकी प्रार्थना के उत्तर में कहा - राजकन्या का आग्रह है कि या तो वह जीएगी अथवा वैश्य-पुत्र। दोनों एक साथ नहीं जी सकते। राजा ने कहा - आप कहिए, मैं किसे मारूं? नागरिक अवाक हो वापस चले आए। राजकन्या के लिए वैश्य पुत्र मारा गया।

कुछ लोग हिंसा को अनिष्ट जानते हुए भी अहिंसा में विश्वास नहीं कर पाते। यह वह स्थिति है जहां ज्ञान है पर दृष्टि की शुद्धि नहीं है। कुछ लोग हिंसा को अनिष्ट जानते हुए और अहिंसा में विश्वास करते हुए भी उसका आचरण नहीं कर पाते।

राज्यसत्ता शक्ति का जाल है। उसमें जो फँसे उन्होंने इसे क्षम्य मान लिया। पर अहिंसा आत्मा की सहज पवित्रता है। वह एक के लिए दूसरे की बलि को कभी भी क्षम्य नहीं मान सकती। जो लोग अहिंसा के क्षेत्र में राजतन्त्र की परम्परा को निभा रहे थे, उनके विरुद्ध आचार्य भिक्षु ने विद्रोह किया। उनकी वाणी ने घोषित किया :

"छोटे जीवों को मारकर बड़ों का पोषण करने को जो अहिंसा कहते हैं, वे छोटे जीवों के दुश्मन हैं।"

उनका दयार्द्र मन कह उठा - "ये छोटे जीव अपने अशुभ कर्म भुगत रहे हैं, लोग इन्हें सता रहे हैं और उनके द्वारा बड़े जीवों के पोषण में पुण्य बतलाने वाले ये भेषधारी उठ खड़े हुए हैं। छोटे और बड़े जीवों में शरीर और ज्ञान की मात्रा का तारतम्य है। आत्मतत्व की दृष्टि से सब जीव समान हैं। अहिंसा और हिंसा की नाप छोटे-बड़े आकार से नहीं राग-द्वेषात्मक प्रवृत्ति के भाव और अभाव से की जाती है।

आवश्यक हिंसा, हिंसा नहीं है, बहुतों के लिए थोड़ों की हिंसा, हिंसा नहीं है, बड़ों के लिए छोटों की हिंसा, हिंसा नहीं है- इन धारणाओं का मूल रागात्मक प्रवृत्ति है और इनका आचरण भी रागात्मक है। इसलिए यह सारा हिंसा पक्ष है।

जीव जीव का जीवन है - यह प्राणी की विवशता है पर अहिंसा नहीं है। बहुसंख्यकों के हित के लिए अल्पसंख्यकों का अहित क्षम्य है, यह तन-तन्त्र का सिद्धान्त है पर अहिंसा नहीं है।

बड़ों के लिए छोटों का बलिदान क्षम्य है, यह राजतन्त्र की मान्यता है पर अहिंसा नहीं है।

इन सिद्धान्तों से आत्मौपम्य या सर्वभूतात्मभूतवाद की रीढ़ टूटी है। विवशता, बाहुसंख्यक और अल्पसंख्यक तथा छोटे और बड़े के प्रश्न हिंसा के क्षेत्र में उठते हैं। अहिंसा का स्वरूप इन सभी प्रश्नों से मुक्त है।

आत्मौपम्य के प्रयोग की भूमिकाएं विभिन्न हैं। रागद्वेषात्मक प्रवृत्ति तीव्र होती है, आत्मौपम्य की बुद्धि मन्द हो जाती है। रागद्वेषात्मक प्रवृत्ति मन्द होती है, आत्मौपम्य की बुद्धि तीव्र हो जाती है। मनुष्य का ज्ञान विशुद्ध होता है तब वह आत्मौपम्य को जानता है। उसकी दृष्टि विशुद्ध होती है तब वह आत्मौपम्य का आचरण करता है।

कुछ लोग हिंसा को अनिष्ट जानते हुए भी अहिंसा में विश्वास नहीं कर पाते। यह वह स्थिति है जहां ज्ञान है पर दृष्टि की शुद्धि नहीं है। कुछ लोग हिंसा को अनिष्ट जानते हुए और अहिंसा में विश्वास करते हुए भी उसका आचरण नहीं कर पाते। यह भूमिका है जहां ज्ञान और दृष्टि है पर चारित्रिक क्षमता नहीं है।

इन भूमिका-भेदों को ध्यान में रखकर ही आचार्य भिक्षु ने हिंसा और अहिंसा, व्यवहार और परमार्थ का विश्लेषण किया।

आचार्य श्री मघवागणी के जन्म दिवस एवं महाप्रयाण दिवस पर विशेष

तेरापंथ धर्मसंघ के विकास और समाज में धर्म, संस्कृति के प्रति अनुराग पैदा करने में धर्मसंघ के पंचम आचार्य मघवागणी का योगदान उल्लेखनीय है। उनके जीवन के विभिन्न पहलू चिंतन के नए स्रोत खोलते हैं।

आचार्य मघवागणी

आचार्य मघराजजी तेरापंथ के पंचम आचार्य थे। वे मघवागणी के नाम से अधिक ख्यात थे। उनका व्यक्तित्व अनेक विशेषताओं से युक्त था। गंभीरता, पाप-भीरुता, अनुद्वेग तथा सहनशीलता उनका वैशिष्ट्य था। उनकी प्रकृति अत्यन्त शांत, सरल तथा भद्र थी। वे जैन आगमों के धुरन्धर विद्वान थे और संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। वे जहां अपनी विद्वता और कला में अनन्य थे, वहीं आत्मगुणों की साधना में भी अनन्य थे। उनमें वीतरागता की भावना अद्वितीय थी। उन्होंने अपने स्वभाव की कोमलता और हृदय की निर्मलता से सबको अपना प्रिय बना लिया था।

मघवागणी की बाह्याकृति बहुत ही आकर्षक थी। गौर वर्ण, भव्य रूप, आंखों को निर्निमेष अपने पर थमा लेने वाला लावण्य और उन सबसे भी अधिक आकर्षक थी उनकी शांत मुद्रा। उनका यह रूप हर देखने वालों को मुग्ध कर देता था। उनका बाह्य व्यक्तित्व जहां इतना उत्कृष्ट था, वहीं उनका आन्तरिक व्यक्तित्व भी काफी महान था। वे एक उदात्त वृत्ति वाले साधु थे। उनका हृदय बालक की तरह पवित्र और सरल था। उनकी वाणी बहुत ही मधुर और आकर्षक थी।

मघवागणी का जन्म बीदासर में सं. 1897, चैत्र शुक्ल एकादशी, रविवार के दिन हुआ। मघा नक्षत्र में जन्म होने के कारण उनका नाम मघराज रखा गया। उनके पिता का नाम पूरणमलजी बेगवाणी तथा माता का नाम बन्नांजी था। मघवागणी की एक छोटी बहन भी थी, उनका नाम गुलाबकंवर था। दोनों भाई-बहिन छोटी अवस्था में थे, तभी उनके पिता का देहावसान हो गया। उसी समय सरदार सती का आगमन बीदासर में हुआ। उनके पास जाने-आने से बच्चों में धार्मिकता क्रमशः बढ़ती गई। उन्होंने तत्व-ज्ञान कंठस्थ करना प्रारंभ किया। युवाचार्य जय भी उन्हीं दिनों थली में विहार कर रहे थे। बीदासर में उनके चतुर्मास के दौरान उस क्षेत्र में त्याग-तपस्या के प्रति लोगों में बहुत आकर्षण पैदा हुआ। इसका असर मघवागणी पर पड़ा। उनमें संयम ग्रहण करने की भावना प्रबल हो उठी।

उन्होंने सं. 1908, मार्गशीर्ष कृष्णा द्वादशी को लाडनूं में दीक्षा ग्रहण की।

मुनि मघवा बालपन से ही मेधावी थे। छोटी अवस्था में दीक्षित होने पर भी उनमें बाल-

सुलभ चपलता कम थी। संसार के बहुत से सम्बन्धों तथा व्यवहारों से वे पूर्णतः अपरिचित ही थे। बचनप से ही वे गंभीर थे। श्रामण्य के प्रति उनकी निष्ठा अत्यन्त दृढ़ और बलवती थी। उनका व्यक्तित्व एक विकासशील साधु का था।

मुनि अवस्था में उन्होंने दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, प्रथम आचारांग और वृहत्कल्प आदि आगमों को याद कर लिया था। शेष आगम-ग्रन्थों का भी उन्होंने अनेक बार पारायण किया था। जैनागमों की संस्कृत टीकाओं का भी उन्होंने गंभीरतापूर्वक मनन किया था। इनके अतिरिक्त रामचरित्र, नेमिनाथ चरित्र, जम्बूकुमार, शालिभद्र, प्रदेशी, अमरकुंवर-सुरसुंदरी आदि अनेक व्याख्यान-ग्रंथ भी उन्हें कंठस्थ थे।

संस्कृत भाषा के प्रति उनका गहरा लगाव था। संघ में संस्कृत अध्ययन की जो प्रथा जयाचार्य ने चालू की थी उसे उन्होंने आगे बढ़ाया। उस समय की स्थिति के अनुसार उन्होंने संस्कृत ग्रन्थों का अच्छा अध्ययन और मनन किया था। सारस्वत व्याकरण का पूर्वार्ध और चन्द्रिका का उत्तरार्ध उन्होंने कण्ठस्थ कर लिया था। चान्द्र और जैनेन्द्र व्याकरण का भी उन्होंने सांगोपांग अध्ययन किया था। संस्कृत के प्रमुख काव्यों और ग्रन्थों में से उन्होंने माघ, किरातार्जुनीय, भट्टी, दुर्घट काव्य, अनेक चम्पू तथा नाटक, विदग्ध-मुखमण्डल, न्याय-दीपिका परीक्षा मुख-मंडन, समाधि-तंत्र, योगशास्त्र आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया था। वे तेरापंथ में संस्कृत के प्रथम विद्वान माने जाते हैं। उन्होंने संस्कृत में कुछ रचनाएं भी की थीं। संभवतः इन्हीं गुणों को देखकर जयाचार्य ने उन्हें पंडित कहकर संबोधित किया था।

मुनि मघवा केवल पण्डित ही नहीं थे, वे एक अच्छे लिपिकर्ता भी थे। उनके हाथ से लिखे गये अनेक ग्रन्थ यह स्पष्ट करते हैं कि उन्होंने अक्षर-विन्यास में पूर्ण सफलता प्राप्त की थी। सुन्दर और सूक्ष्म लेखन में उस समय उनका विशेष महत्व था। उन्होंने लगभग 11 इंच लम्बे और 5 इंच चौड़े एक पत्र में टीका सहित पूरा अनुत्तरौपपातिक सूत्र लिखकर अपने समय का एक कीर्तिमान स्थापित किया। उन्होंने संघ की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हजारों गाथाओं का लेखन किया।

मघवागणी का स्वभाव शांत था। वे कभी उत्तेजित नहीं होते थे। उन्हें कोई जान-बूझकर उत्तेजित करने का प्रयास करता तो भी वे अपने स्वभाव से बाहर नहीं जाते थे। दूसरी ओर उनके स्वभाव में सेवावृत्ति भी काफी थी। वे दीक्षा-वृद्ध संतों की सेवा तो मनोयोग से करते ही थे अपने से बाद दीक्षा ग्रहण करने वाले साधुओं की सेवा भी उतनी ही निष्ठा और उत्साह के साथ किया करते थे। इस स्वभाव ने उन्हें सबका प्रिय बना दिया।

> मघवागणी का स्वभाव निःस्पृह था। वे न तो प्रशंसा के प्रेमी थे और न ही उपालंभ से अस्तव्यस्त होते थे। जब कोई व्यक्ति उन्हें प्रसन्न करने की दृष्टि से उनकी सराहना करना चाहता तो वे अत्यंत उपेक्षा भाव दर्शाते। यही वजह थी कि उन्होंने आचार्यत्व ग्रहण करने के बाद साधु-वर्ग को अपना पट्टोत्सव मनाने की अनुमति नहीं दी।

मुनि मघवा एक तरह से जयाचार्य की प्रयोगशाला थे। वे जो भी नियम बनाते उसका उपयोग मघवा मुनि पर करते। कई दूसरे मुनि उनके नियमों को सहज ग्रहण नहीं कर पाते थे परंतु मघवा मुनि को कहीं कोई विरोध नहीं होता। वे सहज ही उसे अपना लेते।

मघवागणी के क्रमशः विकसित हो रहे व्यक्तित्व पर जयाचार्य की पैनी नजर बराबर बनी रही। संतों की हाजरी सुनाने के अपने कार्य को मघवागणी को सौंप कर उन्होंने यह साबित कर दिया कि मघवागणी में कुछ अलग वैशिष्ट्य है और वे भावी कर्णधार हैं।

जयाचार्य ने मघवागणी को सं. 1920, आश्विन कृष्ण त्रयोदशी, शनिवार के दिन युवाचार्य का पद सौंपा। मघवा लगभग 18 वर्षों तक युवाचार्य रहे। उन्होंने अपने पद के प्रारम्भिक वर्षों में ही संघ-संबंधी बहुत-सा कार्य संभाल लिया था।

जयाचार्य ने आगम-मंथन का जो दुरूह कार्य किया तथा अनेक बृहत्काय एवं गंभीर आगमों पर राजस्थानी भाषा में पद्यबद्ध टीकाओं (जोड़) का निर्माण किया, वह जिन-शासन की तो सेवा थी ही, जन-भाषा की भी एक महनीय सेवा थी। इस प्रकार के सभी विशिष्ट कार्यों में जयाचार्य के मुखर श्रम के साथ युवाचार्य मघवा की मूक सेवा का भी अभिनंदनीय योगदान था।

मघवागणी सं. 1938, भाद्रपद शुक्ल द्वितीया, शुक्रवार को तेरापंथ के पंचम आचार्य के रूप में जयपुर में पदासीन हुए। तीर्थ चतुष्टय तो उनके उदार विचार तथा पवित्र आचार से प्रभावित था ही, अब उनका अनुशासन पाकर वह कृतकृत्य भी हो गया।

आचार्य बनने के बाद उन्होंने संघ के विकास हित अनेक कार्यों को हाथ में लिया। प्रतिक्रमण, आलोयणा आदि का समय निर्धारित कर साधु समाज में समयबद्धता और चर्याओं में अशिथिलता की प्रतिष्ठा की।

> *मघवागणी का स्वभाव सर्वजन प्रिय था। किसी को उत्तेजित होकर कुछ कहना उनकी प्रकृति से बाहर की बात थी। हर स्थिति में अत्यन्त शीतलता ही उनकी विशेषता थी।*

मघवागणी के शासनकाल में जयपुर, चूरू, लाडनूं, जोजावर, बीकानेर, रतनगढ़ सुजानगढ़, सरदारशहर आदि 9 स्थानों पर 12 मर्यादा-महोत्सव आयोजित किए गए।

सं. 1949 में माघ-पूर्णिमा के बाद अचानक मघवागणी के शरीर में रोग का प्रकोप शुरू हुआ और शरीर कमजोर होने लगा। उन्हें यह समझ में आ गया कि यह रोग शमित होने वाला नहीं है। अतः अपनी पूर्व परंपरा का पालन करते हुए अपने उत्तराधिकारी युवाचार्य की नियुक्ति के प्रति वे तत्पर हो उठे। उसी वर्ष चैत्र कृष्ण द्वितीया को उन्होंने चतुर्विध संघ के समक्ष मुनि माणकलालजी को अपना उत्तरीय प्रदान कर युवाचार्य नियुक्त किया।

युवाचार्य का पद सौंपने के बाद उन्होंने शिक्षा दी कि सभी संतों और साध्वियों के संयम को संरक्षण देना तथा समयानुकूल सबके साथ उचित एवं न्यायपूर्ण व्यवहार करना। जो साधु-साध्वियाँ बाहर विहार कर रहे हों उनका ध्यान रखना और उनके समस्त विवरण स्वयं देखना। कभी किसी का पक्ष या विरोध मत करना। स्वयं सदाचार और निर्मलता का पालन करना और स्वाध्याय, ध्यान आदि का विशेष प्रयत्न करना। इसी प्रकार उन्होंने साधु-साध्वियों को भी आवश्यक शिक्षा दी।

आचार्य मघवागणी की अस्वस्थता बढ़ती गई। वे सं. 1949, चैत्र कृष्ण पंचमी को मध्यरात्रि को महाप्रयाण कर गए।

मघवागणी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे संस्कृत के अच्छे विद्वान थे, फिर भी बातचीत के प्रसंग में वे राजस्थानी को ही अधिक महत्व दिया करते थे। वह उनका कोई आग्रह नहीं था, बल्कि जन-साधारण की भाषा को प्रयुक्त करके जन-जन को जैनागमों के ज्ञान से परिचित कराने की पवित्र भावना थी। किंतु जब संस्कृत विद्वान के साथ बात करने का अवसर आता, तब वे बहुधा संस्कृत में ही बोला करते थे।

मघवागणी विद्याप्रेमी आचार्य थे। ज्ञानोपलब्धि के प्रति वे अत्यन्त जागरूक रहते थे। किसी भी पद, वाक्य या श्लोक के शुद्ध उच्चारण और सही अर्थ पर उनका विशेष बल रहता था।

आचार्य मघवागणी का साहित्यिक अवदान भी उल्लेखनीय है। यद्यपि उन्होंने साध्वाचार, तत्त्व-मीमांसा, आगम आदि पर बहुत कुछ नहीं लिखा पर धर्मसंघ से संबंधित अनेक रचनाएँ कीं। वे पहले आचार्य थे जिन्होंने राजस्थानी के साथ-साथ संस्कृत को भी अपनी साहित्य-रचना का माध्यम बनाया।

मघवागणी की रचनाओं में जय-सुजस, बन्नासती का चौढालिया, गुलाब-सुजस, मुनि दुलीचन्दजी का चौढालिया, मुनि मयाचन्दजी का चौढालिया, जय गुण वर्णन की ढालें, गुलाब सती गुण वर्णन की ढालें, भिक्षु चरमोत्सव की ढालें, मर्यादा महोत्सव की ढालें, जय पट्टोत्सव की ढालें, चातुर्मासिक तप विवरण की ढालें, प्रश्नोत्तर (गद्यात्मक), गुणस्तव (संस्कृत) प्रमुख हैं।

इनमें जय-सुजस सबसे बड़ा ग्रंथ है। वह तत्कालीन प्रचलित विभिन्न लयों की 67 गीतिकाओं और दोहों आदि में निबद्ध है। उसमें तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य जयाचार्य की जीवनी का सांगोपांग वर्णन किया गया है।

मघवागणी प्रशांत और संरक्षक प्रकृति के आचार्य थे। उन्होंने जयाचार्य द्वारा प्रारंभ किए गए परिवर्तनों को आत्मसात कराने में अहम भूमिका निभाई। जयाचार्य के समय जिन परिवर्तनों पर प्रश्नचिह्न उठाए गए थे वे यद्यपि उसी समय समाप्त हो गए थे पर उनकी यत्र-तत्र सुलगती चिनगारी को भी मघवागणी ने अपनी शांत प्रकृति और सौम्यता से सदा के लिए बुझा दिया था।

उन्होंने वीतरागता पर काफी बल दिया और किसी भी स्थिति में विकारग्रस्तता को समूल नष्ट किया। वे दूसरों के व्यवहारों के प्रति चिंतित नहीं होते थे, बल्कि अपने व्यवहार के प्रति सावधान रहते थे।

मघवागणी का स्वभाव निःस्पृह था। वे न तो प्रशंसा के प्रेमी थे और न ही उपालंभ से अस्तव्यस्त होते थे। जब कोई व्यक्ति उन्हें प्रसन्न करने की दृष्टि से उनकी सराहना करना चाहता तो वे अत्यंत उपेक्षा भाव दर्शाते। यही वजह थी कि उन्होंने आचार्यत्व ग्रहण करने के बाद साधु-वर्ग को अपना पट्टोत्सव मनाने की अनुमति नहीं दी। ठीक इसी तरह वे किसी की निन्दा भी नहीं सुनना चाहते थे। कोई यदि इस प्रकार की चेष्टा करता तो वे विभिन्न संकेतों से उसे इस विरुद्धाचरण से विरत कर देते।

मघवागणी का स्वभाव सर्वजन प्रिय था। किसी को उत्तेजित होकर कुछ कहना उनकी प्रकृति से बाहर की बात थी। हर स्थिति में अत्यन्त शीतलता ही उनकी विशेषता थी। यह विशेषता आचार्य बनने के बाद भी बनी रही। शासक होने के नाते उन्हें किसी को आवश्यकतावश उपालम्भ देना भी पड़ता तो वे उसे यथासम्भव कोमलता से ही दिया करते थे। कभी-कभी तो उपालम्भ देते समय वे यहां तक कह दिया करते कि तुम्हें ओलंभा देता हूँ तो स्वयं मुझे कष्ट होता है। यदि तुम गलती न करते तो मुझे क्यों कुछ कहना पड़ता? वे अपनी इस शांत वृत्ति के कारण ही सर्व-प्रिय बन गए थे। पर वे जिनते सौम्य और सहज थे उतने ही निर्भीक भी थे। प्रत्येक परिस्थिति में संतुलन बनाये रखने में वे निपुण थे। विकार भावना तो उनमें लेशमात्र भी नहीं थी। उनका चरित्र अत्यंत उज्ज्वल और कार्य महनीय था।

तेरापंथ धर्मसंघ के विकास और समाज में धर्म, संस्कृति के प्रति अनुराग पैदा करने में उनका योगदान उल्लेखनीय है।

प्रस्तुति : **कमल कुमार दुगड़**

आत्म-विद्या

एड्ड आत्मविद् के तीन पुत्र थे। वे तीनों आत्मविद्या का अध्ययन कर अपने घर आए। उसने तीनों की परीक्षा लेनी चाही। पहले से पूछा-'कहो, आत्मविद्या क्या है?' उसने आत्म-विद्या के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। पिता ने कहा - 'तुम उत्तीर्ण नहीं हो।' फिर दूसरे से पूछा। उसने आत्मविद्या - विशारद ऋषियों का वर्णन किया। पिता ने कहा - 'तुम भी उत्तीर्ण नहीं हो।' फिर तीसरे से पूछा। वह मौन रहा। पिता के बार-बार आग्रह करने पर उसने अंगुली के इशारे से बताया कि आत्मविद्या कहने की वस्तुत नहीं है, वह अनुभव करने की वस्तुत है। वह उत्तीर्ण हो गया।

आचार्य श्री माणकगणी के दीक्षा दिवस, युवाचार्य पद एवं आचार्य पद दिवस पर विशेष

हृदय बसै गुरुवर माणक गणी

आचार्य महाश्रमण

हृदय बसै गुरुवर माणक गणी।
माणक गणी संघ-मुकुट-मणी।।

जयपुर में जन्म लीन्हों जौहरी परिवार में
सतरह वरसां में संयम गण-पारावार में।
तीन वरसां बाद में ही बण्या अग्रणी।।1।।

उणपच्चासै श्री मघवा रे पाट विराज्या।
पांच वर्ष शासना में प्रभुवर गाज्या।
उज्ज्वल आभामंडल मानो पूनम चांदणी।।2।।

कार्तिक कृष्णा तीज रात चौपन री आई।
ग्यारह बजे री बेला बिल्कुल अणचाही।
स्वर्गां सिधार्या षष्ठ शासनधणी।।3।।

मालीविहीन बण्यो नन्दनवन संघ है।
भाग्यशाली भिक्षु-गण मुनि कालु संग है।
कसौटी पर खरा उतर्या संत श्रमणी।।4।

तेरापंथ के छठे आचार्य माणकगणी ने तेरापंथ धर्मसंघ की दार्शनिक चिंतनधारा को प्रसारित करने हेतु अभिनव परिकल्पनाएँ कीं और लोगों में धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न की। समाज में आध्यात्मिक एवं चारित्रिक उन्नयन की दिशा में उनके कार्य चिरस्मरणीय हैं।

आचार्य माणकगणी

तेरापंथ के छठे आचार्य महामना माणकगणी मानवीयता, मूल्य बोध और चारित्रिक औदात्त से युक्त एक सुसंस्कृत, सहिष्णु, स्वभाव से सरल, विनम्र, उदार और अप्रिय बात पर भी शांत रहने वाले स्थितप्रज्ञ व्यक्ति थे। उनमें हृदय की कोमलता और परहित की भावना प्रबल थी।

माणकगणी का जन्म जयपुर में सं. 1912, भाद्रपद कृष्णा चतुर्थी को अश्विनी नक्षत्र में हुआ। उनके जन्म का नाम माणकलाल था। उनके पिता का नाम हुकमचंदजी और माता का नाम छोटी बाई था। उनके पूर्वज श्रीमाल जाति में खारड़ गोत्र के थे। माणकगणी के पितामह जीवसुखरायजी हरियाणा प्रदेश के थे। माणकलाल के जन्म के कुछ ही दिन बाद उनकी माता का देहावसान हो गया। अतः वे धाय के दूध पर पाले गये। सं. 1914 में माणकगणी जब दो वर्ष के थे उसी समय बम्बई से जयपुर आते समय सांगानेर के पास के जंगल में भील डाकुओं द्वारा उनके पिता की हत्या कर दी गई।

बालक माणक तथा उनके अन्य भाई-बहनों का पालन-पोषण उनके बाबा लिक्षमणदासजी की देख-रेख में हुआ। माणक सबसे छोटे थे, अतः उन्हें उनका विशेष प्यार प्राप्त था। धर्मप्रिय बाबा की छत्र-छाया में रहते हुए बालक माणक के हृदय में धर्म की अच्छी रुचि पैदा हो गई। सं. 1928 में जब जयाचार्य ने जयपुर में चातुर्मास किया, तब उनकी अवस्था लगभग सोलह वर्ष की थी। वे निरंतर आचार्यश्री का प्रवचन सुनते, संतों की उपासना करते। स्वभावतः उनके धार्मिक संस्कार गहरे होते चले गये। उनकी अभिरुचि तत्त्वज्ञान की ओर बढ़ी तो उन्होंने शीघ्र ही अनेक थोकड़े कंठस्थ कर लिये।

एङ्क दिन एकांत अवसर देखकर उन्होंने जयाचार्य के चरणों में दीक्षा की अपनी भावना रख दी। जयाचार्य को जब लगा कि बालक की भावना के पीछे कोरी भावुकता नहीं, अपितु सच्ची विराग-वृत्ति है तो उन्होंने कहा कि वह अपने आपको अधिक से अधिक अध्ययन में लगाए और अपनी वृत्तियों को कसे। उसके बाद संयम का जीवन ग्रहण करने के लिए अपने बाबा लिछमनदासजी की आज्ञा प्राप्त करे।

माणक ने जयाचार्य के कथन को शिरोधार्य किया और दुगुने उत्साह से अध्ययन करने

लगे। माणक की विराग भावना उत्तरोत्तर विकसित होती गई। अब और आगे बढ़ने के लिए उन्हें बाबा लिछमनदासजी की आज्ञा की आवश्यकता थी, परन्तु उनके समक्ष वह बात रखने का साहस वे नहीं कर पा रहे थे। अंततः स्वयं जयाचार्य ने इस दिशा में पहल की और उनके पितामह ने माणकलाल को दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति दे दी। इसके बाद उनके बड़े भाई कस्तूरचंद की अनुमति की आवश्यकता भी महसूस की गई। उन्होंने भी जयाचार्य के विचारों को सुनने के बाद अनुमति दे दी।

जयाचार्य ने सं. 1928, फाल्गुन शुक्ल एकादशी पुष्य नक्षत्र में सामायिक सूत्र का उच्चारण करते हुए उन्हें आजीवन के लिए संयम व्रत प्रदान किया।

दीक्षा ग्रहण के बाद मुनि माणकगणी ने सैद्धांतिक ज्ञान का अर्जन शुरू किया और अपनी पूरी शक्ति लगाकर शीघ्र ही इस दिशा में सफलता प्राप्त की। उनकी बुद्धि प्रखर थी और किसी भी बात को ग्रहण करने की क्षमता भी काफी थी, अतः थोड़े ही समय में उन्होंने आबश्यक विषयों की जानकारी प्राप्त कर ली। जयाचार्य ने तीन वर्ष के बाद ही उन्हें सं. 1931 में अग्रणी बना दिया।

> तेरापंथ के छठे आचार्य महामना माणकगणी मानवीयता, मूल्य बोध और चारित्रिक औदात्त से युक्त एक सुसंस्कृत, सहिष्णु, स्वभाव से सरल, विनम्र, उदार और अप्रिय बात पर भी शांत रहने वाले स्थितप्रज्ञ व्यक्ति थे। उनमें हृदय की कोमलता और परहित की भावना प्रबल थी।

माणकगणी ने सं. 1943 में जयपुर चातुर्मास के समय पंडित दुर्गादासजी से संस्कृत शब्द-बोध तथा सिद्धांत-चन्द्रिका का अध्ययन किया।

जयाचार्य के बाद आचार्य मघवागणी ने माणकगणी के विकास का पथ प्रशस्त किया। माणकगणी ने सं. 1947 का चतुर्मास बीदासर में किया। वहीं उन्होंने आगम रहस्यों की अच्छी जानकारी प्राप्त की तथा शासन संबंधी अनेक ऐतिहासिक तथ्यों का ज्ञान भी अर्जित किया। गुरुकुल वास में उन्होंने अपने व्यक्तित्व को अच्छी तरह विकसित किया।

माणकलालजी ने सं. 1929 से 1931 तक बीदासर, सुजानगढ़, जयपुर, रतनगढ़, पचपदरा, बीकानेर, फलोदी, बरलू, रीणी (तारानगर), पुर, देशनोक, बालोतरा, पीपाड़, चूरू, उदयपुर, जोधपुर आदि स्थानों की यात्राएँ कीं।

आचार्य मघवागणी ने सं. 1949 में चैत्र कृष्ण द्वितीया को चतुर्विध संघ की उपस्थिति में मुनि माणकलालजी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया और नवीन उत्तरीय (पछेवड़ी) अपने शरीर पर धारण कर तत्काल अपने हाथों से उसे युवाचार्य को ओढ़ा दिया।

माणकगणी को युवाचार्य के पद पर नियुक्त हुए केवल चार दिन ही हुए थे कि चैत्र कृष्ण पंचमी को रात्रि में आचार्य मघवागणी को खांसी का प्रकोप हुआ। उन्होंने युवाचार्य माणकलालजी को अपने पास बुलवाया और उन्हें संघ संचालन के लिए आवश्यक शिक्षा दी। उसके बाद वे थक गए और आराम करने लगे। फिर संतों के सहारे से उठे और एक उबासी ली और उनका शरीर सदा के लिए शांत हो गया।

माणकलालजी सं. 1949, चैत्र कृष्ण अष्टमी को सरदारशहर में आचार्य-पद पर आसीन हुए। आचार्य बनने के बाद उन्होंने कुछ आवश्यक कार्य योजनाएँ बनाई और थली प्रदेश के सभी क्षेत्रों में यात्राएँ कीं। उनके विहार-क्षेत्र में राजस्थान के तत्कालीन राज्य मेवाड़, मारवाड़, ढूंढाड़ तथा थली के साथ-साथ हरियाणा भी शामिल था।

उन्होंने अपने शासनकाल में हांसी, बीदासर और लाडनूं में मर्यादा महोत्सव किए।

सं. 1953 में उन्होंने लाडनूं में मर्यादा महोत्सव किया और उसके बाद सं. 1954 में चतुर्मास के लिए सुजानगढ़ पधार गए। वहाँ कुछ दिनों के बाद नगर में ज्वर और अतिसार का रोग फैल गया। आचार्य माणकगणी भी उससे ग्रस्त हो गए। उपचार के बावजूद सुधार नहीं हुआ। शरीर क्रमशः कमजोर होता गया। कार्तिक कृष्ण तृतीया को वे मूर्च्छित हो गए और दिनभर

मूर्च्छित ही रहे। बालचंदजी बैंगानी नामक श्रावक ने सायंकाल के समय दर्शन किये और नाड़ी देखकर कहा कि नाड़ी इतनी क्षीण हो गई है कि लगता है कि अब यह मूर्च्छा नहीं टूट पायेगी। संभव है, अन्त में हिचकी के साथ प्राण चले जाएं। उनका कथन सत्य निकला। रात के लगभग ग्यारह बजे उन्हें तीन हिचकियां आई और उनके साथ ही 42 वर्ष की अवस्था में ही वे दिवंगत हो गये।

आचार्य माणकगणी के असामयिक निधन से संघ के समक्ष भावी आचार्य को लेकर एक बड़ा प्रश्न खड़ा हो गया। आचार्य के अभाव में किसी प्रकार की शिथिलता उत्पन्न न हो इसके लिए सुजानगढ़ में उपस्थित साधुओं ने एक अस्थायी व्यवस्था करने का निर्णय किया। इसके अनुसार मुनि मगनलाल जी और मुनि कालूरामजी दोनों को मिलकर संघ की व्यवस्था संभालने हेतु कहा गया। आज्ञा और धारणा के लिए तपस्वी मुनि भीमजी को नियुक्त किया गया। चतुर्मास की समाप्ति के बाद पूरा संघ लाडनूं पहुँचा। पारस्परिक विचार-विमर्श के बाद मुनि कालूगणी को आचार्य के नाम की घोषणा करने का भार सौंपा गया। उन्होंने मुनि डालगणी को आचार्य के रूप में घोषित किया। मुनि डालगणी सं. 1954, माघ कृष्ण द्वितीया को आचार्य पद पर आसीन हुए।

आचार्य माणकगणी ने धर्म-प्रचार के लिए निरंतर यात्राएँ कीं और राजस्थान, हरियाणा आदि अनेक क्षेत्रों में पदार्पण कर लोगों में धर्म के प्रति भावना पैदा की एवं तेरापंथ का अभूतपूर्व प्रसार किया।

माणकगणी ने अपने साढ़े चार वर्ष के शासन में संघ की उन्नति के लिए अनेक सारी नवीन योजनाओं की परिकल्पना की, अनेक विषयों के लिए चिन्तन की भूमिका तैयार की और धर्मसंघ एवं समाज में आध्यात्मिक एवं चारित्रिक उन्नयन का पथ प्रशस्त किया।

प्रस्तुति : सुरेंद्र कुमार बोरड़

लक्ष्य और साधना

एक मुमुक्षु ने अपने गुरुदेव से पूछा - 'महाराज! मैं कौन-सी साधना करूँ?'

'तुम बड़े वेग से दौड़ो तथा दौड़ने के पहले यह निश्चित कर लो कि मैं भगवान के लिए दौड़ रहा हूँ। बस, यही तुम्हारे लिए साधना है।' गुरु ने बतलाया।

'तो क्या मेरे लिये बैठकर करने की कोई साधना नहीं है?' शिष्य ने पूछा।

'है क्यों नहीं। बैठो और निश्चय रखो कि तुम भगवान के लिए बैठे हो।' गुरु ने उत्तर दिया।

'भगवन्! मैं कुछ जप न करूँ? शिष्य ने पुनः प्रश्न किया।

'करो, किसी भी नाम का जप करो और सोचो, मैं भगवान के लिए जप कर रहा हूँ।' गुरु ने समझाया।

'तो क्या क्रिया का कोई महत्व नहीं? केवल भाव ही साधना है? शिष्य ने फिर पूछा।

गुरु ने कहा - 'भैया! क्रिया की भी महत्ता है। क्रिया से भाव और भाव से ही क्रिया होती है। दृष्टि लक्ष्य पर रहनी चाहिये, फिर तुम जो कुछ भी करोगे, वही साधना होगी। भगवान पर यदि लक्ष्य रहे तो वे सबको सर्वत्र-सर्वदा मिल सकते हैं। ऐसा है ही कौन, जिसे भगवान नहीं मिले हुए हैं? यदि लक्ष्य ठीक रखा जाए तो साधना स्वयंमेव ठीक हो जाएगी।

विज्ञान और अध्यात्म, विशेषकर जैन दर्शन में चिंतन की दो विरोधी दिशाएँ नहीं हैं। जीव-अजीव पर आचार्य तुलसी द्वारा किए गए शोधपरक चिंतन इस तथ्य को उजागर करते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि में सजीव और निर्जीव की भेदरेखा

आचार्य तुलसी

सजीव के लक्षण

संसार में दो प्रकार के पदार्थ हैं - सजीव और निर्जीव। इन दोनों प्रकार के पदार्थों की रचना रासायनिक तत्त्वों के संयोजन-वियोजन से होती है। जीव-द्रव्य (प्रोटो की आंतरिक संरचना) में कोई रासायनिक विलक्षणता दिखाई नहीं देती। ऐसी स्थिति में सहज ही प्रश्न होता है कि ऐसी कौन-सी गुणात्मक भिन्नता है जो सजीव और निर्जीव के बीच भेदरेखा उत्पन्न करती है? इसके प्रत्युत्तर में एक सिद्धांत है कि सजीव प्राणी 'प्राण' नामक जीवन-शक्ति द्वारा सजीवता प्राप्त करते हैं। पर केवल 'प्राण' कहने से उसके स्वरूप की स्पष्टता नहीं होती है। अतः सजीव प्राणी को समझाने के लिए अधिक विस्तृत परिभाषा अपेक्षित है। सजीव प्राणी वह है, जिसमें निम्नोक्त गुण समूह होता है। यद्यपि इन विशेषताओं में एक-एक या अलग-अलग रूप से निर्जीव पदार्थों में पाए जाने वाले गुणों के साथ सादृश्य दिखाई दे सकता है, फिर भी जिस पदार्थ में समग्र रूप से यह गुण-राशि पाई जाए, वह निश्चित ही 'सजीव' होगा।

जिजीविषा और आहरण

प्राणी जीवित रहने के लिए बाह्य वातावरण से ऊर्जा का सतत आहरण करता रहता है। प्रत्येक जीवित प्राणी अपने बाह्य वातावरण से प्रतिक्षण ऐसे पदार्थों का आहरण करता रहता है, जिनके परिवर्तन एवं आत्मसात्मीकरण के द्वारा वह प्राण-ऊर्जा या जीवन-शक्ति का निर्माण कर सके। वनस्पति इस जीवन-शक्ति का निर्माण सौर ऊर्जा के परिवर्तन से करती है, जबकि अन्य प्राणी भोजन सामग्री से इस ऊर्जा का निर्माण करते हैं। जिजीविषा गुण के कारण ही सजीव पदार्थ अपने भीतर भिन्न-भिन्न प्रकार की क्रियाओं को सुचारु रूप से संपादित करने के लिए भिन्न-भिन्न क्षमता एवं विशिष्टता वाले अवयवों एवं इंद्रियों का निर्माण करते हैं।

संवेदनशीलता

प्रत्येक सजीव प्राणी चारों ओर से सतत परिवर्तनशील पर्यावरण से घिरा हुआ है, जिससे वह निरंतर प्रभावित होता है। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए इन नाना प्रभावों के अनुरूप प्रतिक्रिया करने की क्षमता ही 'संवेदनशीलता' है। यह संवेदनशीलता एककोशीय

अमीबा से लेकर मनुष्य तक सभी प्राणियों में होती है। बाह्य उत्तेजनाओं के प्रति होने वाली प्रतिक्रियाएं जहां छोटे प्राणियों में केवल आदिम रूप में ही होती हैं, वहां अधिक विकसित प्राणियों में ये अधिक विकसित और उच्च स्तरीय होती हैं। ज्यों-ज्यों अनुभव बढ़ता है और सीखने को मिलता है, त्यों त्यों ये और अधिक विकसित, बौद्धिक एवं विविधतायुक्त होती जाती हैं। सारांश यह है कि यह गुण-धर्म अस्तित्व को टिकाने के लिए जितना मनुष्य के लिए आवश्यक है, उतना ही एक छोटे प्राणी के लिए भी है।

चालकता एवं संकुचनशीलता

संवेदनों को एक तरंग के रूप में आवश्यकतानुसार शरीर में यथास्थान पहुंचाने की क्षमता चालकता है। इसके द्वारा प्राणी अपनी प्रतिक्रिया को क्रियान्वित कर सकते हैं, जैसे हानिकारक परिस्थिति से बचने का प्रयत्न। मनुष्य जैसे विकसित प्राणी में नाड़ी तंत्र और मांसपेशी तंत्र की कोशिकाएं इस कार्य में निपुण होती हैं।

संकुचनशीलता इसके साथ जुड़ा हुआ एक अन्य गुण है, जो कोशिकाओं (ऊत्तकों) के संकुचन द्वारा गति या संचलन पैदा कर सकता है। उच्चस्तरीय प्राणियों में मांसपेशीय उत्तक इस क्रिया में निपुण होते हैं, पर एककोशीय जीवों में भी रसायनों के माध्यम से संकुचन हो सकता है।

चयापचय

खाद्य पदार्थों के अपचय से ऊर्जा की उत्पत्ति करना एवं चय से नई रचनात्मक सामग्री का निर्माण करना चयापचय Metabolism कहलाता है, जो निरंतर चलने वाली रासायनिक अभिक्रियाओं के रूप में प्रत्येक सजीव प्राणी में होता रहता है। इसी प्रकार की संश्लेषण-विश्लेषण की क्षमता सजीव प्राणियों की ही विलक्षणता है। इसके साथ-साथ रासायनिक अभिक्रियाओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न अपशिष्ट पदार्थों का सम्यक विसर्जन करने की क्षमता भी प्राणियों की ही विलक्षणता है।

चयापचय की दो धाराएं हैं - चय और अपचय। चय अर्थात संश्लेषणात्मक अभिक्रियाओं के द्वारा सरल घटकों का जटिल यौगिकों के रूप में रूपांतरण। अपचय के दौरान विश्लेषणात्मक अभिक्रियाओं के द्वारा पदार्थों में संगृहीत ऊर्जा को निकाल कर उसे शारीरिक क्रियाओं में लगाया जाता है। पाचन-क्रिया और श्वसन-क्रिया दूसरी धारा के उदाहरण हैं।

वृद्धि और प्रजनन

यद्यपि वृद्धि की क्रिया अजीव पदार्थों में भी दृष्टिगोचर होती है, फिर भी सजीव पदार्थों में होने वाली वृद्धि की प्रक्रिया उससे नितांत भिन्न प्रकार की है। जहां अजीव पदार्थों में वृद्धि की प्रक्रिया सामान्य रूप से केवल योग के रूप में ही होती है - नई सामग्री बाहर से जोड़ी जाती है, वहां सजीव पदार्थों में यह क्रिया आत्मसात्करण (इनटरसेप्शन) नामक प्रक्रिया के द्वारा संपादित होती है, जिसमें बाह्य वातावरण से सामग्री का ग्रहण (आहरण) कर उसे आवश्यक परिवर्तन द्वारा सात्मीकरण योग्य बना कर प्राणी की संरचना में विद्यमान घटकों के रूप में उसका सात्मीकरण कर लिया जाता है। सभी सजीव प्राणी अपने जीवन चक्र में कम से कम एक बार तो कभी न कभी वृद्धि करते ही हैं। पूरे शरीर की वृद्धि का क्रम संपन्न होने पर भी कोशिकाओं एवं ऊतकों के स्तर पर तो वह चालू रहता ही है और शरीर के जीर्णशीर्ण या क्षतिग्रस्त भागों की जगह नई संरचना की संपूर्ति होती रहती है।

प्रजनन के द्वारा प्रत्येक प्राणी अपनी जाति के अस्तित्व को एक प्रकार से अक्षुण्ण बनाए रखता है – प्रजनक प्राणी अपने जन्य प्राणी (संतान) को जातिगत समस्त विशेषताओं की हूबहू प्रतिकृति प्रदान करता है। निम्न छोटे जीवों में बहुधा प्रजनन की प्रक्रिया केवल एक सीधी-सादी कोशिका विभाजन के रूप में ही होती है, जबकि उच्चतर (बड़े) जरवों में उसका स्वरूप कुछ विकसित होता है, जिसमें लैंगिक संबंधों के माध्यम से प्रजनन की प्रक्रिया संपादित की जाती है। इस प्रक्रिया में नर और मादा के रूप में दो प्रजनक आवश्यक होते हैं तथा वे दोनों अपने बच्चों को आनुवंशिक सामग्री की विरासत का अवदान देते हैं।

कोशिका-विभाजन

प्रत्येक जीव चाहे वह छोटा प्राणी हो या मनुष्य, अपने जीवन का प्रारंभ एक कोशिका से करता है। एक

कोशिका से प्रारंभ कर मनुष्य का जीव कोशिका विभाजन द्वारा अपने-आपको पुनः-पुनः द्विगुणित करता जाता है जिससे कि वह खरबों कोशिकाओं वाले बृहत्काय प्राणी के रूप में प्रकट हो सके। शुरुआत की एक कोशिका विभाजन की प्रक्रिया के द्वारा दो कोशिकाओं को पैदा करती है। ये दोनों सन्तति रूप कोशिकाएं पूरी वृद्धि को प्राप्त कर अपनी जननी कोशिका जितनी होकर पुनः दो में विभाजित हो जाती हैं और इस प्रकार विभाजन की एक शृंखला चलती है। पूर्व की कोशिका का अस्तित्व अपनी संतति रूप दो कोशिकाओं के रूप में विलीन होता जाता है। (इस प्रकार यह जननी-संतति संबंध हमारे व्यवहार जगत के संबंध से नितांत भिन्न है।) प्रत्येक बार के पूर्ण विभाजन से पूर्व अपनी समूची गुणराशि रूप विरासत की हूबहू प्रतिकृतियां प्रत्येक खंडार्ध में हस्तांतरित कर दी जाती हैं। इस प्रकार संतति रूप प्रत्येक कोशिका जिसकी संख्या निरंतर बढ़ती जाती है, स्वरूप में अपनी जननी कोशिका की सच्ची प्रतिकृति होती है, जिसमें आनुवंशिकता के समस्त गुण पाए जाते हैं।

कोशिका-विभाजन की यह प्रक्रिया जीवनभर चलती रहती है - सर्वांगीण कायिक विकास होने के पश्चात भी मनुष्य के शरीर में प्रति मिनट 20 करोड़ से भी अधिक नई कोशिकाएं जन्म ले लेती हैं वे जीर्ण-शीर्ण या क्षतिग्रस्त कोशिकाओं का स्थान ग्रहण कर लेती हैं। इसे हम शरीर-पर्याप्ति की संज्ञा दे सकते हैं।

गर्भाधान

गर्भाधान की प्रक्रिया तब प्रारंभ होती है, जब शुक्राणु का अग्र हिस्सा डिंबाणु में प्रविष्ट होता है। यह निषेचित डिंबाणु ही युग्मनज (जीगॉट) कहलाता है। अन्दर प्रवेश करने के बाद अपने 23 गुणसूत्रों के साथ शुक्राणु नर-पूर्वकेंद्रक के रूप में होता है, जबकि डिम्बाणु में पहले से ही 23 गुणसूत्र तथा मादा-पूर्वकेंद्रक विद्यमान होता है। अब इन दोनों पूर्वकेंद्रकों के गुणसूत्र परस्पर सम-रेखा की स्थिति में आकर संयुक्त हो जाते हैं जिससे 46 (या 23 युग्मों में) गुणसूत्र धारण करने वाला निषेचित डिंबाणु या युग्मनज बन जाता है। यह क्षण नए प्राणी के गर्भाधान का क्षण है, इसी क्षण माता गर्भवती बनती है।

प्रजनन-कार्य करने वाली कोशिकाओं (डिम्बाणु और शुक्राणु की कोशिकाओं) में कोशिका विभाजन का कार्य एक विशेष रूप में होता है। इनमें प्रत्येक संतति रूप कोशिका को केवल आधी आनुवंशिक सूचना हस्तांतरित की जाती है अर्थात गुणसूत्रों के प्रत्येक युग्म में से केवल एक-एक गुणसूत्र दिया जाता है। दोनों के मिलने से उत्पन्न नई कोशिका-युग्मज में पूरे मनुष्य का विकास करने की समस्त जानकारी बीज रूप से मौजूद होती है। फिर भी प्रारंभिक अवस्था में यह अपने अस्तित्व को माता के गर्भ से बाहर बनाए रखने में असमर्थ होती है।

शुक्राणु के केंद्रक का डिंबाणु में निषेक होने के पश्चात जब इन दोनों का एकीकरण हो जाता है, तब उनके 46 क्रोमोसोमों का एक पूरा सेट बन जाता है। तत्पश्चात् वह एकाकी कोशिका-युग्मज, दो लघु प्रतिकृतियों में विभाजित हो जाती है, जिनमें प्रत्येक में मूल कोशिका के समग्र क्रोमोसोम मौजूद होते हैं। इसी विभाजन-प्रक्रिया का पुनः पुनः आवर्तन होता है। यह विभाजन क्रिया बाद में जीवन के सामान्य क्रम में होने वाली विभाजन क्रिया से भिन्न प्रकार की होती है। क्योंकि उस प्रक्रिया में विभाजन से उत्पन्न कोशिकाएं पूर्व विभाजन के पश्चात एवं उत्तर विभाजन से पूर्व परिणाम में वृद्धि को प्राप्त होती हैं, जबकि प्रस्तुत विभाजन-प्रक्रिया में विभाजन से उत्पन्न कोशिकाएं परिमाण में क्रमशः छोटी होती चली जाती है। दूसरे शब्दों में कोशिकाओं की संख्या बढ़ती जाती है, पर उनका परिमाण घटता चला जाता है, जिससे समग्र कोशिकाओं का कुल परिमाण करीब-करीब मूल कोशिका (युग्मज) जितना ही रहता है।

इस समय के दौरान विभाजित होने वाली कोशिकाओं को पोषण मूल डिंबाणु के साइटो द्वारा प्रदत्त सामग्री से होता है। यह विभाजन की प्रक्रिया ही वस्तुतः वृद्धि विकास की लंबी शृंखला का प्रारंभ है।

गर्भ का विकास

पुनः-पुनः विभाजन के द्वारा कोशिकाओं का एक गुच्छा-सा तैयार होता है और बाद में एक तरल द्रव युक्त गेंद-सी बन जाती है। सातवें दिन कोशिकाओं की बाह्य परत और

गेंद के भीतर के गुच्छे के रूप में स्पष्ट भेद हो जाता है।

यह ठोस गुच्छा-सा पिंड गर्भाशय-नलिका (Uterian Tube) के माध्यम से बहुत मंद गति से यात्रा करता हुआ गर्भाशय तक पहुंचता है। इस छोटी-सी यात्रा में उसे तीन या चार दिन का समय लग जाता है। गर्भाशय की दीवार में इसका रोपण होता है और यह वहां विद्यमान श्लेष्म में दृढ़ता से जटित हो जाता है।

गर्भाशय में चार या पांच दिन रहने के पश्चात (अर्थात गर्भधारण के सातवें या नौवें दिन) गर्भ को वेष्टित करने वाली अपरा, भ्रूण का आवेष्टन करने वाली झिल्ली या थैली (प्लेसेंटा) का निर्माण शुरू होता है। इस अवस्था में भ्रूण आकार-प्रकार की दृष्टि से मनुष्य की आकृति के साथ थोड़ा बहुत भी सादृश्य नहीं रखता है।

तीसरे सप्ताह के अंत तक भ्रूण का अविकसित हृदय धड़कना शुरू होता है। इस समय भ्रूण की समूची लंबाई 1.5 मिलीमीटर (लगभग एक अक्षर जितनी) ही हो पाती है। अब इसका परिमाण तेज गति से बढ़ना शुरू होता है। सात-आठ दिनों में ही इसका परिमाण बढ़कर पांच मिलीमीटर जितना हो जाता है। एक माह की अवस्था में उसके शरीर के आकार-प्रकार में परिवर्तन होता है। शरीर पर अब छोटे-छोटे अंकुरे से बाहर दिखाई देते हैं तथा एक या दो दिनों के पश्चात उसी प्रकार का अंकुर युग्म नीचे के हिस्से पर भी बाहर आता है और अब सिर का हिस्सा भी धड़ से पृथक पहचाना जा सकता है। फिर एक-दो दिनों के बाद आंखें भी स्पष्ट होने लगती हैं। छठे सप्ताह में भ्रूण का परिमाण तेरह मिलीमीटर (लगभग आधा इंच) जितना हो जाता है। अंकुरों के रूप में प्रस्फुटित हाथ-पैरों की जोड़ी अब कुछ लंबी-सी दिखाई देती है और उन्हें पहचाना जा सकता है। मुख का नाक-नक्शा भी अब स्पष्ट होना शुरू होता है।

दूसरे माह के अंत में जब भ्रूण का परिमाण लगभग एक इंच जितना हो जाताा है, तब उसका चेहरा-मोहरा निश्चित ही मनुष्य जैसा लगने लगता है। तीसरे माह के अंत तक भ्रूण तीन इंच लंबा हो जाता है और उसका लिंग पहचाना जा सकता है। इस प्रकार लगभग तीन माह की आयु के बाद भ्रूण के सारे अंगोपांगों का निर्माण हो जाता है और आकार-प्रकार से वह मनुष्य जैसा लगता है। अब केवल उसकी परिमाण-वृद्धि की प्रक्रिया एवं शारीरिक परिसज्जा का कार्य अवशिष्ट रहता है।

भ्रूण प्रारंभ में एक डंडी के द्वारा अपरा के साथ जुड़ा होता है और बाद में डंडी की जगह नाभि-नाड़ी का प्रादुर्भाव होता है। इसी नाभि-नाड़ी के द्वारा भ्रूण को अपरा के माध्यम से पोषण प्राप्त होता रहता है।

इस प्रकार जन्म से पूर्व के नव मासिक विकास के दौरान मानव भ्रूण परिमाण एवं जटिलता दोनों दृष्टियों से आश्चर्यजनक वृद्धि को प्राप्त होता है। अतिसूक्ष्म एककोशीय स्थिति से वह गर्भ सौ खरब कोशिका वाले तीन से चार किलोग्राम वजन के सजीव द्रव्य का सुनिश्चित आकार धारण कर लेता है। परिमाण और वजन की वृद्धि तो इस अद्‌भुत विकासक्रम का केवल एक छोटा-सा पहलू ही है। मुख्य बात तो कोशिकाओं के क्रमिक परिष्करण एवं रूपांतरण की है, जिसके द्वारा वे विशिष्ट कार्यकलापों को करने वाले समूहों के रूप में निर्मित होती है और श्वसन, परिसंचरण, पाचन एवं विसर्जन जैसे संस्थानों के संचालन की योग्यता प्राप्त कर लेती हैं।

प्रामाणिकता

एक कर्मचारी को मासिक वेतन मिला। रुपये गिनकर देखे, पांच रुपये कम थे। वह सीधा अधिकारी के पास गया और रुपये कम होने की शिकायत की। अधिकारी बोला –'पिछले माह तुम्हें पांच रुपये अधिक दिए गए थे, उस समय उन्हें लौटाने क्यों नहीं आए?' कर्मचारी ने तपाक से उत्तर दिया - 'किसी महीने भूल सह्य हो सकती है पर लगातार दो महीनों तक आप गलती करें, यह मेरे लिए असह्य है।'

विश्व में सर्वत्र व्याप्त हिंसा के हेतु अनेक हैं, जिनपर पुनर्विचार की आवश्यकता है। तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य महाश्रमण पूरे देश में अहिंसा के प्रति जागृति पैदा करने हेतु पदयात्राएँ कर रहे हैं। उनके विचार बिंदु हिंसा को मिटाने हेतु महान सूत्र देते हैं।

विश्व शांति का सूत्र है अहिंसा

आचार्य महाश्रमण

हिंसा आज के युग की सबसे बड़ी त्रासदी है। संपूर्ण विश्व आतंकवाद और हिंसा से त्रस्त है। हिंसा के अनेक हेतु हैं, जिनको समझने की आवश्यकता है और उसी परिप्रेक्ष्य में अहिंसा की अवधारणा को जानने और उन्हें अपने जीवन में अपनाने की जरूरत है।

हिंसा के कई कारणों में एक है असहिष्णुता की भावना। आज व्यक्ति एक दूसरे के प्रति असहिष्णु बनता जा रहा है। यह असहिष्णुता उससे जाने-अनजाने अनेक अकरणीय कार्य करवा लेती है। आज मन एवं समाज को आन्दोलित करने वाली अनेक परिस्थितियाँ तथा उससे उत्पन्न हिंसा एवं असहिष्णुता आदि भावनाएँ विश्व शांति के पथ में बाधक बनी हुई हैं।

क्रोध, मान, माया, लोभ, झूठ, चोरी, भोगासक्ति, परिग्रह आदि भी हिंसा के प्रधान कारणों में हैं। इसके साथ ही कट्टरता भी इसका एक हेतु है।

गरीबी, बेरोजगारी, अभाव आदि हिंसा के कारण बनते हैं। गरीबी की रेखा की तरह क्या अमीरी की भी रेखा नहीं होनी चाहिए? कोई भी व्यक्ति गरीबी की रेखा के नीचे और अमीरी की रेखा के ऊपर क्यों रहे? इससे आर्थिक वैषम्य में अन्तर आ सकता है? देश में अमीर और गरीब दोनों प्रकार के लोगों में चरम वैषम्य मिलता है।

व्यक्ति में असंयम का बढ़ता भाव भी हिंसा का कारण है। इच्छाएं आकाश के समान अनंत होती हैं, व्यक्ति द्वारा उन्हें संयमित नहीं करने पर हिंसा के लिए भूमि निर्मित होने लगती है।

जीवन में भावना का बड़ा महत्त्व है। चित्त में दुर्भाव आता है तो चित्त कलुषित बन जाता है और आदमी में जाति, वर्ग, संप्रदाय, रंग, भाषा व क्षेत्र को लेकर असद्भावना, दुर्भावना उत्पन्न हो जाती है और साम्प्रदायिक उन्माद को बढ़ावा मिलता है।

आदमी के भीतर अनेक प्रकार की कामनाएं रहती हैं। धन प्राप्ति, पुत्र प्राप्ति, प्रसिद्धि आदि अनेक इच्छाएं आदमी के भीतर रहती हैं। कामना तीन कोटि की होती है - उत्तम, मध्यम और अधम। साधना पथ पर आगे बढ़ने तथा ज्ञानार्जन की कामना उत्तम कोटि की कामना है। धन, पुत्र आदि की प्राप्ति की कामना मध्यम कोटि की कामना है। किसी के अनिष्ट की कामना करना अधम कोटि की कामना है। हिंसक प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में अधम कोटि की कामना बलवती होती है।

दो शब्द हैं - वित्त और वृत्त। वित्त का अर्थ है धन और वृत्त का अर्थ है चरित्र। आदमी धन के अर्जन और संरक्षण के लिए कितना प्रयत्न करता है, किन्तु वृत्त पर ध्यान नहीं देता, यह भी हिंसा का हेतु बनता है।

हिंसा से संत्रस्त विश्व को अहिंसारहित करने के लिए आज हर देश के हर नागरिक को अपने चिंतन, व्यवहार और जीवनशैली पर पुनर्विचार करना होगा। धर्म, संस्कृति, नैतिकता, मानवीय मूल्यों व भाईचारे का विकास करना होगा और विश्व शान्ति के लिए एक क्रान्ति करनी होगी। इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जीवनशैली में बदलाव।

जीवनशैली को प्रशस्त बनाने के लिए चार बातों की अपेक्षा होती है - ईमानदारी, अहिंसा, संयम और साधना। जीवन में यथासंभव ईमानदारी का अनुपालन होना चाहिए। जीवन चलाने के लिए कार्य किया जाता है। उसमें प्रामाणिकता और कर्तव्यनिष्ठा का होना विशेष बात होती है।

अहिंसा का महत्त्वपूर्ण अंग है - मैत्रीभाव। यह किसी भी धर्म का सार है। दूसरों का हितचिंतन करना, मंगल सोचना, हित करना मैत्री है। जाति, भाषा, क्षेत्र संप्रदाय आदि को लेकर आदमी-आदमी से घृणा न करे। सबमें सद्भाव रहना चाहिए। आदमी के मन में प्राणियों के प्रति मैत्री भाव रहना चाहिए। मैत्री शब्द में अहिंसा तो है ही, साथ में दूसरों के कल्याण की भावना भी निहित है। जिसके चित्त में मंगल मैत्री की भावना होती है, वह अपना एवं दूसरे का भी मंगल कर लेता है।

> *अहिंसा का महत्त्वपूर्ण अंग है - मैत्रीभाव। यह किसी भी धर्म का सार है। दूसरों का हितचिंतन करना, मंगल सोचना, हित करना मैत्री है।*

एक है - सर्वधर्म समभाव और दूसरा है - सर्वधर्म सद्भाव। समभाव का होना आवश्यक नहीं, किन्तु सद्भाव सबके प्रति रहना चाहिए। किसी के प्रति विद्वेष भावना नहीं रहनी चाहिए। अनेकान्त के आधार पर देखा जाए तो विभिन्नता में भी समानता को देखा जा सकता है।

अणुव्रत की आत्मा या उसका केन्द्रीय तत्व संयम है। जिस आदमी के जीवन में संयम और परोपकार की भावना जागृत होती है, वह श्रद्धेय बन जाता है। आदमी को अपने मन, वाणी, शरीर और इन्द्रियों को संयमित करने का प्रयास करना चाहिए। संयम से व्यक्तित्व का विकास ही नहीं, चेतना का उत्थान भी होता है। संयम से ही जुड़ा तत्व है - अहिंसा। हिंसा को अंधकार से तो अहिंसा को दीप से उपमित किया जा सकता है। जहां हिंसा का अंधकार है, वहां अहिंसा का दीप प्रज्वलित करने का प्रयास करना चाहिए।

प्राचीन साहित्य में त्रिवर्ग बताया गया है - धर्म, अर्थ और काम। गार्हस्थ्य में अर्थ और काम का महत्व है। गृहस्थ को अर्थ की आवश्यकता होती है। गृहस्थ जीवन को रथ माना जाए तो उसके दो पहिए हैं - एक काम और दूसरा अर्थ। इस रथ का सारथि धर्म होना चाहिए। धर्म का अंकुश है तो अर्थ और काम नियंत्रित रह सकते हैं। अर्थ पर धर्म का अंकुश रखने का तात्पर्य है अर्थार्जन में नैतिकता और उपभोग में संयम हो। वह अर्थ निरंकुश है, जो येन-केन प्रकारेण अनैतिकता के द्वारा प्राप्त या उपार्जित किया जाता है। आदमी लोभ में फंसकर अर्थलाभ के लिए कुछ भी कर देता है। जीवन निर्वाह के लिए धन-वैभव का महत्त्व है, किन्तु जीवन-निर्माण के लिए सत्संस्कारों का भी बड़ा महत्त्व है।

काम के संबंध में भी कामेच्छा का संयम होना चाहिए। आदमी विवाह करता है। विवाह करने के तीन कारण हो सकते हैं - जीवन साथी को प्राप्त करना, वंश परम्परा को चलाना और संयमित रूप से कामेच्छा की पूर्ति करना। यहाँ यदि संयम का पालन किया जाए तो शायद बहुत सारी अघटन घटनाएँ न घटें।

जीवन में इच्छा परिमाण और भोगोपभोग का परिसीमन होना चाहिए। अन्याय और अपराध से धन का उपार्जन नहीं होना चाहिए। किसी दृष्टि से संतोष और असंतोष दोनों लाभदायक हैं।

आदमी सामूहिक जीवन जीता है। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो एकाकी जीवन जीते हैं। गृहस्थ प्रायः पारिवारिक जीवन जीते हैं। परिवार-परिवार मिलकर समाज का निर्माण होता है। सामाजिक स्वस्थता और

विकास के लिए जरूरी है पारिवारिक जीवन अच्छा हो। वह परिवार स्वर्गतुल्य है, जिसमें संप, सन्मति और संपत्ति हो। संप पारिवारिक जीवन की एक अच्छी उपलब्धि है, साथ में सन्मति अर्थात चिन्तन और संस्कार अच्छे हों।

हमारा विचार और निष्ठा जैसी होती है, उसका प्रतिबिम्ब व्यवहार में भी देखने को मिलता है। यदि सम्यक दृष्टिकोण और सम्यक आस्था होगी तो हमारा व्यवहार भी सम्यक हो सकेगा। आस्था हमारे व्यवहार का नियामक है।

उद्योग में न मालिक मजदूर का शोषण करे और न ही मजदूर उद्योगपति का शोषण करे। मालिक मजदूर से पूरा श्रम करवाए और तदनुरूप वेतन न दे तो यह मालिक द्वारा मजदूर का शोषण है। मजदूर मालिक से पूरा वेतन ले और श्रम से जी चुराए तो यह मजदूर द्वारा मालिक का शोषण है।

> गृहस्थ जीवन को रथ माना जाए तो उसके दो पहिए हैं - एक काम और दूसरा अर्थ। इस रथ का सारथि धर्म होना चाहिए। धर्म का अंकुश है तो अर्थ और काम नियंत्रित रह सकते हैं। अर्थ पर धर्म का अंकुश रखने का तात्पर्य है अर्थार्जन में नैतिकता और उपभोग में संयम हो।

धर्म का एक सार है दया। किसी को न मारने का संकल्प दया है। अभयदान दया का व्यक्त रूप है। छह काय के जीवों को मारने का त्याग करना अभयदान है। आदमी का हृदय सदय अर्थात दया सहित होना चाहिए।

आस्था के अनुरूप हमारा व्यवहार भी बन सकता है। व्यक्ति दुराचार, कदाचार व भ्रष्टाचार से विलग होने का प्रयास करे और सदाचार में संलग्न रहे, यही काम्य है।

दो विचारधाराएं प्रचलित रही हैं - एक पूर्वजन्म, पुनर्जन्म आदि को स्वीकार करने वाली आस्तिक विचारधारा और दूसरी इन सबको अस्वीकार करने वाली नास्तिक विचारधारा।

वर्तमान लोक हमारे सामने है, किन्तु परलोक प्रत्यक्ष नहीं है, मोक्ष तो और भी दूर की बात है। परलोक तथा मोक्ष का ज्ञान ग्रंथों और संतों से प्राप्त हो सकता है। आदमी को अधोगति से बचने के लिए पवित्र जीवन जीना चाहिए। प्रश्न हो सकता है कि परलोक है या नहीं? नास्तिक विचारधारा परलोक को स्वीकार नहीं करती। पूर्वजन्म और पुनर्जन्म की अवधारणा को नास्तिक दर्शन में नकारा गया है। उनके अनुसार यह दुनिया उतनी ही है, जितनी इन्द्रियों का विषय बनती है। परलोक जैसा कुछ नहीं है। नास्तिक विचारधारा भौतिकतावादी है और आस्तिक विचारधारा अध्यात्मवादी। इस संदर्भ में यह विचारणीय है कि परलोक के विषय में मन में संदेह है तो भी पापाचरण को छोड़ना चाहिए और सदाचार करना चाहिए। यदि परलोक है तो अच्छी गति होगी और परलोक नहीं है तो सत्पथ पर चलने में हानि क्या है?

नास्तिक बनने का तात्पर्य यह नहीं कि हिंसक, अनैतिक या नशे में आसक्त बन जाओ। तुम्हें क्या पता परलोक नहीं ही है? मान लो नहीं भी है तो सन्मार्ग पर चलने से तुम्हारा यह जीवन तो शान्तिपूर्ण बन सकेगा।

सत्य के आकाश में उड़ान भरने के लिए अनाग्रह और अनुसंधान इन दो पंखों की आवश्यकता रहती है। ये दो पंख जिसके पास रहते हैं, वह सत्य के आकाश में उड़ान भर सकता है। सत्य के अनुसंधान में अनाग्रह और प्राप्त सत्य की सुरक्षा में आग्रह रहना चाहिए।

सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति सारे धर्मों की शिक्षा की बुनियाद है। इन तीनों की जरूरत सिर्फ हमें ही नहीं, पूरी दुनिया को है। प्रश्न हो सकता है कि सबसे पुराना धर्म कौन-सा है? जैन धर्म में कहा गया है – अहिंसा धर्म सबसे पुराना है। जैन, बौद्ध, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, पारसी आदि सम्प्रदायों में कौन-सा पुराना है, यह तो चर्चा का विषय हो सकता है, किन्तु अहिंसा धर्म शाश्वत है, इसपर कोई विवाद नहीं है।

व्यक्तिगत साधना, भगवद्भक्ति अच्छी बात है, किन्तु व्यवहार में मैत्री भी रहनी चाहिए। संप्रदाय अलग-अलग हो सकते हैं। जैसे गायों के शरीरों का रंग अलग-अलग हो सकता है, किन्तु दूध सबका आमतौर पर सफेद होता

है। उसी प्रकार हमारी वेशभूषा और उपासना पद्धितियों में भिन्नता हो सकती है, किन्तु अहिंसा धर्म तो सबके लिए पालनीय है।

आदमी को यह प्रयास करना चाहिए कि उसके कार्य, भाव और भाषा में ऋजुता तथा कथनी-करनी में समानता रहे। उसके मन, वचन और कर्म में साम्य होना चाहिए।

शिक्षा से ज्ञान का प्रकाश प्राप्त होता है और अज्ञान का अंधकार दूर होता है। हम कल्पना कर सकते हैं कि माता-पिता आदि अभिभावक अपने लाडलों को ज्ञानवत्ता, आत्मनिर्भरता और सुसंस्कार सम्पन्नता की अपेक्षा के साथ विद्यालय में भेजते हैं। अभिभावकों की इन तीन अपेक्षाओं की पूर्ति करने वाले विद्या संस्थान शत-प्रतिशत सुफल हैं। यदि इन तीन उद्देश्यों को पूर्ति नहीं होती तो मानना चाहिए कि कहीं कुछ कमी है। मैं बुद्धि का सम्मान करता हूं। मेरा सोचना है कि बुद्धि का विकास होना चाहिए। उसके साथ विद्यार्थी में भावात्मक शुद्धि भी रहनी चाहिए। विद्यार्थी में ज्ञान के साथ सत्संकार भी परिपुष्ट होने चाहिए।

हमारे जीवन में विवेक का बड़ा महत्त्व है। विवेक धर्म है। विवेचनपूर्वक करणीय-अकरणीय, हित-अहित आदि का निर्णय करना विवेक है। किसी कार्य को करने से पूर्व आदमी को अनेक दृष्टियों से विवेक करना चाहिए।

निन्दा-प्रशंसा, सुख-दु:ख, अनुकूलता-प्रतिकूलता आदि अनेक परिस्थितियों में राग-द्वेष का भाव न आए, यह समता की साधना है। आदमी को राग-द्वेष से ऊपर उठकर समता की साधना करनी चाहिए। अध्यात्म का या साधना का सार है – राग-द्वेष को जीतना या उसे क्षीण करना।

क्षमा, विनय, ऋजुता, संतोष, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, भोगों के प्रति अनासक्ति, अपरिग्रह प्रतिस्रोतगामिता है। आदमी के चरण प्रतिस्रोतगामी होने चाहिए। आदमी जितना प्रतिस्रोत में आगे बढ़ता जाता है, उतना आत्माभिमुख होता है और विषयों से विरक्त बनता जाता है। आदमी को स्वयं के प्रति और दूसरों के प्रति भी मंगलकामना करनी चाहिए। सब सुखी बनें, निरामय रहें, यह बड़ी मंगलकामना है।

अस्तेय

साधु इब्राहीम घूमते-घूमते किसी धनवान के बगीचे में जा पहुँचे। उस धनी व्यक्ति ने उन्हें कोई साधारण मजदूर समझकर कहा - 'तुझे यदि कुछ काम चाहिए तो बगीचे के माली का काम कर। मुझे एक माली की आवश्यकता है।

इब्राहीम को एकान्त बगीचा भजन के लिए उपयुक्त जान पड़ा। उन्होंने धनी व्यक्ति की बात स्वीकार कर ली। बगीचे का काम करते हुए उन्हें कुछ दिन बीत गए। एक दिन बगीचे का स्वामी अपने कुछ मित्रों के साथ बगीचे में आया। उसने इब्राहीम को कुछ आम लाने की आज्ञा दी। इब्राहीम कुछ पके आम तोड़कर ले आए किंतु वे सभी खट्टे निकले। बगीचे के स्वामी ने असंतुष्ट होकर कहा – 'तुझे इतने दिन यहाँ रहते हो गए और यह भी पता नहीं कि किस वृक्ष के फल खट्टे हैं और किसके मीठे?'

साधु इब्राहीम ने तनिक हँसकर कहा - 'आपने मुझे बगीचे की रक्षा के लिए नियुक्त किया है, फल खाने का अधिकार तो दिया नहीं है। आपकी आज्ञा के बिना मैं बगीचे का फल कैसे खा सकता था और बिना खाए खट्टे-मीठे का पता कैसे लगता?

धनी व्यक्ति आश्चर्य से साधु का मुख देखता रह गया।

विश्व महिला दिवस पर विशेष

प्राचीनकाल से ही स्त्री की प्रताड़ना होती रही है। अगर आर्थिक सत्ता हाथ में होती तो शायद स्त्री इतनी उपेक्षित न होती। उसे हमेशा पुरुष जाति पर निर्भर रहना पड़ा। तमाम खूबियों के बावजूद स्त्री जाति अपना प्राप्य प्राप्त नहीं कर सकी है, यह चिंतनीय है।

नारी

स्वामी विवेकानन्द

मेरे लिए माँ की कृपा पिता की कृपा से सौ गुना अधिक मूल्यवान है। माँ की कृपा माँ का आशीर्वाद मेरे लिए सर्वोपरि है....। कृपया मुझे क्षमा करें। माँ के संबंध में मैं कुछ अधिक भावांध हूँ। यदि माँ आदेश देती हैं तो उनका स्नेहसिक्त संरक्षण हर प्रतिकूल स्थिति में हमारी रक्षा कर सकता है। अमरीका जाने के पूर्व आशीर्वाद देने हेतु मैंने माँ को पत्र लिखा था। उनका आशीर्वाद मुझे तुरंत मिल गया और मैं समुद्र लाँघ गया।

किसी राष्ट्र की प्रगति को भांपने का सर्वोत्तम मानदंड यह होना चाहिए कि वहाँ नारियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है? विश्व का कल्याण तब तक संभव नहीं है जब तक नारियों की स्थिति में सुधार न हो। नारियों ने कई युगों तक कष्ट झेला है और इसी कारण उनमें असीम धैर्य एवं अनंत सामर्थ्य विद्यमान है।

सार्थक नारीत्व से मेरा आशय यह है कि वे सही अर्थों में स्वच्छंद हों - उन्मुक्त हों। आत्मा का, चाहे वह पुरुष हो या महिला, कोई लिंग नहीं होता है। शरीर ही ऐसी चीज है, जिससे लिंग निर्धारित होता है और जो मनुष्य आत्मा की खोज करना चाहता है उसके लिए लिंग पार्थक्य कोई मतलब नहीं रखता है।

जीवन के हर क्षेत्र में, चाहे वह राजनीति, प्रादेशिक नियंत्रण या देश के प्रशासन का क्षेत्र हो - यहाँ तक कि युद्ध का क्षेत्र क्यों न हो - नारियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि वे पुरुष से श्रेष्ठ न होने पर भी उनके समान सक्षम जरूर हैं। उन्हें जब भी मौका मिला है, उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि उनमें पुरुष के समान योग्यता है। इसी गुण के कारण वे बिरले ही पथभ्रष्ट होती हैं। वे सामान्यतः नारी सुलभ उन विशिष्टताओं एवं गुणों को बरकरार रखती हैं जो स्वभावतः उनकी प्रकृति में विराजमान है। यही वजह है कि अपने राज्य के प्रशासक एवं नियामक के रूप में उन्होंने कम से कम भारत में यह प्रमाणित कर दिया है कि वे पुरुष से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं।

यह बिलकुल समझ में नहीं आता है कि इस देश में पुरुष और नारी के बीच इतना विभेद

क्यों किया जाता है, जबकि वेदांत यह उद्घोषित करता है कि सभी प्राणियों में आत्म-चेतना विद्यमान है। आप हमेशा नारियों की आलोचना करते हैं, पर यह तो बताइए कि आपने उनके उत्थान के लिए क्या किया है? कठोर नियमों के पाश में जकड़ कर पुरुष ने नारियों को उत्पादक यंत्र बना दिया है। यदि आप नारियों के उत्थान के लिए सक्रिय नहीं होते हैं जो ईश्वरीय एवं देवी माँ के मूर्त रूप हैं, तो आपका यह सोचना निरर्थक होगा कि आप उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। सभी राष्ट्रों ने नारियों को सम्मान देकर ही महत्ता प्राप्त की है। जो देश और राष्ट्र नारियों का सम्मान नहीं करता है, वह न तो वर्तमान में और न ही भविष्य में महान हो सकता है। **हमारी जाति के भ्रष्ट होने का मूल कारण यह है कि हमने शक्ति की इन जीवंत प्रतिमाओं का आदर नहीं किया है। उस परिवार अथवा देश के उन्नयन की कतई आशा नहीं की जा सकती है, जहाँ नारियों के प्रति आदर भाव नहीं हो।** जब कभी लोग पुरुष और नारी के कार्य के विषय पर चर्चा करते हैं, वे हमेशा यह गलती कर बैठते हैं कि कौन-सा काम पुरुष कर सकते हैं और कौन-सा काम नारी। वे सोचते हैं कि पुरुष सर्वोत्तम तरीके से लड़ सकता है अर्थात वह अत्यधिक शारीरिक कष्ट झेल सकता है और वह नारियों की शारीरिक दुर्बलता एवं न जूझ पाने या लड़ाई न कर पाने की उनकी प्रकृति को अनुकम्पा की दृष्टि से देखता है। यह अनुचित है। नारियां पुरुष की तरह ही साहसी होती हैं। प्रत्येक नारी अपने तरीके से पुरुष के समान उपयुक्त एवं उत्तम हो सकती है। क्या एक पुरुष नारी की तरह धीरता, सहनशीलता एवं प्रेम से शिशु का पालन -पोषण कर सकता है? पुरुष ने अपने में काम करने की शक्ति विकसित की है तो स्त्रियों ने स्वयं में तकलीफ सहने की क्षमता विकसित की है। यदि नारी पुरुष के समान कोई कार्य नहीं कर सकती है तो कोई पुरुष भी नारी की तरह पीड़ा नहीं झेल सकता। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड इसी सम्यक संतुलन पर गतिशील है।

आप हमेशा नारियों की आलोचना करते हैं, पर यह तो बताइए कि आपने उनके उत्थान के लिए क्या किया है? कठोर नियमों के पाश में जकड़ कर पुरुष ने नारियों को उत्पादक यंत्र बना दिया है। यदि आप नारियों के उत्थान के लिए सक्रिय नहीं होते हैं जो ईश्वरीय एवं देवी माँ के मूर्त रूप हैं, तो आपका यह सोचना निरर्थक होगा कि आप उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं।

लघु कथा

मैं कौन हूं?

रात्रि के समय कोई दार्शनिक एक पुष्पवाटिका में घूम रहा था। उसकी आहट पाकर माली जग गया। वह हाथ में लाठी और टॉर्च लेकर इधर-उधर देखने लगा। दार्शनिक के पास पहुंचकर उसने पूछा - तुम कौन हो? दार्शनिक अपनी धुन में लीन था, अतः कुछ सुन नहीं पाया। माली उसके एकदम निकट पहुंचकर बोला – तुम कौन हो? यहां क्यों घूम रहे हो? दार्शनिक ने दो क्षण रूककर उत्तर दिया- मैं कौन हूं? यह प्रश्न मुझे वर्षों से झकझोर रहा है। इसी प्रश्न की गहराई में पैठकर मैं यहां पहुंच गया हूं। माली! तुम्हीं बताओ, 'मैं कौन हूं?' जिस दिन मुझे इस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा, मैं कृतार्थ हो जाऊंगा।'

बदली हुई परिस्थितियों में भी स्त्रियाँ किस मुकाम पर है, यह गहन चिंतन का विषय है। आज भी स्त्री जाति के बारे में अधिकांश लोगों की दृष्टि साफ नहीं है। स्त्री विमर्श में सम्यक दृष्टिकोण अपेक्षित है।

सोच के उजाले

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस का कार्यक्रम हो या महिला सशक्तीकरण का प्रश्न हो, महिलाओं की सोच बड़ी होनी चाहिए। केवल अपनी अस्मिता को बचाकर कोई भी महिला अपनी भावी पीढ़ी को निश्चिन्त नहीं बना सकती। महिला संगठनों के कार्यक्रमों की बुनियाद संपूर्ण महिला जाति की अस्मिता की सुरक्षा होनी चाहिए।

भविष्य स्त्री के हाथों में

एक विचारक का मंतव्य है कि यदि हमारे अस्तित्व का नियम अहिंसा है तो भविष्य स्त्री के हाथों में है। इस मंतव्य के साथ सबकी सहमति हो, यह जरूरी नहीं है। फिर भी यह तो स्वीकार करना ही होगा कि अहिंसा के धरातल पर फलित होनेवाली मैत्री, करुणा, सेवा एवं संवेदनशीलता की संपदा स्त्री के जीवन को संवारती है। इस संपदा के आधार पर महिला सशक्तीकरण की योजना क्रियान्वित की जा सकती है।

हिंसा एक निषेधात्मक भाव है। यह विध्वंस का प्रतीक है। हिंसा के परिणाम मानव जाति के भविष्य को धूमिल बना रहे हैं। स्त्री को सृजन का पर्याय माना जाता है। उसके जीवन से अहिंसा की धाराएं प्रवाहित होती रहती हैं। इन धाराओं से अभिषिक्त मानव ही सुख और शान्तिमय भविष्य की कल्पना कर सकता है।

सूचना शुभ भविष्य की

एक समय था, जब स्त्री के सामने अस्तित्व का संकट था। वह संकट पूर्णतः टल गया है, ऐसा तो नहीं लगता। पर पिछले कुछ दशकों में स्त्री ने अपनी अस्मिता स्थापित की है, अलग पहचान बनाई है और अपने कर्तृत्व को निखारा है। जिन क्षेत्रों में स्त्री के प्रवेश की कल्पना ही नहीं थी, उन क्षेत्रों के शिखर पर आरोहण करने की स्थिति बन चुकी है। पुरुष वर्ग के एकाधिकार वाले क्षेत्रों में भी महिला शक्ति का प्रवेश हो चुका है। यह शुभ भविष्य की सूचना है।

सुकरात ने लिखा है –'हमारा ध्येय या लक्ष्य सस्ता सुख नहीं, हमारा लक्ष्य ऐसा हो, जिसे पाने से ख्याति में चार चांद लग जाएं।' यह चिन्तन विकास की दिशाओं के निर्धारण में

बहुत उपयोगी हो सकता है। महिलाएं किसी भी दिशा में छलांग भरें, पर उनके पैर यथार्थ की जमीन पर टिके रहें। अनुस्रोत में चलना सुविधाजनक हो सकता है, किन्तु प्रतिस्रोत में आगे बढ़े बिना मंजिल की दूरी कम नहीं होगी। इस दृष्टि से आवश्यक है कि महिलाओं की शक्ति एवं समय का उपयोग परिवार एवं समाज की सुन्दर संरचना में होता रहे।

अंधेरा और उजाला

अंधेरा और उजाला — ये जीवन के दो पहलू हैं। महिलाएं भी इन दोनों पहलुओं से रूबरू हो चुकी हैं। अशिक्षा और संस्कारहीनता के अंधेरे इतने सघन थे कि उन्होंने महिलाओं को अपनी अस्मिता का बोध ही नहीं होने दिया। आचार्य तुलसी जैसे महापुरुषों ने रोशनी की मशाल उनके हाथों में थमाई और कहा – 'इसको बुझने मत देना।' बस, यही अभिप्रेरणा उन्हें अंधेरे से बाहर निकालने में कामयाब हुई। महिलाओं को जो रोशनी मिली है, उसे घर-घर पहुंचाना है और हर महिला के जीवन को उजालों से भरना है। मन के अंधेरे मिटें और सोच के अंधेरे छंटें, इस मिशन को एक-एक महिला के जेहन में उतारना है।

आज महिला-समाज साक्षरता की दर में काफी इजाफा कर चुका है। उच्च शिक्षा के दरवाजों पर भी वह दस्तक दे रहा है। अब उम्मीद की जा रही है कि कार्पोरेट एवं मैनेजमेंट के क्षेत्र में भी वे नए रेकॉर्ड स्थापित करेंगी। महिलाओं द्वारा अंजाम दिए गए साहसिक कार्यों की सूचनाएं भी उत्साहवर्द्धक हैं। पर पहली बात तो यह है कि जिस विकास की संभावना की जा रही है, वह विकास एकपक्षीय है। भावात्मक दृष्टि से समाज और अधिक अंधेरों से घिरता जा रहा है। दूसरी बात यह है कि कुछ महिलाओं के आगे बढ़ने मात्र से महिला समाज की अस्मिता उजागर नहीं हो पाएगी।

मुखौटों का स्वरूप

महिला समाज की अस्मिता को आच्छादित करनेवाला अंधेरा नए-नए मुखौटे पहन कर खड़ा है। उसके कुछ मुखौटों का स्वरूप इस प्रकार है -

1. हीनभावना - अपने आपको पुरुष की तुलना में कमतर मानना।
2. अस्मिता की अस्वीकृति - अपनी योग्यता को अस्वीकार करना।
3. समाज में दोयम दर्जा - प्रतिस्पर्धा में स्त्री को हाशिए पर रखना।
4. सोच की संकीर्णता - महिला जाति के व्यापक हितों को अनदेखा करना।
5. सहारे ताकना - आत्मनिर्भरता की मनोवृत्ति का अभाव।
6. आत्मविस्मृति - थोड़े से प्रलोभन पर प्रवाह में बहना।
7. काम का भार - घर एवं ऑफिस, दोनों का दायित्व ओढ़ना।
8. निराशा की भावना - उचित मूल्यांकन के अभाव में निराश होना।
9. जुझारूपन का अभाव - चुनौतियों को झेलने की मानसिकता का अभाव।
10. उदारता की कमी - महिलाओं द्वारा महिलाओं की कटु आलोचना।
11. आधुनिकता का नशा - सांस्कृतिक मूल्यों की अवहेलना।

दुनिया में अंधेरे की सत्ता है तो उजाले का भी अस्तित्व है। उजाले का होना ही पर्याप्त नहीं है। हर महिला तक उजाला पहुंचाने का संकल्प तथा इस संकल्प को फलवान बनानेवाला पुरुषार्थ महिला सशक्तीकरण के स्वप्न को साकार कर सकता है।

समस्त नारी शक्ति द्वारा अपनी अस्मिता को पहचानने तथा शक्ति का समुचित उपयोग करने का अभियान चलाए, यह अपेक्षा है। क्योंकि

सूरज के रथ पर बैठे हैं, तनकर आज अंधेरे।
रच दो इन्हीं अंधेरों की, छाती पर नए सवेरे।।

मीडिया आज स्त्रियों को जिस रूप में प्रस्तुत कर रही है वह , भ्रामक एवं बाजारवादी परियोजनाएँ हैं, क्योंकि स्त्रियाँ वैसी नहीं हैं, जैसा सिरियलों में परोसा जा रहा है। स्त्रियों के चरित्र पर यह अनावश्यक प्रहार व्यापक विरोध की मांग करता है।

मीडिया का स्त्री विमर्श

शंभुनाथ

मीडिया आजकल स्त्री की जो छवियां दे रहा है, वे स्त्रियों के वर्तमान आंदोलनों और जागरण से भिन्न हैं। आज दुनिया में और भारत में भी स्त्रियों के उत्पीड़न को लेकर व्यापक मुखरता है। कहा जा सकता है कि 1917 में स्त्रियों के मताधिकार को लेकर चले आंदोलन, 1929 में लड़कियों के विवाह की उम्र बढ़ाने को लेकर बने शारदा एक्ट और पिछले कुछ दशकों से स्त्री के घरेलू उत्पीड़न, बलात्कार और उसकी अपनी देह पर स्वतंत्रता को लेकर उठी आवाजों में एक निरंतरता है। उसकी 'देवी' और 'दासी' की छवि टूटी और 'इन्सान' की छवि बनी है। फिर भी मीडिया की भिन्न किस्म की स्त्री-छवियां स्त्री मानसिकता को ज्यादा प्रभावित कर रही हैं, जो चिंताजनक है।

टीवी का माध्यम काफी सशक्त है। खासकर दोपहर या रात में करोड़ों की संख्या में स्त्रियां धारावाहिक देखती हैं। एक समय हर घर में 'सास भी कभी बहू थी', 'न आना इस देश मेरी लाडो', 'उतरन' जैसे स्त्री-आधारित कई सीरियल बने थे। इन दिनों भी संख्या कम नहीं है। ऐसे सभी सीरियल स्त्री-विमर्श का एक भिन्न चेहरा लेकर आते हैं। इन सभी में सामान्य बात यह है कि इनमें स्त्री का कठोर, क्रूर और षडयंत्रकारी रूप ज्यादा दिखाया जाता है, जो आमतौर पर सामाजिक वास्तविकता के विरुद्ध है। ऐसे धारावाहिकों में मर्द दबे-दबे रहते हैं और स्त्रियां 'विलेन' होती हैं। 'बालिका वधू' में बाल विवाह का महिमामंडन किया गया था। पूरा घर तेज-तर्रार दादी-सा के कठोर इशारे पर चलता था। राजस्थानी परिवार में कोई स्त्री इतनी ताकतवर, कठोर और क्रूर हो सकती है, यह स्वीकार नहीं किया जा सकता। विडंबना यह है कि ऐसे सीरियल देखने में स्त्रियों को ज्यादा मजा आता है।

हमारे देश में स्त्रियों पर जो भी सामंती अत्याचार हो रहे हैं, उनका चेहरा पुरुष के बिना पूरा नहीं होता। स्त्री के जीवन में आज भी कष्टों और आंतरिक दुखों में कमी नहीं आई है। इसके लिए पितृसत्ता, पुरुष प्रभुत्ववाद और धार्मिक कूपमंडूकता किस हद तक जिम्मेदार है, यह मीडिया नहीं दिखाता, क्योंकि खुद मीडिया पुरुष तंत्र के कब्जे में है। इसलिए आमतौर पर यही पुरानी सोच प्रदर्शित की जाती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन है। मुश्किल है कि पढ़ी-लिखी स्त्रियों को भी वे ही धारावाहिक पसंद हैं, जिनमें पुरुष-प्रभुत्ववाद को चुनौती की जगह स्त्री-प्रभुत्व का नकली रूप दिखाया जाता है। इन धारावाहिकों की स्त्रियां कैकेयी और मंथरा की परंपरा से हजारों कदम आगे होती हैं। इन्हें षडयंत्रकारी के रूप में

दिखाया जाता है। कहीं भले कह दिया जाता हो, 'इस दृश्य का उद्देश्य मनोरंजन है, अंधविश्वास या सामाजिक रीति का प्रचार करना नहीं' या इसका किसी इतिहास और घटना से कुछ लेना-देना नहीं है।' आजकल के प्रचार कुछ ऐसे ही होते हैं कि पहले किसी चीज के प्रति लोभ पैदा कर दिया, फिर इतने छोटे अक्षरों में 'कंडीशन्स एप्लाइ' लिखकर रख दिया कि पढ़ा ही न जाए। इस तरह मीडिया अपनी प्रचंड ताकत के बल पर लोगों को बड़े पैमाने पर गुमराह कर रहा है और उनकी सोच को नियंत्रित कर रहा है।

इधर के स्त्री-केंद्रित सीरियलों की एक और खूबी यह है कि इनमें स्थानीय परिवेश तामझाम से भरी सेटिंग के साथ आता है। इनमें कई बार लोक भाषाओं का भी प्रयोग होता है, मानो हिंदी को पीछे ठेल कर हरियाणवी, राजस्थानी, भोजपुरी राष्ट्रीय नक्शे पर फिर से उभर रही हो। यह और कुछ नहीं इन लोकभाषाओं के प्रति सहज प्रेम का व्यावसायिक शोषण है। पहनावे और घर के दृश्यबंध में भी स्थानीय लोकसंस्कृति की छवियां होती हैं। इन धारावाहिकों की कथा आमतौर पर ऊँचे और अमीर खानदानों की होती हैं। इनका आम जिंदगी से कोई लेना-देना नहीं होता। ऐसे सीरियल भारत की सड़ी-गली रूढ़ियों से लड़ते नहीं हैं, बल्कि इन्हें चमका कर बेचते हैं।

यह पुरानी पुरुष प्रभुत्ववादी सोच है कि स्त्री ही स्त्री को दबाती है। भारतीय जीवन का आज भी यह आम दृश्य है कि स्त्री बचपन में कुछ स्वतंत्र होती है या एकदम तब जब वह पत्नी के रूप में लंबी यातना झेलने के बाद खुद पितृसत्ता के संस्कारों में ढलकर एक दिन सास बन जाती है।

स्त्री का पुरुष के कई शक्ति-क्षेत्रों में प्रवेश आज भी अवरोधों से भरा है, बंधन थोड़े शिथिल भले हुए हों। मसलन उच्च पद, खेल-कूद, व्यापारिक नेतृत्व और राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश को लेकर झिझक मिटी नहीं है। ये कभी पुरुष के सुरक्षित क्षेत्र थे, पर अब स्त्रियों के लिए भी धीरे-धीरे खुल रहे हैं। फिर भी इन क्षेत्रों पर पुरुष वर्चस्व कायम है और स्त्रियों को काम के दौरान अनगिनत समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

राष्ट्रवादी आंदोलन के दिनों में स्त्री का जो बिंक बन रहा था, वह महादेवी वर्मा के शब्दों में यह था, 'आंसू का तन, विद्युत का मन, प्राणों में वरदानों का प्रण।' सैकड़ों साल से रोती आ रही स्त्रियों के मन में विद्युत गरजने लगी थी। उनके जीवन में मुक्ति का नगाड़ा बजने लगा था। हजारों साल की अभिशप्त जिंदगी से स्त्री निजात पाए, इसके लिए जरूरी था कि पुरुष मानसिकता में बदलाव आए। स्त्रियां पुरुष-एकाधिकार के क्षेत्रों में प्रवेश करें। 19वीं सदी में स्त्री शिक्षा एवं सुधार के लिए आंदोलन हुए उनमें निश्चय ही पुरुषों की एक बड़ी भूमिका थी। आज भी नौजवान पुरुष तहेदिल से स्त्रियों के आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता के पक्ष में हैं, पर स्त्रियों के आत्मसम्मान और स्वतंत्रता का प्रश्न सदैव उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता से जुड़ा हुआ है। समाज में वे स्त्रियां ज्यादा आत्मसम्मान के साथ जीती हैं, जिनके पास जेवरात न हों, पर भू-संपत्ति का मालिकाना हो। एक बिंदु पर 'स्त्री-पुरुष परस्पर निर्भरता' का प्रश्न 'स्त्री-पुरुष बराबरी' से जुड़ जाता है और यह 'स्त्री के भू-संपत्ति पर अधिकार', 'स्त्री के अपनी देह पर अधिकार' से भी जुड़ता है।

आज क्या टीवी धारावाहिक और क्या अखबार के पन्ने, ये हर जगह भजन-कीर्तन, पूजा-पाठ और धार्मिक पाखंड का प्रचार करते दिखाई देते हैं। दूसरी तरफ फैशन, ज्वेलरी और लुभावने उपभोक्ता सामानों का भी कई तरह से प्रचार होता है, मानो स्त्रियों की पसंद महज ये ही चीजें हैं। टीवी के विज्ञापनों में स्त्रियां मानो डियो, साबुन-तेल, जेवरों और कारों की ही दिवानी हों। विज्ञापनों के स्त्री बिंब भ्रामक हैं। ये सब स्त्रियों के मानसिक नियंत्रण की बाजारवादी परियोजनाएं हैं। स्त्रियों को जितना धार्मिक पाखंडों और कट्टरताओं से सावधान रहने की जरूरत है, उतना ही बाजार के रंगीन प्रलोभनों से भी, क्योंकि बुनियादी सवाल यह है कि स्त्री किस तरह अपने को 'विवेकवान व्यक्ति' समझे। अपनी इच्छाओं का महत्व जाने और अपने स्वत्व' को पहचाने।

सन्त पुरुष

आचार्य महाश्रमण

जो अन्तर में ही रमण करे, वह सन्त पुरुष कहलाता है।
जो भीतर में ही भ्रमण करे, वह सन्त पुरुष कहलाता है।।

कथनी-करनी जिसकी सम हो, भावों में मृदुता उपशम हो।
अनमोला अवसर आने पर, जो बलिदानी बन जाता है।।1।।

जो अप्रतिबद्ध विहारी हो, निष्काम साधनाकारी हो।
जो सतत सहजता में रहता, छलना जिसको न सुहाता है।।2।।

निन्दा हो चाहे स्तवना हो, जीना हो चाहे मरना हो।
सुख-दुख की सारी स्थितियों में, जो स्थितप्रज्ञ बन जाता है।।3।।

संयम-पोषण के खातिर ही, साधक का खाना-पीना है।
रसना-भगिनी को वश में कर, जो स्वाद-विजय कर पाता है।।4।।

चिन्तन में जिसके समता हो, वाणी में मृदुल मधुरता हो।
आचरणों में संयम झलके, वह श्रद्धास्पद बन जाता है।।5।।

लय : जिसके दिल में हरि नाम ....

बंगला कहानी

तिलोत्तमा

वनफूल
(अनुवाद : डॉ. पी के मुखोपाध्याय)

1.

हर एक के जीवन में कभी-कभी ऐसा एक नाटकीय क्षण आ जाता है कि एकाएक सब हिसाब-किताब, पूरा आयोजन तुरंत बदल जाता है। उत्तर की ओर बहनेवाली नदी सहसा दक्षिण की ओर बहने लगती है, अत्यंत ऊँचा पर्वत अकस्मात गहरे गड्ढे में परिणत हो जाता है। आम आदमी के जीवन में ही ऐसा होता है। इसके लिए राम या रावण बनने की जरूरत नहीं होती।

नकुल नंदी सामान्य व्यक्ति हैं, उनका पुत्र गोकुल भी असाधारण नहीं है। अन्य लोगों की तरह वह भी बी.ए. पास करने के बाद इधर-उधर गपशप कर नुक्कड़ नाटकों में अभिनय, राजनीति अथवा साहित्य में सर खपाते हुए एक प्रकार से बेतरतीब और बेढंगा जीवन जी रहा था। और लोगों की तरह गोकुल के विवाह की बातचीत भी चलने लगी। विवाह के बाजार में गोकुल अच्छा लड़का था। शहर में उसका एक-तीन तल्ले का मकान है। उसके पिता का तिजारती काम-काज चल रहा है। उसके ममहर में उसकी सम्पत्ति है, अतः कभी भी गोकुल को पेट भरने के लिए नौकरी पर निर्भर नहीं करना पड़ेगा। भगवान ने उसे जो कुछ दिया है, उससे वह सारी जिंदगी सुख-चैन से काटते हुए शौकिया नाटकों में रिजिया का किरदार निभाकर नाट्यकला के उत्कर्ष में योगदान दे सकता है।

विवाह के लिए देखने-सुनने का काम शुरू हो गया। पिता नकुल नंदी अनुभवी व्यक्ति थे। कुंडली, वंश, लड़की का रूप, दहेज की राशि आदि सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद नंदी महाशय ने जिस लड़की को पसंद किया उसका नाम था तिलु - अच्छा नाम तिलोत्तमा। नंदी महाशय पुराने खयालात के आदमी थे, अतः वे पुत्र को न भेजकर स्वयं लड़की देखने गए और उसे पसंद किया। नाम सुनकर गोकुल खिल उठा। मन ही मन वह

जो चित्र अंकित करने लगा- काव्य की तिलोत्तमा उसके सामने बिलकुल ठहर नहीं पाती थी।

2.

लेकिन शुभदृष्टि (सगाई) के समय वह घबड़ा गया। तिलोत्तमा ही है वह। तिल की तरह काली-कलूटी एवं गोल। छोटी-छोटी आँखों में सकुचाई दृष्टि। विवाह के समय मुँह से निसृत उलूध्वनि, शंखध्वनि, कोलाहलध्वनि, परिवेश की ध्वनि आदि ध्वनियों के बीच उसे ही विवश होकर पत्नी के रूप में ग्रहण करना पड़ा। उपाय नहीं था, लेकिन वह घबड़ा तो गया ही।

पिता नकुल नंदी भी घबड़ा गए। उन्होंने समधी को जैसा सीधा-सादा आदमी समझा था, असल में वे वैसे थे नहीं। वे हाथ बाँधे खड़े हुए दिखावटी हँसी हँस रहे थे, लेकिन एक भी वादा उन्होंने नहीं निभाया। नकद पाँच सौ रुपये के दहेज की राशि उन्होंने कम दी थी और कह रहे थे कि सब जुगाड़ नहीं कर सके - बाकी रुपये बाद में दे देंगे। दान के रूप में जो सामग्री दी थी वह भी बहुत घटिया थी। चोली का रंग धूमिल हो रहा था। रिस्टवाच नहीं दी गई थी - कहा गया कि कोलकाता में ऑर्डर दिया गया है - अभी तक आया नहीं है। अंगूठी भी सोने की थी या नहीं - इसमें संदेह था - देखने में पीतल जैसी लग रही थी। क्या उन्होंने एक धोखेबाज को समधी बना लिया? विवाह के पूर्व उन्होंने जो चीज मांगी थी, उस आदमी ने हाथ जोड़ते हुए वही देने के लिए सम्मत होकर सर हिलाया था। हालाँकि उनकी मांग जरूर कुछ अधिक थी, लेकिन अधिक रुपया न मिलने की हालत में वे उस कुरूपा-भोंदी और मोटी लड़की को कैसे अपनी बहू के रूप में स्वीकार करते। हर वस्तु का एक हिसाब तो होता है न? परंतु यह क्या हादसा? उस अति विनयी व्यक्ति से इस तरह के आचरण की उम्मीद नहीं थी। घर में भी उन्हें खरी-खोटी सुननी पड़ी। गोकुल की माँ ऊँची आवाज में यही बात बार-बार कह रही थी कि नकुल का दिमाग खराब हो गया है - नहीं तो अपने पुत्र के लिए कोई जान-बूझकर ऐसी प्रेतनी बहू-बनाकर कैसे ले आता?

छि - छि - छि! नकुल को यह झूठ कहकर राहत मिली कि - "उसने मुझे लड़की नहीं दिखाया था। मैंने जो लड़की देखी थी वह गौरवर्ण थी, उसके केशपाश बड़े और लम्बे थे, उसके मुखमंडल और उसकी आँखें भी सुंदर और आकर्षक थीं। चोर और गद्दार है वह। मैं दुबारा लड़के की शादी करवाऊँगा। सभी ने इसपर हामी भरी, यहाँ तक कि गोकुल ने भी।

3.

हालाँकि तिलोत्तमा से मेल-मिलाप हुआ तो ऐंक बात गोकुल ने समझी कि तिलु बहुत सीधी-सादी लड़की है। मुक्तकेशी बैगन की तरह उसके मुखमंडल में मानो सरलता लिपटी हुई है। वह बहुत शर्मीली भी है। कई बार अनुनय करने के बाद वह उससे बातचीत कर सका। बातचीत के बाद वह अवाक हो गया। उसके पिताजी को गाली-गलौज की, लेकिन उसकी थोड़ी-सी भी आँच उस पर नहीं पड़ी। सबेरे सूर्य उगने पर अथवा बरसात के मौसम में बारिश होने पर वह विस्मित या विचलित नहीं होती। इस मामले में भी उसकी मनोदशा वैसी ही थी। उसका नजरिया यह था कि विवाह के मामले में ऐसी घटना तो होती ही रहती है। इसमें अचरज या दुखी होने जैसी कोई बात नहीं है।

नकुल नंदी ने उसके बारे में जो झूठी बात कही थी - चाहने पर वह उसका प्रतिवाद कर सकती थी लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह संकोचवश चुपचाप रही। गोकुल को पति के रूप पाकर वह कृतार्थ हो गई है - अकारण वाद-प्रतिवाद करने की जरूरत ही क्या है? वह हर पल यह महसूस कर रही है कि वह गोकुल के

लिए अनुपयुक्त एवं अनाधिकारी होने पर भी भाग्य से उसने सुख-स्वर्ग में प्रवेश किया है। शोरगुल भूलकर वह इस आनंदलोक से निर्वासित नहीं होना चाहती है।

गोकुल ने कहा - 'बाबूजी - माँ कह रही हैं - मेरी दूसरी शादी करवाएँगे।"

तिलु मौन रही।

"जवाब नहीं दे रही हो।"

"ठीक है। हिन्दू के घर में तो ऐसा होता ही रहता है।"

"तुम्हें कष्ट नहीं होगा।"

"मुझे? नहीं।"

कुछ देर चुप रहकर वह बोली - "होने पर भी यदि तुम इससे सुखी रह सको तो वह कष्ट मैं सह लूंगी। गोकुल को लगा कि यह उसका अभिमान है। लेकिन उसने कुछ कहा नहीं।

4

एक साल गुजर गया।

तिलु से मोहमुक्त होने के लिए एक साल का समय पर्याप्त था। वह न तो लिखना-पढ़ना जानती है और न तो उसे गाना या बजाना आता है। उसका न तो रूप है और न ही गुण। एक ही गुण है उसका - वह भैंस की तरह खट सकती है। ढेर सारे बर्तन मलती रहती है, बहुत सारे कपड़ों को धोती है - किसी तरफ ध्यान नहीं देती है। माँ उसे रसोईघर में आने नहीं देती है, वह बाहरी काम में व्यस्त रहती है और उसमें ही डूबी रहती है। आसमान में चाँद उगा या नहीं, बकुल वन में पापिया की गूँज सुनाई पड़ रही है या नहीं - इन सभी बातों की खोज खबर रखना उसके वश की बात नहीं है।

नाटक का कलाकार कवि - प्रकृति का गोकुल गुमसुम हो गया और अंततः वह निराश होकर जड़वत हो गया। एक नौकरानी के साथ कब तक प्रेम किया जा सकता है? अभी भी पिताजी समधियों के समुदाय से रुष्ट हैं लेकिन दूसरी बार विवाह करवाने की बात उन्होंने भी नहीं छेड़ी है। गोकुल के लिए भी यह मुश्किल था कि वह स्वतः यह बात खोलकर करे। इसी समय विधाता ने उसका साथ दिया।

5

'चन्द्रगुप्त' नाटक का मंचन होनेवाला था। सेलुकस एवं एन्टिगोनस की भूमिका में अभिनय करनेवाले व्यक्ति मिल गए हैं लेकिन उनका पोशाक मिल नहीं पा रहा है। ग्रीक पोशाक खरीदने के लिए गोकुल कोलकाता जा रहा था। स्टेशन में टिकट काटते समय उसने देखा कि एक विधवा प्रौढ़ा भीड़ में बड़ी परेशान हैं। अपनी पोटली और कपड़े-लत्ते सम्हालकर वह किसी भी तरह टिकट नहीं ले पा रही है। चारों तरफ लोग उन्हें धकेल रहे थे और वह पीछे खिसकती जा रही थी। गोकुल ने उनकी मदद की। उनके लिए टिकट खरीदकर ला दिया। वे भी कोलकाता ही जा रही थी। उनके साथ कोई पुरुष अभिभावक नहीं था, अतः गोकुल को ही उनके देखभाल की जिम्मेदारी लेनी पड़ी। गोकुल की बोगी में ही वह चढ़ीं। गोकुल ने तकलीफ उठाकर, यहाँ तक कि एक यात्री से लड़-झगड़कर उनके सोने की व्यवस्था कर दी। प्रौढ़ा खुशी से गदगद हो गई।

कमरा क्रमशः खाली होते ही प्रौढ़ा ने पोटली से पान निकालकर गोकुल को एक पान दिया और खुद भी खाई। फिर एक चाँदी के कटोरे से कुछ जर्दा भी निकाली। गोकुल ने नहीं लिया - आदत नहीं थी। प्रौढ़ा मुस्कुराती हुई अपने मुँह में थोड़ा सा डालकर कहा - कपार जब जल ही गया तो एक-एक कर सबको छोड़ना पड़ा - सिर्फ इसे ही नहीं छोड़ नहीं पाई बेटा!

वह मुस्कुराती हुई खिड़की से मुँह निकालकर पीक फेंकी।

संवाद शुरू हो गया।

बहुत देर तक बातचीत चली। लम्बी बातचीत के दौरान प्रौढ़ा ने गोकुल का हाल-चाल विस्तृत रूप से जान लिया। गोकुल ने भी खुले मन से सारी बातें कह दी - कुछ भी नहीं छिपाया - छिपा नहीं सका। यहाँ तक कि छिपाने की जरूरत भी नहीं समझी। अर्थात गोकुल भी खुश था। सब कुछ सुनकर प्रौढ़ा ने कहा - "तुम जो फिर से शादी करने की बात कह रहे हो तो क्या कोई पसंदीदा लड़की है?"

अभी तक नहीं।

और एक खिल्ली पान और जर्दा मुँह में डालकर प्रौढ़ा ने कहा "देखो बेटा! तब मैं सारी बातें खुलकर ही कहूँ। मेरी एक लड़की है, उस लड़की के जन्म के बाद ही मेरा कपाल जल गया। मैं मन के मुताबिक एक लड़का ढूँढ रही हूँ। तुम तो हमारी जाति के ही हो। मुझे तुम बहुत पसंद हो - मेरी बेटी भी खोटी नहीं है - यदि कहो तो —"

गोकुल ने यह उम्मीद नहीं की थी। उसे यह समझ नहीं आया कि वह क्या कहे?

"ऊषा को तुम पहले देखो तो सही। तुम्हें अगर पसंद हो तो ...."

झुंझलाते हुए गोकुल ने कहा - "मेरी पत्नी है - यह जानने के बाद आपकी बेटी संभवत: मना करेंगी।

"मेरी बात वह किसी भी हालत में नहीं नकारेगी। वैसी लड़की ही नहीं है वह। मैंने उसे पढ़ाया-लिखाया है, गाना-बजाना भी सिखाया है - लेकिन आजकल की लड़कियों की तरह वह अवज्ञाकारी एवं दुर्विनीत नहीं है और एक पत्नी रहने से भी फर्क क्या पड़ेगा? इसके अलावा जब तुम दुबारा शादी कर ही रहे हो तो तुमने जरूर उसे त्यागने का निश्चय कर ही लिया होगा - कहो, मैं ठीक तो कह रही हूँ न?

"हाँ, सो तो ठीक ही है।"

"फिर उस स्त्री का रहना या न रहना कोई मतलब नहीं रखता है – तुम्हारा क्या कहना है?

हाँ, सो तो ठीक ही है।

6.

ऊषा - ऊषा नहीं है - मध्याह्न है। प्रखर धूप के ताप से प्रदीप्त स्वर्णकान्ति उसके सर्वांग में झलक रही है। नेत्र - मुखमंडल- बोलचाल - कटाक्ष में मानो बिजली दौड़ रही है। सितार पर वैसा गौड़सारंग का आलाप गोकुल ने पहले कभी नहीं सुना था, उसकी हँसी की हर अदा से जो सजीवता मुखर हो रही थी वह उसके लिए कल्पनातीत थी।

गोकुल अपना आपा खो बैठा।

7.

एक महीने के भीतर लगभग सब ठीक हो गया। ऊषा के साथ ऊषा की माँ आ गई और गोकुल के घर के पास एक मकान किराये पर लेकर गोकुल के पिता-माता से विवाह संबंधी बातचीत शुरू कर दी। ऊषा को देखकर गोकुल की माँ न केवल बहुत खुश हुई बल्कि अपार आनन्द के अतिरेक में विगलित हो गई। गोकुल के पिताजी भी रुपये की राशि देखकर विभोर हो उठे। इसके साथ विवाह होने पर नकद दस हजार रुपये, अढेल गहने मिलेंगे और एक छोटी-सी जमींदारी भी हासिल होगी। लोग कहते हैं ऊषा की माँ पर एक कलंक का धब्बा है और इसी वजह से उनकी लड़की की शादी नहीं हो पा रही थी। इस बात की जानकारी मिलने पर भी नकुल नंदी विचलित नहीं हुए। उन्होंने इस बात को

नजरअंदाज तो किया ही, साथ ही घर के लोगों से इसका जिक्र भी नहीं किया ताकि विवाह टूट न जाए। यौवनकाल में कभी-कभार पैर फिसल ही जाते हैं। इसको लेकर सर खपाने की आवश्यकता नहीं है - यही उनकी युक्ति थी। लेकिन ऊषा ने एक शर्त रखी और उस शर्त को भी गोकुल, गोकुल की माँ, उसके पिता ने मान लिया। वह शर्त यह थी कि विवाह के बाद तिलोत्तमा को सदा के लिए अपने पीहर चला जाना पड़ेगा।

8

आधी रात का समय।

गोकुल को नींद नहीं आ रही थी और वह बिछावन पर यों ही जगा हुआ लेटा था। कल सबेरे ऊषा की माँ उसे आशीर्वाद करेंगी। अरे, तिलोत्तमा तो अभी तक नहीं आई। इतना कांड हो गया, लेकिन तिलोत्तमा कुछ भी नहीं बोली। उससे एक बार पूछना मेरा कर्तव्य है। गोकुल बिछावन पर कभी इधर तो कभी उधर रेंग रहा था। तिलोत्तमा हर काम पूरा करने के बाद बहुत रात में सोने आँती है और सबेरे होते ही चली जाती है। उससे मिलना मुश्किल है। पिछले बीस-पच्चीस दिन में उसके साथ एकांत में वह मिल नहीं पाया है। इस संबंध में उससे चर्चा भी नहीं हो सकी है। एक बार पूछना तो उचित ही होगा। गोकुल बाट जोहने लगा।

एकाएक उसकी नींद खुल गई। उसने देखा कि तिलोत्तमा ससंकोच उठकर जा रही है। सबेरा हो गया है।

- सुनो, सुनो।

- क्या?

- आज आशीर्वाद है - याद है न?

- है।

देखो, इसमें तुम्हें कोई एतराज तो नहीं है?

- नहीं।

- विवाह के बाद तुम्हें पीहर भेजने की बात भी चल रही है - सुनी हो न यह बात?

- सुनी हूँ। चली जाऊँगी। तुम यदि कभी-कभी वहाँ आ सको तो वही मेरे लिए भरोसे की बात होगी। मैं जाऊँ? बहुत काम बाकी पड़ा है।

वह चली गई।

गोकुल कुछ देर गुमशुम सोया रहा। फिर उठकर बैठ गया और उसके बाद बिछावन से उतरकर खिड़की के पास खड़ा हो गया। उसने देखा कि तिलोत्तमा राख के ढेर में बैठकर बर्तन मल रही है।

9.

आशीर्वाद की सामग्री लेकर ऊषा की माँ पहुँच गई। वे बहुत सारी सामग्री और एक फूल की माला भी लाई थीं। मुस्कुराती हुई वह कही कि ऊषा ने सारी रात बैठकर अपने हाथों से यह माला गुँथी है।

गोकुल नहाकर आ गया। कार्पेट का आसन बिछाया गया। माला पहनकर गोकुल ज्योंही आसन पर बैठने जा रहा था, उसकी माँ ने कहा - "शंख कौन बजाएगा? मेरे ओठ पर एक घाव हो गया है। बहू, तुम कहाँ हो? शंख बजाओ।

शंख हाथ में लेकर तिलोत्तमा संकोच के साथ दरवाजे के पास आकर खड़ी हो गई।

शंख बजते ही गोकुल के पैर के नाखून से सर के बाल तक मानो बिजली की लहर दौड़ गई। अकस्मात बिजली गिरने के समान सबकुछ जैसे छिन्न-भिन्न हो गया। दोनों हाथ से गले की माला को तोड़कर वह दौड़ता हुआ अपने कमरे में चला गया।

छमा बड़न को चाहिए

ग्वालियर के स्वर्गीय महाराज माधवरावजी बड़े उदार प्रजापालक नरेश थे। एक बार आश्विन मास में प्रातःकाल महाराज एक साधारण पोशाक पहन, मोटरसाइकिल पर सवार हो, सीपरी से लश्कर के लिए चले। काम आवश्यक था। मोटरसाइकिल तीव्र वेग से सड़क पर दौड़ रही थी। लगभग आधा मार्ग तय हुआ होगा कि अचानक गाड़ी का कोई पुर्जा बिगड़ गया। महाराज को लिए वह गाड़ी एक ताल में घुस गई। पानी के संयोग से गाड़ी में ऐसी खराबी आ गई कि वह फिर चलने योग्य न रह गई। महाराज भी भींग गए थे। जैसे तैसे वे गाड़ी को खींचकर सड़क पर लाए। उसे एक आम्र वृक्ष के सहारे खड़ी कर उन्होंने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई तो कुछ दूरी पर एक किसान हल चलाता दिख पड़ा। भींगे कपड़ों में थरथराते हुए महाराज उस किसान के पास पहुँचे।

महाराज - तुम्हारा क्या नाम है?

किसान - मैकू।

महाराज - किस जाति के हो?

किसान - चौधरी।

महाराज - किस गाँव में रहते हो?

किसान - मतिरामपुरा में।

महाराज - सुनो, मैकू चौधरी। मैं एक आवश्यक काम से सीपरी से लश्कर जा रहा था।

किसान - तो जाते क्यों नहीं?

महाराज - जाऊँ कैसे? मेरी मोटरसाइकिल बिगड़ गई और तालाब में घुस गई।

किसान - मैंने भी देखा था कि एक फटफटिया अभी इस ताल में घुस गई थी।

महाराज - हाँ उसी फटफटिया का एक पुर्जा बिगड़ गया है। गाड़ी अब बेकार हो गई है। अतः उसे आम्रवृक्ष के सहारे खड़ी कर आया हूँ।

किसान - फटफटिया तो वैसे भी एक बेकार चीज है। मैं तो उसे मुफ्त भी न लूँ।

महाराज - सच कहते हो, चौधरी। मोटरसाइकिल की सवारी एकदम व्यर्थ है। अच्छा, अब एक काम करो।

किसान - एक काम कर तो रहा हूँ। हल चला रहा हूँ।

महाराज - हल चलाना बंद कर दो। गाँव जाकर एक बैलगाड़ी ले आओ। उसपर मोटरसाइकिल रख लो, मुझे भी बैठा लो और लश्कर चलो। इनाम मिलेगा।

किसान - खूब कही। 'मुझे दे सूप, तू हाथों फूंक'। अपना इनाम अपने पास रखिए। मुझे फुरसत नहीं।

महाराज - पाँच रुपया इनाम मिलेगा।

किसान - पाँच क्या, पचास दीजिए, तब भी कोई किसान का बच्चा आश्विन की जोत छोड़कर गाड़ी लिए नहीं फिरेगा।

महाराज - नहीं चलोगे?

किसान - ना ना ना।

महाराज - मैं तुम्हारी शिकायत महाराज से करूँगा।

किसान - वे अपने घर के राजा, हम अपने घर के राजा।

महाराज - मैं महाराज का सेनापति हूँ।

किसान - आप चाहें जो कुछ हों, मैं जोत छोड़कर कहीं नहीं जा सकता।

महाराज - मैं गोली मार दूँगा।

किसान - यदि आज मेरा कागज फट गया होगा (मृत्यु का समय आ पहुँचा होगा) तो आप अवश्य गोली मार देंगे। नहीं तो कौन है मारनेवाला? अब जाइए, मेरे बैल बिचकते हैं।

महाराज - इसके लिए तुम पछताओगे।

किसान - पछताता वह है, जो हाथ का काम छोड़ इधर-उधर भटकता है।

तब तक महाराज ने देखा कि एक मोटर लश्कर की ओर से आ रही है। वे लपककर सड़कपर जा पहुँचे। महाराज को देखकर मोटर रोक दी गई। उस मोटर पर एक सरकारी अधिकारी सवार थे, जो महाराज से मिलने सीपरी जा रहे थे। मोटरसाइकिल मोटर पर रख ली गई। महाराज भी सवार हुए। मोटर फिर लश्कर की ओर चल दी। मार्ग में महाराज ने अपनी नोटबुक निकाली और मैकू का नाम, जाति और गाँव लिख लिया। इसके बाद महाराज ने उन अधिकारी से किसानवाला सारा किस्सा कह सुनाया। दोनों हँसने लगे।

लश्कर की रंग-पंचमी प्रसिद्ध थी। चैत्र के महीने में होली के पश्चात पंचमी के दिन लश्कर के राजमहल में एक उत्सव होता था। महल की दक्षिण दिशा में शामियाने खड़े किए जाते थे। पक्के कुण्डों में गुलाबी रंग घोला जाता था। उस दिन महाराज दरबारी अधिकारियों और प्रजा के साथ होली खेलते थे। रबड़ के पम्प द्वारा ऐसा रंग बरसाया जाता था कि हाथों-हाथ नहीं सूझता। लोग गिर-गिर पड़ते थे। शामियाने में कीच हो जाती थी। वहाँ पर सब लोग सफेद कपड़े पहनकर आते थे। कोई रोक-टोक उस दिन न थी। उस दिन किसान लोग भी तमाशा देखने आया करते थे। रंग से सराबोर महाराज की दृष्टि मैकू चौधरी पर पड़ी। वह अपने साथियों के साथ एक ओर खड़ा रंग-लीला देख रहा था। महाराज ने उसे अपने पास बुलाया। मैकू ने जो ध्यानपूर्वक देखा तो पहचाना कि उस दिन बैलगाड़ी माँगनेवाले स्वयं महाराज ही थे। वह महाराज के चरणों पर गिर पड़ा और बोला - 'हाय! उस दिन मैंने अपने मालिक को नहीं पहचाना, मेरा अपराध क्षमा किया जाए।' वह डर के मारे काँप रहा था।

महाराज - मैं रुष्ट नहीं हूँ, चौधरी! अपनी ड्यूटी (कर्तव्य) पर अचल देखकर मैं तुमपर प्रसन्न ही हुआ हूँ।

मैकू - महाराज! मैं..... मैं...... वह ठीक से बोल भी न पा रहा था।

महाराज - किसी प्रकार का भय मत करो। आओ, होली खेलो। यह कहकर महाराज ने पम्प उठाया और मैकू चौधरी को रंग दिया। एक मामूली किसान के साथ महाराज होली खेल रहे थे। उसके दुर्व्यवहार का उन्हें कुछ भी ध्यान न था। कोई दूसरा राजा होता तो न मालूम

उस किसान की क्या दशा करता।

महाराज - क्यों चौधरी ! कितनी जमीन है तुम्हारे पास ?

मैकू - तीस बीघा है, मालिक।

महाराज - लगान क्या लगता है ?

मैकू - डेढ़ सौ रुपया सालाना लगता है सरकार।

महाराज - बहुत लगान है। तुमने उस दिन कहा था कि अपने घर के राजा हम भी हैं। अतः आज मैं तुमको अपने घर का राजा बनाए देता हूँ। आज से सारा लगान माफ।

मैकू चरणों पर गिर पड़ा। महाराज ने उसे छाती से लगा लिया।

ध्यातव्य है कि यह पुरस्कार महाराज के मान पर नहीं, अपमान पर दिया गया था।

न्याय की मर्यादा

बहुत पहले की बात है, दिल्ली का बादशाह गयासुद्दीन वाण से निशाना मारने का अभ्यास कर रहा था। अचानक एक वाण लक्ष्य से भटक गया और एक बालक को लगा। बेचारा बालक वाण लगने से वहीं ढेर हो गया। बालक की माता दिल्ली के प्रधान काजी सिराजुद्दीन के पास रोती हुई गई। काजी ने उसे दूसरे दिन न्यायालय में उपस्थित होने को कह दिया।

न्यायनिष्ठ काजी ने बादशाह के पास संदेश भेज दिया कि उनके विरुद्ध हत्या का अभियोग है, अतः वे न्यायालय में उपस्थित रहें। सुलतान गयासुद्दीन साधारण वेश में अदालत में उपस्थित हुए। काजी ने उनका कोई सम्मान नहीं किया, उलटे उन्हें साधारण अपराधी की भाँति खड़े रहने का आदेश दिया। सुलतान भी शांत खड़े रहे। उन्होंने अपना अपराध स्वीकार किया। बालक की माता से माफी माँगी और उसे बहुत-सा धन देने का वचन दिया। बालक की माता से राजीनामा लिखवाकर सुलतान ने काजी को दिया।

यह सब हो जाने पर काजी न्यायासन से उठे और आगे आकर उन्होंने झुककर सुलतान को सलाम किया। बादशाह ने अपने वस्त्र में छिपी एक छोटी तलवार निकालकर दिखाते हुए कहा - 'काजी साहब ! आपकी आज्ञा से न्याय का सम्मान करने मैं आज अदालत में आया था। अच्छा हुआ कि आपने न्यायालय की मर्यादा रखी। यदि मैं देखता कि आप न्याय से तनिक भी विचलित हो रहे हैं तो यह तलवार आज आपका गर्दन उड़ा देती।'

काजी सिराजुद्दीन ने अब पीछे घूमकर अपने न्यायासन के पास से रखा हुआ अपना बेंत उठाया। वे बोले - 'जहाँपनाह ! अच्छा हुआ कि आपने न्यायालय का ठीक सम्मान किया और अपराध स्वीकार कर लिया, अन्यथा यदि आप तनिक भी हीला-हवाला करते तो यह बेंत आज आपकी चमड़ी उधेड़ देता।'

सुलतान इससे बहुत संतुष्ट हुए। वे कह रहे थे - 'मेरे राज्य में ऐसे न्यायाधीश हैं, जो इस बात को समझते हैं कि न्याय सबके लिए समान है, न्याय के नियमों से अधिक कोई श्रेष्ठ नहीं, इसके लिए मैं परमात्मा का आभार मानता हूँ।'

व्यक्ति के स्वास्थ्य का संबंध सिर्फ रोग एवं इलाज से ही नहीं, उसके चिंतन और दैनिक क्रियाकलाप के साथ-साथ बहुत हद तक अंतर के आनन्द एवं आत्मनिरीक्षण पर भी निर्भर करता है। इस दिशा में तेरापंथ द्वारा प्रस्तुत प्रेक्षाध्यान एक अद्यतन उपलब्धि है।

स्वास्थ्य, प्रसन्नता और प्रेक्षा

मुनि किशनलाल

बालक के प्रसन्न चेहरे में परमात्मा के दर्शन होते हैं। यह वाक्य जहां प्रसन्नता की महत्ता को दिग्दर्शित करता है, वहां परमात्मा के आनंद स्वरूप की ओर भी संकेत करता है। परमात्मा पद को प्राप्त करने का एक मार्ग है - प्रसन्नता। प्रसन्नता भाव या एक अवस्था है। जो निर्मल अवस्था में आ जाता है वही प्रसन्न होता है। प्रसन्नता का दूसरा अर्थ है - स्वच्छता। प्रसन्न आकाश को निर्मल स्वच्छ आकाश कहा गया है।

व्यक्ति की चेतना आकाश की तरह निर्मल होती है किन्तु व्याधि, आधि, उपाधि से उसमें मलीनता आ जाती है। उसका परिणाम है – अस्वास्थ्य। अस्वास्थ्य के अनेक रूप हैं – शारीरिक, मानसिक, और भावात्मक। अस्वास्थ्य के निवारण से प्रसन्नता को प्रकट करने का अवसर मिलता है।

प्रसन्नता और हर्ष में मौलिक अन्तर है। प्रसन्नता चित्त की निर्मलता है। हर्ष मन का आवेग है। हर्ष का कारण होता है, फिर चाहे वह भौतिक वस्तु हो अथवा अभौतिक हो। घटना और वस्तु के परिवर्तन के साथ चित्त में परिवर्तन होने लगता है। प्रसन्नता में बाह्य वस्तु का सीधा सम्बन्ध नहीं रहता।

आधि, व्याधि एवं उपाधि से उत्पन्न अस्वास्थ्य का निराकरण कैसे किया जाए? जो किसी कारण से उत्पन्न होता है, उसके निवारण से वह दूर हो जाता है। शरीर स्थूल है। उस पर उतरने वाली व्याधि स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। स्थूल रूप से होने वाली व्याधि में मूल रूप से आधि और उपाधि भी निमित्त बनती है। कोई भी अस्वास्थ्य सबसे पहले भावों में, भावों से मन में, और मन से शरीर पर आता है।

स्वास्थ्य की पहली पहचान प्रसन्नता है। प्रसन्नता चित्त की निर्मलता का प्रतीक है। स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जितनी भी परिभाषाएं उपलब्ध हैं उनमें विधायक की अपेक्षा निषेधात्मक अभिव्यक्ति अधिक है। रुग्णता का अभाव स्वास्थ्य नहीं हो सकता। स्वास्थ्य स्वयं की उपस्थिति और अभिव्यक्ति है। वह किसी अभाव की स्थिति नहीं है।

स्वास्थ्य का भाव (अवस्था) स्व (स्वयं) स्थ (ठहराव) अर्थात स्वयं में ठहरना स्वास्थ्य है। 'स्वस्मिन् तिष्ठति इति स्वस्थः, जो अपने आप में ठहरता है, अपने स्वरूप में ठहरता है वह स्वस्थ है। स्वस्थ व्यक्ति ही आनंदित रह सकता है। आनंदित रहने वाला ही स्वस्थ हो सकता है। आनंद ही जीवन की आकांक्षा है, अभीप्सा है और ध्येय है।

स्वास्थ्य केवल शरीर तक ही सीमित नहीं है। स्वास्थ्य जीवन का सर्वांगीण तत्त्व है, जिसे उपलब्ध हुए बिना साध्य को उपलब्ध नहीं हो सकते। शारीरिक स्वास्थ्य वह साधन है जिसकी सीढ़ी पर चढ़कर ही मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य को उपलब्ध किया जा सकता है।

शारीरिक स्वास्थ्य स्थूल तत्त्व है, किन्तु उसके बिना मानसिक स्वास्थ्य कैसे पाया जा सकता है? मानसिक स्वास्थ्य के अभाव में अध्यात्म का अंकुर कैसे प्रस्फुटित हो सकता है। शरीर, मन एवं अध्यात्म तीनों के समन्वय से ही एक आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण होता है। द्वेष, कामेच्छा, विषाद, निराशा केवल मानसिक कठिनाई नहीं हैं, स्नायु दुर्बलता से भी ये हो सकती है। स्नायु दौर्बल्य से ग्रसित व्यक्ति भी इन कठिनाइयों से गुजरता है। इन सबसे मुक्त होने का सरल मार्ग प्रसन्नता है।

प्रसन्नता कोई ऐसी स्थिति नहीं है जो औषधि से प्राप्त की जा सके। प्रसन्नता शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का पुष्प है। प्रसन्नता को प्राप्त करने के लिए शरीर के स्वास्थ्य पर ध्यान देना होता है। शरीर की रुग्णता में प्रसन्नता प्रस्फुटित नहीं हो सकती। प्रसन्नता प्रयास से भी प्रकट नहीं हो सकती। वह अन्तर स्वास्थ्य से विकसित होने वाली सुगन्ध है।

प्रेक्षा चैतन्य की वह शक्तिशाली किरण है जिससे मूर्च्छा से आया आवरण तत्क्षण क्षीण हो जाता है। प्रेक्षा वह पवन है जिससे नीलगगन में मंडराये बादल एक साथ तिरोहित हो जाते हैं। प्रेक्षा वह तीसरा नेत्र है जिससे विकृतियां विलीन हो जाती हैं। केवल समता ही समता शेष रहती है। समता की कोई सीमा नहीं होती। वह असीम है, उसमें जीने वाला भी असीम हो जाता है।

प्रसन्नता को प्रकट होने के लिए जो बाधाएं हैं, उन्हें हटाना आवश्यक है। प्रसन्नता की बाधा बाहर नहीं, भीतर है। अक्सर किसी कठिनाई का कारण स्वयं पर न लेकर दूसरों पर आरोपित कर देते हैं। यह आरोप यथार्थ नहीं है। बाधा, परिस्थितियां अन्तर शक्ति के सामने इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। बाधाओं का कुछ प्रभाव होता है, किन्तु सर्वथा यह मान बैठना कि परिस्थितियां ही ऐसी थीं, यह और निराशा को उत्पन्न करने वाला है। जब अज्ञान के वशीभूत व्यक्ति का दृष्टिकोण मिथ्या हो जाता है तब वह सच्चाई की यात्रा कैसे करेगा।

प्रसन्नता का संपन्नता से कोई गठबन्धन नहीं है। प्रसन्नता का स्वयं अपना अस्तित्व है। वह किसी के होने और न होने से सम्बन्धित नहीं है। प्रसन्नता तो पदार्थ सापेक्ष भी नहीं है वह प्रमुदित भाव से विस्फुटित होने वाला क्षण है। प्रमोद भाव से प्रसन्नता को प्रकट होने का अवसर मिलता है।

पूर्ण प्रसन्नता का अवतरण चित्त की निर्मलता, कषाय की उपशान्ति और राग-द्वेष के विलय से ही हो सकती है। प्रसन्नता प्राप्ति के लिए किसी विधि और व्यवस्था की अपेक्षा नहीं होती। उसे विधि और अविधि से नहीं पाया जा सकता। यह विधि अविधि के पार का क्षण है।

प्रेक्षा स्व का निरीक्षण है। प्रेक्षा आत्मा का अवलोकन है। प्रेक्षा जागरूकता है। प्रेक्षा राग-द्वेष रहित क्षण का अनुभव है। प्रेक्षा निर्मल चेतना की किरण है। प्रेक्षा केवल ज्ञान है, केवल दर्शन है। प्रेक्षा अनावृत्त चैतन्य है। प्रेक्षा साधन है, साध्य है। प्रेक्षा प्रसन्नता है, पवित्रता है।

मातृ-भक्ति के कुछ अनूठे उदाहरण

स्वामी शंकराचार्य अद्वैत-वेदान्ती तथा विरक्त संन्यासी थे। माँ की अंतिम बीमारी के समय वे भारत के उत्तरी छोर पर स्थित बदरिकाश्रम में थे। संदेश मिलते ही वे सुदूर दक्षिण के केरल प्रान्तान्तर्गत स्थित अपनी जन्मभूमि कालडी नामक गाँव की ओर दौड़ पड़े। उन्होंने स्वयं माँ का अंतिम संस्कार किया। इस प्रकार उन्होंने संन्यासाश्रम के नियमों को कुछ समय के लिए भुला-सा दिया। इसके पहले भी उनकी माँ एक बार बीमार पड़ी थीं। शारीरिक निर्बलता के कारण वे नदी-तट तक स्नान करने नहीं जा पाती थीं। संन्यासी शंकर ने उन्हें धीरज बँधाते हुए कहा - 'क्यों चिन्ता करती हो, माँ! अब तक तुम नदी के पास जाती थीं, अब नदी तुम्हारे पास आएगी।' फलस्वरूप उनकी माता के स्नानार्थ एक नहर खोदकर नदी का जल उनके द्वार तक लाया गया। कहा जाता है कि बालक शंकर को जब संन्यास लेने की प्रबल इच्छा हुई तो माँ ने इसके लिए स्वीकृति नहीं दी। शंकर विवश थे। गाड़ी के सामने मानो भारी काठ आ पड़ा था। स्नान करते समय दैवात एक ग्राह ने शंकर को पकड़ लिया। माँ रोते-चिल्लाते, छाती-पीटते दौड़ीं। शंकर ने कहा - 'माँ! यदि तुम संन्यास लेने की आज्ञा दे दो तो सम्भवतः यह ग्राह मुझे छोड़ दे।' माता को कोई उपाय न सूझा, उन्होंने स्वीकृति दे दी और ग्राह ने शंकर को छोड़ दिया। मातृ-भक्त बेटे ने स्नेह-पगी माता को यह आश्वासन देकर घर छोड़ा कि 'मैं संदेश पाते ही तुम्हारी सेवा में आ जाया करूँगा।'

गांधी जी भी उच्च कोटि के मातृ-भक्त थे। विलायत प्रस्थान करते समय बालक गांधी ने माँ को आश्वासन दिया कि 'मैं कभी भी मांस-मदिरा का सेवन नहीं करूँगा।' किंतु लन्दन पहुँचने पर इस प्रतिज्ञा का निर्वाह उनके लिए टेढ़ी खीर बन गया। उस विशाल नगर में शाकाहारी भोजनालय की खोज मानो खारे सागर में मीठे पानी की खोज थी। अब क्या हो? एक अनुभवहीन युवक के सामने भोजन की विकट समस्या मुँह बाए खड़ी थी। माँ का दिया हुआ साग-सत्तू खाकर वचनबद्ध गांधी शाकाहारी भोजनालय की खोज में दिन-रात शहर में

चक्कर लगाने लगे। बड़ी दौड़-धूप के बाद एक ऐसे साधारण भोजनालय का पता चला। डूबते हुए गांधी को मानो तिनके का सहारा मिल गया। मदिरा-पान एक दूसरा पेचीदा प्रश्न था। इंग्लैंड की ठंडी बर्फीली हवाएँ गर्म पेय ढूँढ़ती थीं। ठंडा जल शरीर में थरथरी पैदा कर देता था। मित्रों की सलाह और भी उलझन पैदा करती थी। उनका कहना था कि यहाँ मांस-मदिरा से भागना मौत को निमंत्रण देना है। साधारण युवक भी तो आखिर बालक ही है। कब तक इन चारों ओर से झकझोरने वाली आँधियों का सामना करता। गांधी के पाँव एक बार कुछ डिगे अवश्य, परंतु वे तुरंत सँभल गए और सदा के लिए संभल गए। वे लाखों कष्ट सहते रहे, परंतु माँ को दिए हुए आश्वासन से नहीं डिगे।

सिकन्दर दूसरों के लिए कठोर, परंतु अपनी माता के लिए मोम-सदृश मुलायम था। विश्वविजय का स्वप्न अपने सीने में संजोए सुदूर पूर्व को प्रस्थान करते समय उसने अपनी पैतृक रियासत भैसेडोनिया का शासन एक विश्वसनीय जनरल को सौंप दिया। दुर्भाग्य से इस जनरल का पाला एक ऐसी कट्टर महिला से पड़ा, जिसने अपने जीवन में किसी से दबकर रहना सीखा ही न था, यह सिकन्दर की माँ थी। कभी-कभी उसके झंझटों से राज्य-प्रबन्ध में भारी कठिनाई उपस्थित हो जाती थी। इसका कोई उपाय न देख जनरल ने सिकन्दर को एक शिकायती पत्र लिखा। पत्र पढ़कर सिकन्दर कुछ गम्भीर हुआ, फिर वह हँसकर बोला – Dy. General does not know that one single tear of my mother is able to blot out thousands of his epistles. 'हमारे इस जनरल को पता नहीं है कि मेरी माँ का एक बूँद आँसू उसके हजारों शिकायती पत्रों का गला देने के लिए काफी है।'

नेपोलियन भी अपनी माँ का ऐसा ही भक्त था। राजनीतिक उथल-पुथल और दिन-रात लड़ाइयों की हलचल में भी उसे अपनी बूढ़ी माँ के गिरते हुए स्वास्थ्य की याद सताया करती थी। विषम परिस्थितियों में जब व्यक्तिगत सम्पर्क सम्भव न हो सका, तब उसने विनीत भाव से एक पत्र लिखकर माँ को समझाया – Do take care of yourself mother, if you die, there will be no one left with any authority over me. 'प्यारी माँ! अपने स्वास्थ्य का अवश्य ध्यान रखना। यदि तुम मर गई तो मुझे रोकने-टोकनेवाला कोई नहीं रह जाएगा।' जिस बोनापार्ट की भयंकर मार से क्षत-विक्षत और आहत होकर समस्त यूरोप कराह रहा था, उसे यदि कोई नकेल पहना सकता था तो यह उसकी बूढ़ी माँ ही थी। प्रेमविह्वल नेपोलियन बहुधा कहा करता था – All that I am and was I owe to my mother. 'मैं जो कुछ था या जो कुछ हूँ, अपनी माँ की बदौलत हूँ।

मातृ-भक्ति के न जाने कितने ऐसे अन्य उदाहरण हैं, जो हठात् हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लेते हैं। छत्रपति शिवाजी ने भी अपने-आपको सदा अपनी माँ की देन समझा। माँ उनके लिए दूसरी तुलजा भवानी थी। सम्राट जहाँगीर ने जब जोधाबाई के शव को चिता पर धधकते हुए देखा तो वह उसमें कूदने के लिए उतावला हो गया। कर्ण को कुन्ती से यद्यपि बहुत शिकायत थी, परंतु माँ की प्रार्थना पर उसने अर्जुन को छोड़ अन्य चारों पाण्डवों पर प्रहार न करने का वचन दे दिया। अधर्म और विश्वासघात की चिन्ता यदि न होती तो सम्भवतः कर्ण अपने आपको भी कुन्ती के हवाले कर देता। कविवर दिनकर ने कर्ण की मनोदशा का मार्किक चित्र खींचते हुए लिखा है -

हो चुका धर्म के ऊपर न्योछावर हूँ।
मैं चढ़ा हुआ नैवेद्य देवता पर हूँ।।

... ...

इससे पड़ता हूँ पाँव जननि हठ त्यागो।
होकर कठोर मुझसे मुझको मत माँगो।।

इन महापुरुषों की मातृ-भक्ति इनके जीवन की अतुल सम्पत्ति थी। इस अतुल सम्पत्ति के बदले ही इन महापुरुषों को असीम शक्ति प्राप्त हुई। वस्तुतः मातृ-भक्ति की महिमा अनन्त है।

महासभा संवाद

तेरापंथ समाज की शीर्षस्थ संस्था होने के नाते जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा अमृत पुरुष आचार्य श्री महाश्रमण से पावन पाथेय प्राप्त कर अपनी सभी सभाओं और समाज के प्रत्येक व्यक्ति के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक उन्नयन के लिए कृतसंकल्पित है और उनके कल्याण, कुशलता एवं संरक्षा के दायित्व का वहन करने के प्रति प्रतिबद्ध है।

पूज्यवर द्वारा दिए गए दिशानिर्देशों का पालन करती हुई जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा ने देशभर में फैलीं अपनी सभाओं के माध्यम से अहिंसा, संयम, साधना, नैतिकता, संस्कार निर्माण आदि के द्वारा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का पथ प्रशस्त किया है।

तेरापंथ समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण कारण है उसकी संगठनात्मक क्रियाविधि, जिसके तहत महासभा के अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारी समय-समय पर देश के विभिन्न भागों एवं विदेशों में भी सभाओं की संगठनात्मक यात्राएँ करते हैं। इन यात्राओं के फलस्वरूप संघीय स्तर पर निर्धारित सभी गतिविधियों एवं प्रकल्पों के संचालन में प्रेरणा एवं प्रोत्साहन प्राप्त होता है और विभिन्न क्रियाकलापों को नई ऊँचाई मिलती है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत है मार्च, 2015 के महीने में महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ एवं अन्य पदाधिकारियों द्वारा की गई संगठन यात्राओं की रिपोर्ट।

संगठन यात्रा रिपोर्ट

दिनांक 14 फरवरी, 2015 को महासभा के प्रतिनिधि मंडल ने महासभा अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में संगठन यात्रा की, जिसमें श्री किशनलाल डागलिया, श्री विनोद बैद, श्री तुलसी कुमार दुगड़, श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़ एवं उदयपुर के श्री शांतिलाल सिंघवी तथा श्री अशोक डोसी आदि शामिल थे।

उदयपुर के तेरापंथ समाज को संबोधित करते हुए, महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़

महासभा के पदाधिकारियों ने अपराह्न में सर्वप्रथम उदयपुर एयरपोर्ट से प्रस्थान कर उदयपुर में विराजित मुनिश्री पृथ्वीराजजी (जसोल) ठाणा-2 के दर्शन कर संक्षिप्त में अहिंसा यात्रा एवं अन्य गतिविधियों की अवगति निवेदन की। मुनिश्री से मंगलपाठ श्रवण कर महासभा का प्रतिनिधि मंडल उदयपुर तेरापंथी सभा भवन पहुँचा, जहाँ उसने स्थानीय कार्यकर्ताओं से भेंट की। उदयपुर 1100 श्रद्धा के परिवारों का क्षेत्र है।

सभा भवन में स्थानीय संघीय संस्थाओं एवं समाज के विशिष्ट श्रावक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में एक संक्षिप्त समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने आचार्यश्री महाश्रमणजी की अहिंसा यात्रा की संक्षिप्त जानकारी एवं उसमें श्रावक समाज की सहभागिता हेतु आह्वान के साथ महासभा द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की एवं समग्र समाज से इन गतिविधियों में सहभागिता हेतु आह्वान किया। उन्होंने ज्ञानशाला में हर परिवार से बच्चों की उपस्थिति सुनिश्चित करने, उपासक श्रेणी के विकास में भी उदयपुर का श्रावक समाज योगभूत बनने, सधार्मिक संपर्क अभियान में हर परिवार से संपर्क कर उसे मुख्य धारा में जोड़ने हेतु प्रयास करने की आवश्यकता पर बल दिया। जिन परिवारों को सहयोग की अपेक्षा हो उन्हें जय तुलसी फाउण्डेशन से संपर्क करने हेतु सुझाव दिया गया।

महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद ने अपने वक्तव्य में महासभा की गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की।

तेरापंथी सभा, उदयपुर के अध्यक्ष श्री राजकुमार फत्तावत ने उदयपुर सभा द्वारा संचालित विभिन्न आध्यात्मिक, सामाजिक एवं अन्य गतिविधियों के बारे में जानकारी दी, जिसमें विशेषकर आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के पावन प्रसंग पर आयोजित व्याख्यानमालाओं आदि का आयोजन शामिल है।

महासभा परिवार का उदयपुर सभा द्वारा मेवाड़ी परंपरा के अनुसार सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में सुश्री शशि छाजेड़ एवं सुश्री सोनल सिंघवी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात ज्ञानशाला के बच्चों ने आकर्षक प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन उदयपुर सभा के मंत्री श्री सूर्यप्रकाश मेहता ने किया एवं श्री शांतिलाल सिंघवी द्वारा आभार ज्ञापित किया गया।

यह जानकारी मिलने पर कि वरिष्ठ श्रावक श्री मांगीलाल लुणावत की पुत्री का असामयिक निधन हो गया है, महासभा परिवार श्री मांगीलालजी लुणावत के आवास पर पहुँचा और उनके प्रति अपनी आंतरिक शोक संवेदना व्यक्त की। इस अवसर पर उनके अनुज चेन्नई प्रवासित श्री मेघराज लुणावत एवं अन्य पारिवारिकजन भी उपस्थित थे।

महासभा के सभी सदस्यों ने उदयपुर में ही श्री निर्मल जैन (गुजरात आईसक्रीम) के पारिवारिक मांगलिक आयोजन में अपनी सहभागिता की।

महासभा प्रतिनिधि मंडल के सदस्यगण उदयपुर से प्रस्थान कर फतेहनगर पहुँचे और वहाँ समाज के वरिष्ठ

कार्यकर्ता श्री सवाईलालजी पोखरणा की पौत्री के वैवाहिक कार्यक्रम में सहभागिता की।

फतेहनगर में 15 फरवरी को प्रातः आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी एवं महासभा शताब्दी समारोह के पावन प्रसंग पर 100 तेरापंथ भवन निर्माण योजना के अंतर्गत नवनिर्मित प्रथम तेरापंथ भवन का उद्घाटन कार्यक्रम चारित्रात्माओं से मंगलपाठ श्रवण कर संपन्न हुआ।

उदयपुर संभाग का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है फतेहनगर, जहाँ लगभग 17 श्रद्धा के परिवार प्रवासित हैं। यहाँ मेवाड़ अंचल की लगभग 22 सभाओं के अधिकारियों के साथ एक मिलन गोष्ठी का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहिनों के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ।

फतेहनगर सभा द्वारा समागत अतिथियों का स्वागत मेवाड़ी परंपरा से किया गया। अपने स्वागत भाषण में सभा अध्यक्ष श्री कल्याणसिंह पोखरणा ने इस छोटे से क्षेत्र में श्रावक समाज की आध्यात्मिक गतिविधियों के सम्यक संचालन हेतु महासभा के सहयोग से नवनिर्मित तेरापंथ भवन के निर्माण में आर्थिक सहभागिता हेतु कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि अब इस भवन में नियमित रूप से आध्यात्मिक गतिविधियों का संचालन किया जा सकेगा।

मेवाड़ कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष डॉ. बसन्तीलाल बाबेल ने इस क्षेत्र में नया मोड़ के अंतर्गत सामाजिक आयोजनों में मितव्ययिता एवं सादगी के बारे में अवगति दी। समागत अतिथियों का मेवाड़ कान्फ्रेन्स की तरफ से भी मेवाड़ी परम्परा के अनुसार सम्मान किया गया। तत्पश्चात साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया।

इस अवसर पर क्षेत्र के वरिष्ठ श्रावक श्री सवाईलालजी पोखरणा ने महासभा परिवार का स्वागत करते हुए क्षेत्र की सार-संभाल हेतु साधुवाद प्रेषित किया एवं पुनः इस क्षेत्र की यात्रा हेतु महासभा परिवार से अनुरोध किया।

फतहनगर के नवनिर्मित सभा भवन के उद्घाटन का ऐतिहासिक दृश्य

साध्वीश्री नगीनाश्रीजी ने अपनी प्रेरणादायी एवं ओजस्वी वक्तव्य में श्रावक समाज को मंगल उद्बोधन प्रदान किया। साध्वीश्री ने अंग्रेजी के एक सुवाक्य ने उपस्थित श्रावक समाज को एक विशेष आध्यात्मिक प्रेरणा का

बोध-पाठ करवाया -

A worker is good who can satistfy his boss

A worker is better who can satisfy his society

A worker is best who can satisfy himself.

इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित सभी संभागियों को अपने स्व के आत्मकल्याण हेतु आचार्यश्री द्वारा निर्देशित मार्ग पर चलने का आह्वान किया। मुनिश्री रणजीत कुमारजी ने भी अपना मंगल उद्बोधन प्रदान किया।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने स्थानीय श्रावक समाज से संघीय गतिविधियों से समग्र रूप से जुड़ने हेतु आह्वान किया, जिसमें विशेष रूप से भावी पीढ़ी के निर्माण हेतु ज्ञानशालाओं के संचालन, उपासक श्रेणी का विस्तार एवं अन्य गतिविधियाँ शामिल हैं। इस अवसर पर प्रवर्द्धमान अहिंसा यात्रा के बारे में भी संक्षिप्त जानकारी देते हुए उन्होंने मेवाड़ संभाग के कार्यकर्ताओं को सेवा हेतु सहभागिता करने के लिए अनुरोध किया, जिसपर ओम अर्हम् की ध्वनि से सभी ने अपनी सहमति व्यक्त की।

महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद ने महासभा की गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन श्री चेतन खाब्या द्वारा किया गया। इस अवसर पर महासभा परिवार के श्री विनोद लुणिया एवं केलवा से श्री रोशनलाल सांखला, श्री महेन्द्र कोठारी आदि भी उपस्थित थे।

तत्पश्चात महासभा के अध्यक्ष महोदय ने निकटवर्ती **'कोठारिया' कस्बा,** जहाँ श्रद्धा के लगभग 40 परिवार निवास करते हैं, वहां के श्रावकों ने मिलकर वहाँ चारित्रात्माओं के चातुर्मास प्रदान करवाने हेतु आचार्यश्री के चरणों में विशेष निवेदन करने हेतु अनुरोध किया। कोठारिया में पिछला चातुर्मास कई वर्षों पूर्व साध्वीश्री धनश्रीजी द्वारा किया गया था।

इसी अवसर पर आकोला कस्बा, जहाँ श्रद्धा के 25 परिवार निवास करते हैं एवं जहां सभा का अपना निजी भवन भी है, उन्होंने भी चातुर्मास हेतु आचार्यश्री के चरणों में महासभा के माध्यम से पुनः विनती प्रस्तुत की। यहाँ चातुर्मास होने से इसका लाभ निकटवर्ती क्षेत्र कानोड़ एवं रेलमगरा आदि कस्बों को भी प्राप्त हो सकेगा। वर्ष 2009 में यहाँ पर साध्वी श्री प्रबलयशाजी के चातुर्मास के पश्चात अब तक अन्य चारित्रात्माओं का पावस प्रवास नहीं हो पाया है।

दिनांक 15 फरवरी,2015 को ही नाथद्वारा मंदिर में श्रीनाथजी के दर्शन करने के पश्चात स्थानीय सभा के पदाधिकारियों ने महासभा परिवार के साथ विचार-विमर्श हेतु एक बैठक की। नाथद्वारा 110 श्रद्धा के परिवारों का क्षेत्र है। यहाँ समाज का अपना निजी भवन है लेकिन भवन काफी पुराना है इसलिए इसका पूरा उपयोग नहीं हो पा रहा है। वर्तमान भवन के परिपार्श्व में ही तेरापंथी श्रावक श्री निर्मल छाजेड़ का 2200 स्क्वायर फुट का स्थान है। श्री किशन डागलिया के मार्फत श्री छाजेड़ से संपर्क कर उक्त स्थान को नाथद्वारा सभा को लागत मूल्यों में विक्रय हेतु निवेदन किया गया, जिसपर उन्होंने श्रद्धा से अभिभूत होकर अपनी सहमति व्यक्त की। पुराने सभा भवन एवं प्रस्तावित नये प्लॉट को मिलाकर एक बहूद्देश्यीय भवन के निर्माण हेतु महासभा के अध्यक्ष महोदय ने स्थानीय श्रावक समाज से एवं सभा के पदाधिकारियों से आह्वान करते हुए कहा कि इसमें महासभा परिवार भी आर्थिक रूप से सहभागी हो सकता है। उपस्थित नाथद्वारा सभा के पदाधिकारियों ने इसपर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए शीघ्र ही एक व्यवस्थित योजना बनाकर महासभा से संपर्क करने का आश्वासन दिया।

इसके पश्चात महासभा के प्रतिनिधिमंडल ने हल्दीघाटी

में उपस्थित होकर महाराणा प्रताप की राष्ट्रभक्ति का स्मरण करते हुए उनके प्रति अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति की और साथ ही स्वामी भक्त 'चेतक' की समाधि स्थल को नमन किया। सायंकाल को कांकरोली स्थित पुराने तेरापंथ सभा भवन में साध्वीश्री कनकश्रीजी (ठाणा-5) एवं साध्वीश्री गुणमालाजी (ठाणा-5) के दर्शन किये। 300 परिवारों का यह क्षेत्र श्रद्धा और समर्पण का अच्छा क्षेत्र है। सभा भवन में उपस्थित सभाध्यक्ष श्री नन्दलाल बाफना एवं मंत्री श्री विनोद वडाला एवं अन्य पदाधिकारियों ने यहाँ प्रवर्द्धमान संघीय गतिविधियों के संचालन की विस्तृत जानकारी दी। महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने भी उन्हें संघीय गतिविधियों के सम्यक संचालन एवं अन्य करणीय कार्यों हेतु आवश्यक निर्देश प्रदान किये।

परस्पर विचार-विमर्श में महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने यहाँ के श्रावक श्री पदमचन्द कोठारी के प्रकरण को भी सद्भावनापूर्ण वातावरण में समग्र समाज की बैठक आयोजित कर कोई सम्मानजनक रास्ता निकाल कर विवाद को समाहित करने का अनुरोध किया। साध्वीवृंद से मंगलपाठ श्रवण कर प्रतिनिधि मंडल ने श्री महेन्द्र कोठारी के आवास पर भोजन किया एवं पावन स्थली सिरियारी के लिए प्रस्थान किया।

दिनांक 15 फरवरी, 2015 को प्रतिनिधि मंडल रात्रि के लगभग 12.15 बजे तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक महामना भिक्षु की महानिर्वाण स्थली सिरियारी पहुँचा और रात्रि के लगभग 1.15 बजे समाधि पर 'ओम भिक्षु' 'ओम भिक्षु' का लगभग 15 मिनट तक जाप किया।

प्रातः लगभग 9 बजे सिरियारी समाधि स्थल पर महासभा परिवार ने श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए कुछ समय के लिए उपासना की। तत्पश्चात मुनिश्री मणिलालजी (ठाणा-2) एवं मुनिश्री धर्मेश जी के सहवर्ती मुनिश्री विनोद कुमारजी के दर्शन किये (मुनिश्री धर्मेश कुमार जी के साधनारत होने के कारण उनका दर्शन लाभ प्राप्त नहीं हुआ)। मुनिवृंद को अहिंसा यात्रा एवं अन्य गतिविधियों के बारे में निवेदन करने के पश्चात मंगलपाठ श्रवण कर पाली के लिए प्रस्थान किया।

पाली मारवाड़ अंचल का श्रद्धा का एक समर्पित क्षेत्र है जहाँ श्रद्धा के लगभग 280 परिवार निवास करते हैं। यहाँ पर जोधपुर एवं पाली जिले की 6 सभाओं के पदाधिकारियों, स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की सहभागिता इस मिलन गोष्ठी में रही। गोष्ठी का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात पाली सभा के अध्यक्ष श्री अचलचन्द चोपड़ा ने स्वागताभिव्यक्ति की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए वरिष्ठ श्रावक श्री डूंगरचन्दजी चोपड़ा ने पाली सभा द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों की अवगति प्रदान की। उन्होंने बताया कि चातुर्मास काल में ज्ञानशाला का संचालन प्रतिदिन होता है। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के पावन प्रसंग पर यहाँ प्रायः प्रति सप्ताह ही विचार गोष्ठियों का आयोजन किया गया। यहाँ तपस्या का भी अच्छा क्रम चलता है। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर यहाँ एक प्रमुख मार्ग पर सभा परिवार द्वारा **आचार्य तुलसी**

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु को महासभा के प्रतिनिधि मंडल की श्रद्धासिक्त प्रणति

महासभा के अध्यक्ष पाली के श्रावक समाज को महासभा की गतिविधियों की जानकारी प्रदान करते हुए

श्री कानमल पोरवाल को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित करते हुए महासभा के प्रतिनिधिगण

सर्कल का निर्माण किया गया है। इस अवसर पर उन्होंने जयाचार्य की जन्मभूमिग्राम रोहट के विकास का दायित्व भी पाली सभा द्वारा वहन करने की घोषणा की।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने अपने वक्तव्य में महासभा द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों की व्यापक रूप से अवगति देते हुए समग्र समाज से इससे जुड़ने का आह्वान किया। पाली श्रावक समाज से महासभा ने निवेदन करते हुए जयाचार्य की ऐतिहासिक एवं पौराणिक लेखनी स्थल जहाँ आचार्य भिक्षु ने 7 चातुर्मास किये - पुराने उदयपुरिया बाजार स्थित परिसर (दुकान) को पुनः अधिगृहीत कर तेरापंथ की धरोहर के रूप में संरक्षित करने का आह्वान किया, जिस पर स्थानीय कार्यकर्ताओं ने यथोचित कार्यवाही कर इस स्थल को पुनः संघ के लिए अधिगृहीत करने हेतु प्रतिबद्धता व्यक्त की एवं शीघ्र ही आवश्यक कार्यवाही करने का आश्वासन दिया।

महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद ने महासभा की गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत करते हुए सभा के पदाधिकारियों से सघन सधार्मिक सम्पर्क अभियान चलाकर समाज के सभी व्यक्तियों से मिलकर उन्हें मुख्य धारा में जोड़ने हेतु आह्वान किया।

क्षेत्रीय सभा के पदाधिकारियों के अलावा इस गोष्ठी में जैन विश्व भारती के न्यासी श्री भेरचन्द गोगड़ एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ-साथ पाली के महान श्रावक श्री विजयसिंह पटवा के परिवार की नवमीं पीढ़ी के सदस्य श्री कानमल पोरवाल उपस्थित थे। महासभा परिवार ने इस अवसर पर तुरंत निर्णय लेकर भरी परिषद में विजयसिंहजी पटवा की गौरवशाली सेवाओं का स्मरण करते हुए उनके वंशज श्री कानमल पोरवाल को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम के पश्चात सभी समागत प्रतिनिधियों ने पाली में विराजित साध्वीश्री विनयश्रीजी (बोरावड़) (ठाणा-5) के दर्शन कर महासभा की गतिविधियों एवं अहिंसा यात्रा के बारे में संक्षेप में निवेदन किया।

साध्वीवृंद से मंगलपाठ श्रवण कर महासभा के कार्यकर्ताओं ने जसोल के लिए प्रस्थान किया। पाली के इस आयोजन में श्री सज्जनराज बांठिया, श्री प्रवीण कोठारी एवं श्री रायचन्द धोका एवं श्रीमती नगीना नाहटा का विशेष श्रम एवं सहयोग रहा।

महासभा के अध्यक्ष महोदय ने पाली में सभी संस्थाओं में आपसी समन्वय के द्वारा संचालित सभी संघीय कार्यक्रमों की आयोजना हेतु पूरे श्रावक समाज को

साधुवाद दिया। इस अवसर पर पाली के श्रावक समाज ने महासभा अक्षय निधि कोष हेतु 51 व्यक्तियों की सहभागिता की घोषणा की एवं भविष्य में इस हेतु अन्य परिवारों को भी प्रेरित करने का आश्वासन दिया।

अनौपचारिक विचार विमर्श में पाली श्रावक समाज के भाई-बहनों ने हर दो-तीन वर्षों के अन्तराल में एक बार संतों के चातुर्मास हेतु श्री चरणों में विशेष निवेदन प्रस्तुत करने का आग्रह हमारे समक्ष रखा। हालांकि सम्पूर्ण श्रावक समाज को पाली में अनवरत रूप से चारित्रात्माओं के प्रवास का लाभ मिलने का गौरव भी है और इस अनुग्रह हेतु वे श्रीचरणों में श्रद्धाप्रणत हैं।

साध्वीश्रीजी से मंगलपाठ श्रवण कर महासभा के प्रतिनिधि सायं 5.30 बजे जसोल पहुँचे।

नाकोडा रोड स्थित तेरापंथ सभा भवन, जसोल में महिला मंडल की बहनों के मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। सभा के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर छाजेड़ ने सभी समागत अतिथियों का स्वागत किया एवं जसोल सभा द्वारा संचालित विभिन्न आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की।

सिवांची मालाणी क्षेत्रीय सभा के अध्यक्ष श्री डूंगरचन्द भंसाली, पारमार्थिक शिक्षण संस्था के कोषाध्यक्ष श्री जसराज बुरड़ एवं महासभा कार्यकारणी सदस्य श्री शांतिलाल भंसाली ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति की एवं महासभा परिवार की इस संगठन यात्रा को संघीय दृष्टि से उपयोगी एवं महत्वपूर्ण बताया। जसोल एवं सिवांची मालाणी क्षेत्र की 6 सभाओं के पदाधिकारियों ने कार्यक्रम में अपनी सहभागिता की।

इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित श्री नाकोडा ट्रस्ट के श्री अमृतलाल छाजेड़ ने तेरापंथ शासन की 'एक गुरु और एक विधान' की प्रशंसा करते हुए जिनशासन की प्रभावना में तेरापंथ की प्रमुख भूमिका की चर्चा करते हुए अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी एवं

जसोल सभा भवन में सिवांची मालाणी क्षेत्र के श्रावकों के साथ महासभा के प्रतिनिधिगण

प्रवर्धमान अहिंसा यात्रा के प्रति अपनी मंगलकामनाएं व्यक्त कीं।

सिवांची मालाणी के श्रद्धा और समर्पण से सराबोर श्रावक समाज को महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने संघीय गतिविधियों में समर्पित भाव से जुड़ने का आह्वान किया। सधार्मिक सम्पर्क अभियान के अंतर्गत सभी परिवारों से संपर्क कर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु आह्वान किया, जिसका सभी उपस्थित श्रावक समाज ने ओम अर्हम् की ध्वनि से अनुमोदना की। पूज्यप्रवर की अहिंसा यात्रा की जानकारी से अवगत कराते हुए उसमें व्यक्तिगत उपस्थित होकर सहभागिता के आह्वान के साथ-साथ उन्होंने कहा कि 'हमारे पूज्यप्रवर अभी पूर्वोत्तर भारत की यात्रा पर हैं और साथ ही विदेशों की भूमि को भी पवित्र करेंगे। संभवतः अगले चार-पांच वर्षों तक आपश्री सीधे तौर पर आपके क्षेत्र में नहीं पधारेंगे लेकिन आपश्री का पूर्ण आशीर्वाद आपके साथ है, यहाँ के समाज के साथ है, हमको हमारी आध्यात्मिक गतिविधियों को और अधिक गति देनी है, आध्यात्मिक वातावरण को उत्साहित बनाए रखना है।'

महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद ने अपने वक्तव्य में महासभा की विभिन्न गतिविधियों से श्रावक समाज को

अवगत कराया।

कार्यक्रम के समापन से पहले सभी समागत अतिथियों का सम्मान स्थानीय सभा परिवार द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की संपन्नता पर सभी सहभागी प्रतिनिधियों ने साध्वीश्री प्रमोदश्रीजी (ठाणा-5) के दर्शन कर अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति की। महासभा की गतिविधियों एवं अहिंसा यात्रा की संक्षिप्त जानकारी निवेदन करने के बाद मंगलपाठ श्रवण कर प्रतिनिध मंडल ने जोधपुर के लिए प्रस्थान किया।

पाली एवं जसोल के कार्यक्रम में जोधपुर से श्री दिलीप सिंघवी ने भी सहभागिता की। इस अवसर पर सिवांची मालाणी क्षेत्र से महासभा शताब्दी अक्षय निधि कोष हेतु 101 व्यक्तियों की सहभागिता की घोषणा की गई एवं भविष्य में इस हेतु प्रयास करने का आश्वासन दिया।

महासभा शताब्दी वर्ष एवं आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के पावन प्रसंग पर देशभर में 100 तेरापंथी भवनों के निर्माण की एक परियोजना प्रस्तुत की गई थी, जिसके अंतर्गत एक-एक करोड़ के 30 अनुदानदाताओं से सहयोग लेना प्रस्तावित है। अब तक इस परियोजना में 14 परिवारों से स्वीकृति प्राप्त हो चुकी थी। महासभा के अध्यक्ष के आह्वान पर जोधपुर के श्री दिलीप सिंघवी ने 15वें सहयोगी के रूप में इस परियोजना से जुड़ने हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान की है।

17 फरवरी को महासभा के प्रतिनिध मंडल ने सरदारपुरा स्थित तातेड़ भवन में वयोवृद्ध साध्वीश्री गुलाबकंवरजी (ठाणा-5) के दर्शन किए। इस अवसर पर साध्वीश्री को महासभा की गतिविधियों एवं अहिंसा यात्रा की संक्षिप्त जानकारी निवेदन करने के पश्चात मंगलपाठ श्रवण कर ओसियां मंदिर में दर्शन हेतु प्रस्थान किया। ओसियां मंदिर में दर्शन कर महासभा परिवार रात्रि विश्राम हेतु जयपुर पहुँचा।

18 फरवरी, 2015 को महासभा के कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र बोरड़ ने आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल **'शांतिपीठ'** के वास्तुविद श्री संजय कोठारी एवं उनके सहयोगियों से कुछ शेष कार्यों के विषय में चर्चा की, साथ ही जयपुर सभा के पदाधिकारी श्री प्रदीप डोसी, जिनके संरक्षण में तुलसी वाङ्मय का व्यवस्थित भंडारण एवं रखरखाव अणुविभा में किया जा रहा है, से विचार-विमर्श कर इसे देशभर के सभा भवन को प्रेषित करने हेतु आवश्यक व्यवस्था करने का अनुरोध किया। तुलसी वाङ्मय के प्रेषण का कार्य प्रारंभ हो गया है।

इस अवसर पर बापू नगर में विराजित साध्वी अशोकश्रीजी (ठाणा-5) के दर्शन कर महासभा परिवार ने महासभा की गतिविधियों एवं अहिंसा यात्रा की जानकारी प्रस्तुत की। मंगल पाठ श्रवण कर सभी ने वहाँ से प्रस्थान किए।

तत्पश्चात अणुविभा में विराजित साध्वीश्री रतनश्रीजी (ठाणा-5) एवं साध्वी कुन्दनप्रभाजी (ठाणा-5) के दर्शन कर उन्हें भी महासभा की गतिविधियों एवं अहिंसा यात्रा के बारे में संक्षिप्त में निवेदन किया। साध्वीश्री कुन्दनप्रभाजी, जिनकी रीढ़ की हड्डी में तथा दोनों पांव के घुटनों में वेदना है एवं संभवतः डॉक्टरों ने उन्हें कुछ समय के लिए औषधि देते हुए ऑपरेशन की सलाह दी है, को सुखपृच्छा निवेदन करते हुए साध्वीश्री रतनश्रीजी से मंगलपाठ श्रवण कर कलकत्ता प्रस्थान करने हेतु एयरपोर्ट रवाना हो गए। इन सभी अवसरों पर महासभा परिवार के श्री प्रदीप डोसी ने भी सहभागिता की।

महासभा के प्रतिनिधिमंडल द्वारा पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगठन यात्रा

महासभा के प्रतिनिधिमंडल द्वारा पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगठन यात्रा के क्रम में सिंगापुर, हांगकांग एवं बैंकाक की संगठन यात्रा की गई, जिसमें महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़, प्रधान न्यासी श्री बिमल कुमार नाहटा, महामंत्री श्री विनोद बैद, उपाध्यक्ष

श्री तरुण सेठिया, न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़ एवं कार्यसमिति सदस्य श्री दिलीप सिंघवी के साथ महासभा के अन्तरराष्ट्रीय संगठन प्रभारी श्री राजेन्द्र बैंगानी सम्मिलित थे।

इस यात्रा का उद्देश्य था, इन क्षेत्रों में प्रवासित श्रावक-श्राविका समाज की आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी और उनकी सार-संभाल और उनके साथ व्यापक स्तर पर संपर्क सूत्रों का विकास एवं संगठन का सुदृढ़ीकरण।

महासभा के प्रतिनिधि मंडल ने विदेश की धरा पर प्रवासित भाई-बहनों को भारत और जैन तेरापंथ धर्मसंघ की सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक बताते हुए उन्हें भारतवर्ष और जैन तेरापंथ के दूत की संज्ञा दी।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने प्रवासित जैन समाज को धर्मसंघ एवं समाज में संगठन के महत्व को बताया और समाज को एकजुट रखने, एक दूसरे को भलीभांति समझने, उनकी समस्याओं को जानने और उसके समाधान में सहयोगी बनने के लिए देश और समाज के प्रति दायित्व बोध का अहसास कराया और सधार्मिक भावना को प्रवर्धमान रखने के लिए संगठन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि इसके

महासभा के अध्यक्ष द्वारा सिंगापुर के श्रावक समाज का आह्वान

कार्यक्रम में उपस्थित सिंगापुर का श्रावक समाज

माध्यम से विदेशों में रहते हुए भी भारत वर्ष में हो रही सामाजिक और आध्यात्मिक गतिविधियों की पूर्ण जानकारी की अवगति प्राप्त होगी। उन्होंने कहा कि अपने देश के बाहर, विदेश की धरती पर रहते हुए भी दैनिक जीवन में आध्यात्मिक गतिविधियाँ बनी रहे और हमारे जैनत्व के संस्कारों की सुरक्षा के लिए संघीय संस्था के रूप में हर क्षेत्र में तेरापंथी सभा होने का बड़ा महत्व है।

उन्होंने कहा कि हम अपने देश, धर्मसंघ और आचार्यों के संदेश – अहिंसा, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, विश्व शांति के संदेश, जो मानव जाति की सुरक्षा कर सकते हैं, का स्थायित्व के साथ प्रचार-प्रसार कर सकें, यह आवश्यक है। उन्होंने स्थानीय स्तर पर, आधिकारिक तौर पर महासभा के अंतर्गत सभा के गठन हेतु लोगों का आह्वान किया। साथ ही उन्होंने प्रवृत्तियों के सम्यक संचालन हेतु सभी स्थानों पर सभा के निजी स्थान की अपेक्षा पर बल दिया एवं इस हेतु अपेक्षानुसार महासभा के पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर सभी क्षेत्रों में प्रवासित परिवारों और बंधुओं की जानकारी एकत्रित कर अंतरराष्ट्रीय तेरापंथी परिवार निर्देशिका को अपडेट करने का भी निर्णय लिया गया।

हांग कांग के श्रावक समाज के साथ महासभा का प्रतिनिधि मंडल

सिंगापुर, हांग कांग और बैंकाक सभी देशों में प्रवासित तेरापंथी परिवार के सदस्यों ने इस मौके पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की और समाज एवं संगठन के महत्व और अपने धर्म, अपने आचार्य, अपने समाज से सीधे जुड़ाव के मर्म को समझते हुए तीनों देशों में प्रवासित भाई-बहनों ने और उनके परिवारों ने उसी समय सभा के गठन की सहमति प्रदान की और विश्वास ही नहीं कटिबद्धता जाहिर की कि हम लोग हमारे यहाँ सामाजिक और आध्यात्मिक गतिविधियाँ सुचारु रूप से निरन्तर संचालित करते रहेंगे और महासभा के साथ बराबर संपर्क में रहेंगे।

महासभा ने तीनों ही देशों में तेरापंथ के आचार्यों के महान अवदानों को स्थायित्व के साथ प्रचारित-प्रसारित करने एवं आध्यात्मिक, सामाजिक गतिविधियों के सम्यक संचालन के लिए तेरापंथ भवन निर्माण हेतु आह्वान किया। इसमें महासभा ने हांगकांग एवं सिंगापुर में भवन निर्माण हेतु आर्थिक सहयोग के रूप में 5-5 करोड़ रुपये एवं बैंकाक हेतु 1.5 करोड़ रुपये के सहयोग हेतु भी सहमति व्यक्त की। उन्होंने बताया कि इस टीम का 11 महीनों का कार्यकाल अवशेष है और इस अवधि में आप तीनों स्थानों पर भवन निर्माण का कार्य करते हैं तो आर्थिक सहयोग की हमारी प्रतिबद्धता हेतु हम अपना संकल्प व्यक्त करते हैं।

इस अवसर पर महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद ने केन्द्रीय स्तर पर संचालित महासभा की गतिविधियों एवं विभिन्न प्रवृत्तियों की विस्तार से जानकारी दी और आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह की आयोजना, आचार्य महाप्रज्ञ समाधि स्थल के निर्माण के साथ वर्तमान में गतिमान आचार्य श्री महाश्रमण की अहिंसा यात्रा की व्यवस्था आदि के संदर्भ में अवगति प्रदान की। अंतरराष्ट्रीय संगठन प्रभारी श्री राजेन्द्र बैंगानी ने यात्रा के उद्देश्यों की जानकारी देते हुए महासभा की टीम का परिचय प्रस्तुत किया। तदुपरान्त प्रत्येक्ष क्षेत्र में उपस्थित संभागी बंधुओं और बहनों का व्यक्तिश: परिचय प्राप्त किया गया। महासभा के प्रतिनिधि मंडल ने साहित्य, आचार्य तुलसी सिल्वर प्लेटेड स्मारिका इत्यादि की भेंट करके स्थानीय पदाधिकारियों और श्रावकों का सम्मान किया। उपस्थित प्राय: सभी संभागियों ने महासभा की शताब्दी अक्षय निधि कोष परियोजना में अपने परिवार की सहभागिता की भावना प्रकट की।

इस अवसर पर दिनांक 8 मार्च, 2015 को आयोजित सिंगापुर के कार्यक्रम में सभा के अध्यक्ष श्री प्रवीण जैन (गेलड़ा) ने महासभा टीम का हार्दिक स्वागत किया।

ज्ञातव्य है कि श्री प्रवीण जैन जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति श्री महावीरराजजी गेलड़ा के सुपुत्र हैं। श्री वीरेंद्र बैद ने सिंगापुर की संघीय, धार्मिक गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की। कार्यक्रम में श्री राजेश बोथरा, श्री अरुण बैद, श्री अनिल कोठारी, श्री रवि मनोत, श्री राजेश बैंगानी, श्री कीर्ति चोपड़ा, श्री मनोज दुगड़, श्री श्रेयांश सिंघी, श्री नवरतन रामपुरिया इत्यादि के साथ-साथ लगभग 45-50 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति थी। आज के दिन

बैंकाक के श्रावक समाज के साथ महासभा के प्रतिनिधि मंडल द्वारा विचार-विमर्श

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सभी वक्ताओं ने मातृशक्ति को नमन करते हुए नारी समाज के उन्नायक गुरुदेव श्री तुलसी का विशेष रूप से स्मरण किया।

हांगकांग के कार्यक्रम में सभा के अध्यक्ष श्री बाबूलाल खटेड़ ने महासभा की टीम का स्वागत करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की एवं अपने जीवन के निर्माण और विकास यात्रा में गुरुदेव श्री तुलसी के असीम उपकारों को स्मरण किया। उन्होंने श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी की कृपा एवं वात्सल्य हेतु भी अपने उद्गार और कृतज्ञता के भाव व्यक्त किए। ज्ञातव्य है कि श्री बाबूलाल खटेड़ आचार्य श्री तुलसी के संसारपक्षीय भतीजे हैं एवं मुनिश्री गुलाबचन्द 'निर्मोही' के संसारपक्षीय लघुभ्राता हैं। संगोष्ठी में श्री मानराज नाहटा, श्री हेमराज बैद, श्री पूरण चोरड़िया, श्री जयचन्दलाल नाहटा एवं श्री निर्मल बरड़िया आदि लगभग 25 श्राावकों की उपस्थिति थी।

बैंकाक में सभा के अध्यक्ष के रूप में वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री उदयचन्द गुनेचा को मनोनीत किया गया। उन्होंने महासभा की टीम के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सभा की सक्रियता हेतु आश्वासन प्रदान किया। यहाँ श्री पदम जैन, श्री तेजकरण दुगड़, श्री प्रवीण गुनेचा, श्री बसन्त दुगड़ आदि लगभग 20-25 श्रावकों की उपस्थिति थी।

महासभा द्वारा संचालित तेरापंथ भवन निर्माण परियोजना के सेन्चुरियन डोनर के रूप में श्री बाबूलाल खटेड़, हांगकांग एवं श्री राजेश बोथरा, सिंगापुर ने स्वेछापूर्वक अनुदानस्वरूप एक-एक करोड़ रुपये की राशि प्रदान करने की घोषणा की।

महासभा द्वारा प्रदत्त विभिन्न प्रकल्पों एवं गतिविधियों की जानकारी से प्रेरणा प्राप्तकर तीनों ही देशों में प्रवासित लगभग 100 परिवारों ने शताब्दी अक्षय निधि कोष में रु. 11,000/- की राशि प्रति परिवार सहभागिता हेतु स्वीकृति प्रदान की।

इस समूची यात्रा की रूपरेखा के निर्माण और सुव्यवस्था में श्री राजेन्द्र बैंगानी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

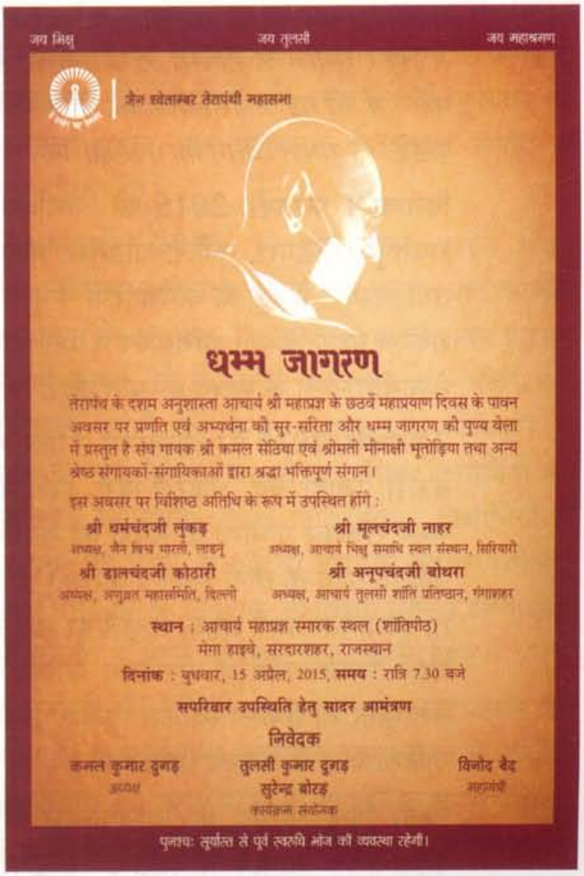

अहिंसा यात्रा अमृत संदेश

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अनुशास्ता परम पावन आचार्य श्री महाश्रमण पूरे देश एवं विदेशों में सद्भावना के संप्रसार, नैतिकता की प्रतिष्ठा एवं नशामुक्ति हेतु पदयात्रा कर रहे हैं और इस आध्यात्मिक अहिंसा यात्रा के द्वारा जन-जन में अहिंसा की अलख जगा रहे हैं। पूज्यश्री की अहिंसा यात्रा बहुआयामी एवं बहूद्देश्यीय है, जिसका लाभ सामान्य जन से लेकर समाज के शीर्षस्थ लोगों तक को सहज मिल रहा है। प्रस्तुत है फरवरी, 2015 के महीने में की गई अहिंसा यात्रा की उपलब्धियाँ एवं आचार्यश्री के अमृत संदेश का सार, जो पाठकों के समक्ष चिंतन का एक अभिनव आयाम उद्घाटित करेगा।

दिनांक 1 फरवरी, 2015 को आचार्यवर गोपालगंज की ओर प्रस्थित हुए। मार्गस्थ रावतपुर, चोडगरा, गुगौली चोडगरा, मौहार चोडगरा और मुरादीपुर चौराहा के ग्रामीणों तथा बिस्कुट फैक्ट्री के कर्मचारियों ने पूज्यवर की प्रेरणा से प्रभावित होकर नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण किया। आचार्यवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने मंगल प्रवचन में कर्तव्यनिष्ठा के महत्त्व को प्रतिपादित किया।

2 फरवरी, 2015 को आचार्यवर ने प्रातः गोपालगंज से विहार किया। मार्ग में गोपालगंज, बडौरी, रेवाड़ी खुर्द, अहिरण खेड़ा, पिलाखिनी, इटरौरा, मलवां में स्थान-स्थान पर अपने चरण रोककर ग्रामीणों के समूहों को संबोधित किया। आचार्यवर ने ग्रामवासियों को कहीं अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प करवाएं तो कहीं नशामुक्ति का संकल्प। अनेक स्थानों पर तो आचार्यवर स्वयं सड़क से कुछ दूर खड़े ग्रामीणों के समीप पधारे और उन्हें पावन संबोध प्रदान किया। मार्गस्थ टोलटेक्स प्लाजा के कर्मचारियों ने भी पूज्यवर की प्रेरणा से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। पूज्यवर की प्रेरणा से विद्यार्थियों तथा अन्य लोगों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

विश्व हिन्दू परिषद के विभागाध्यक्ष श्री रामप्रसाद शुक्ल, बजरंगदल के प्रान्तीय सहसंयोजक आचार्य अजितराज, फतेहपुर जिला भाजपा युवामोर्चा के महामंत्री श्री प्रीत

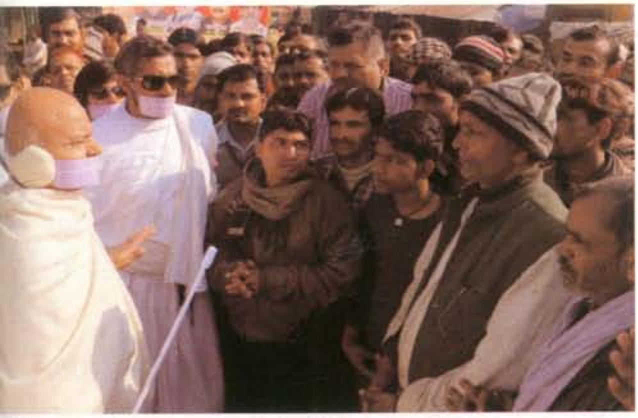

शुक्ला ने पूज्यवर के स्वागत में भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी।

3 फरवरी, 2015 को आचार्यवर ने प्रातः फतेहपुर के लिए प्रस्थान किया। मार्गस्थ सौंरा, मदारीपुर, सनगांव के ग्रामीणों ने पूज्यवर से प्रेरित होकर नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण किया। राजकीय पोलिटेक्निक कॉलेज के विद्यार्थियों को अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार करवाए। सेंट जेवियर हाई स्कूल के विद्यार्थी भी मार्ग में पूज्यप्रवर की पावन प्रेरणा से लाभान्वित हुए।

प्रधानाचार्य श्री नरेन्द्र मिश्रा ने आचार्यवर का स्वागत किया। मध्याह्न में पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें संभागी पत्रकारों को मुनि कमलकुमारजी एवं मुनि कुमारश्रमणजी ने अहिंसा यात्रा और आचार्यवर के विषय में अवगति दी। संगोष्ठी में प्रिन्ट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया से संबद्ध लगभग तीस पत्रकार संभागी बने। आज रात्रि में स्थानीय जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री रामभिक्षु यादव ने पूज्यवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

4 फरवरी, 2015 को आचार्यवर तेलियानी बिलन्दा स्थित प्राथमिक विद्यालय में पधारे। आचार्यवर ने अपने प्रवचन के दौरान जनता को पापों से आत्मरक्षा करने की प्रेरणा प्रदान की। रात्रिकालीन कार्यक्रम में ग्रामीणों की अच्छी उपस्थिति रही। कई व्यक्तियों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया।

5 फरवरी, 2015 को आचार्यवर थरियाव पधारे। प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में ज्ञान और सत्संस्कारों के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए समुपस्थित विद्यार्थियों को उन्हें आत्मसात करने हेतु उत्प्रेरित किया। आचार्यवर की प्रेरणा से उपस्थित ग्रामीणों, शिक्षकों और विद्यार्थियों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री रामूसिंह लोधी एवं स्थानीय पूर्व विधायक श्री के.के. सिंह ने पूज्यप्रवर से प्रेरणा ली।

6 फरवरी, 2015 को आचार्यवर ने आधारपुर से खागा की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में संकटमोचन हनुमान मंदिर के संन्यासी श्री विश्वेश्वरगिरिजी, श्री राजेश्वरानंद आदि पूज्यप्रवर की पावन प्रेरणा से लाभान्वित हुए। संग्रामपुरा के ग्रामीणों ने आचार्यवर की प्रेरणा से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। मध्याह्न में महाविद्यालय के शिक्षकों को पूज्यवर से पावन संबोध प्राप्त हआ। आचार्यवर ने शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत जिज्ञासाओं को भी समाहित किया। खागा के अन्य दो विद्यालयों के विद्यार्थी भी अपराह्न में पूज्यवर के दर्शनार्थ पहुंचे और पूज्यप्रवर के पावन संबोध से लाभान्वित हुए।

7 फरवरी, 2015 को आचार्यवर पुरईन स्थित पोलिटेक्निक इलाहाबाद कॉलेज में पधारे। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में नौ तत्त्वों की विवेचना करते हुए व्रत चेतना को परिपुष्ट बनाने की प्रेरणा प्रदान की। मध्याह्न में पोलिटेक्निक कॉलेज के सौ से अधिक विद्यार्थियों को पूज्यवर से पावन संबोध प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों ने पूज्यवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए। संस्थान के निदेशक श्री विजय सिंह ने आचार्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए।

8 फरवरी, 2015 को आचार्यवर कौशाम्बी जनपद की सीमा में प्रवेश किया। मार्गवर्ती अझुवा गांव के ग्रामीण आचार्यवर की पावन प्रेरणा से लाभान्वित हुए। डोरमा-डोलची गांव में आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में

पंडित शब्द की व्याख्या करते हुए संयम की चेतना को विकसित बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

9 फरवरी, 2015 को आचार्यप्रवर गनपा स्थित विधि प्राइमरी स्कूल में पधारे।आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में जैन आगम दसवेआलियं की चर्चा की।

10 फरवरी, 2015 को आचार्यप्रवर प्रातः कसिया की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में गुलामीपुर, अन्दावां, कल्याणपुर, केशपुर और ककोडा के ग्रामीण आचार्यवर की पावन प्रेरणा से लाभान्वित हुए।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में आत्मवाद की व्याख्या की। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों और ग्रामीणों ने पूज्यवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

11 फरवरी, 2015 को आचार्यवर ने प्रातः मूरतगंज की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में कोखराज एवं मूरतगंज के ग्रामीणों को पूज्यवर से पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। अनेक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। कोखराज के थाना प्रभारी श्री जे.पी. यादव तथा सबइंस्पेक्टर श्री बबलू सिंह ने मार्ग में पूज्यवर के दर्शन किए। सेंट जेड कान्वेंट स्कूल में आचार्यप्रवर ने समुपस्थित शिक्षकों को संबोधित किया और सर्वांगीण शिक्षा को अपनाने एवं बच्चों को सुसंस्कार देने पर बल दिया। शिक्षकों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

12 फरवरी, 2015 को आचार्यवर कोइलहा स्थित शहीद कैप्टन विजयप्रताप स्मारक महाविद्यालय पधारे।

आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन प्रवचन में हेय, ज्ञेय, उपादेय की व्याख्या की और हेय को छोड़ने, ज्ञेय को जानने और उपादेय को ग्रहण करने की प्रेरणा दी।

प्राचार्य डॉ. श्रीनारायण शुक्ला ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किया। मध्याह्न में कॉलेज की शिक्षिकाओं ने पूज्यवर के दर्शन कर पावन संबोध प्राप्त किया।

13 फरवरी, 2015 को आचार्यप्रवर बमरोली स्थित श्रीमती फूलपतीदेवी इण्टर कॉलेज में पधारे। संस्थान के प्रबंधक श्री रोशनलाल, प्रिंसिपल जरल डिसूजा तथा विद्यार्थियों ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान आचार्यवर ने ज्ञान के साथ सदाचार के विकास की प्रेरणा प्रदान की।

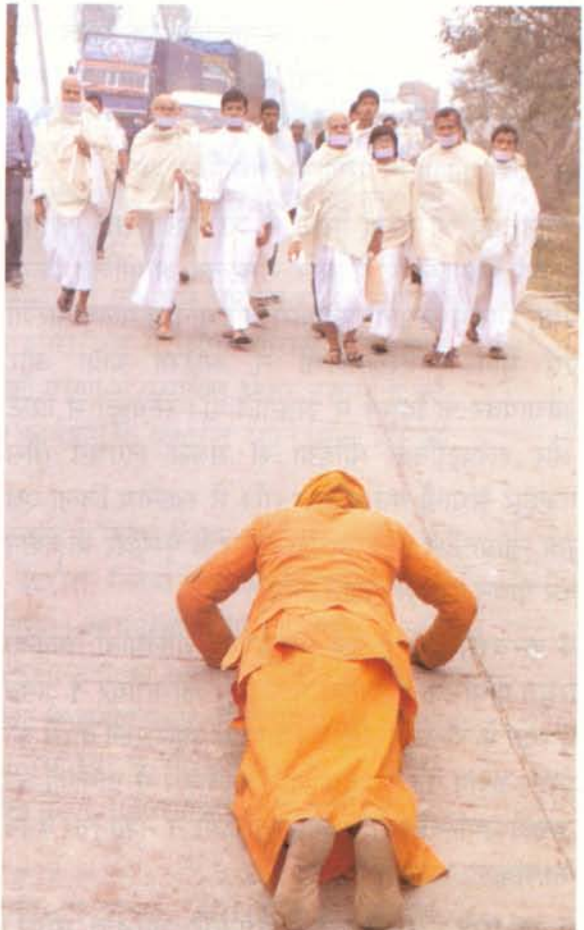

14 फरवरी, 2015 को आचार्यवर इलाहाबाद के मीरापुर स्थित लाजपत शिशु विहार में पधारे। स्थानीय जैन समाज डॉ. प्रेमचन्द जैन, विश्व हिन्दू परिषद के प्रान्तीय उपाध्यक्ष श्री पुनीत वर्मा, विश्व हिन्दू परिषद के प्रान्त संगठन मंत्री श्री मनोज श्रीवास्तव, इलाहाबाद के अनेक संन्यासी कार्यक्रम में उपस्थित थे। फलाहारी आश्रम के श्री रामरतनदासजी महाराज, सुदामा कुटी के लालबाबा, योगी राजकुमारजी महाराज आदि संन्यासियों ने भावांजलि अर्पित की। आचार्यवर ने अपने प्रवचन में गुरु के महत्त्व को प्रतिपादित किया।

15 फरवरी, 2015 को पूज्यवर अंदावां पधारे। आचार्यवर ने खाद्यसंयम, इन्द्रियसंयम, कायसंयम, वाणीसंयम, मनःसंयम आदि पर प्रकाश डाला।

16 फरवरी, 2015 को आचार्यवर हरिपुर पधारे। हरिपुर ग्राम प्रधान श्रीमती किरण पाण्डे के पति श्री आलोक पाण्डे आदि ग्रामवासियों ने आचार्यवर की भावभीनी अगवानी की। पूज्यवर की प्रेरणा से लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण किया।

आचार्यप्रवर ने श्रेय और प्रेय पर प्रकाश डाला और श्रावक शब्द की व्याख्या करते हुए उसकी श्रद्धा, कर्तव्य-अकर्तव्य के प्रति विवेक को उद्‌घाटित किया।

17 फरवरी, 2015 को पूज्यवर ने हंडिया की ओर प्रस्थान किया। इलाहाबाद से बनारस की ओर जाते समय इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री शशिकान्त शर्मा ने वाहन से उतरकर पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यवर ने उन्हें संक्षिप्त संबोध प्रदान किया।

पूज्यप्रवर हरप्रताप यादव महाविद्यालय में पधारे। अवकाश होते हुए भी महाविद्यालय के प्रबंधक श्री ब्रह्मप्रकाशसिंह यादव, प्रवक्ता श्री संतोष यादव, प्राचार्य मुहम्मद इज्जालुल हक सहित महाविद्यालय का पूरा स्टॉफ आचार्यवर के स्वागत में उपस्थित था।

आचार्यवर ने कहा कि आदमी को इस दुर्लभ मनुष्य जीवन का लाभ उठाना चाहिए। जिनेन्द्र-पूजा, गुरु-उपासना, सत्वानुकंपा, सुपात्र दान, गुणानुराग और आप्तवाणी, आगमवाणी का श्रवण करना चाहिए और जीवन के वृक्ष को फलवान बनाना चाहिए।

18 फरवरी, 2015 को आचार्यवर रसार स्थित उर्मिलादेवी डिग्री कॉलेज में पधारे। बरौत के प्रधान श्री संतलाल यादव, महाविद्यालय के प्रिंसिपल श्री राजमणि वर्मा, श्री अजय कुशवाहा ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यवर ने सज्जन आदमी के चरित्र के कतिपय लक्षणों को विवेचित किया।

19 फरवरी, 2015 को आचार्यवर जंगीगंज पधारे। स्थानीय प्रधान श्री लल्लन यादव आदि ने आचार्यवर की आस्थासिक्त अगवानी की। ओम उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा संचालित ओम पब्लिक स्कूल के चेयरमैन श्री ओंकारनाथ मिश्रा, प्रबंधक डॉ. अभयकुमार मिश्रा, प्रिंसिपल श्री सुनील त्रिपाठी आदि ने आचार्यवर का

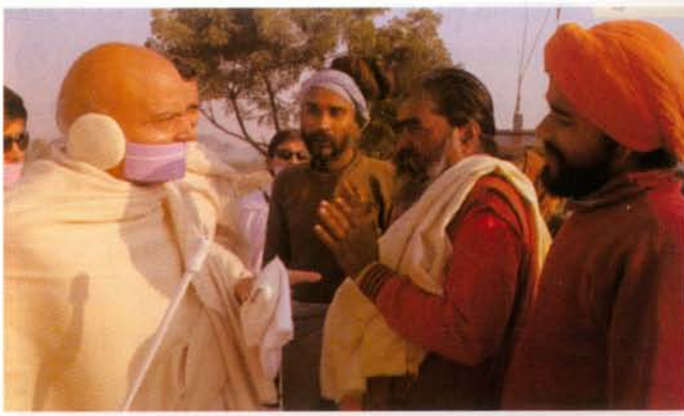

भावपूर्ण स्वागत किया।

आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि आदमी को असंयम से संयम, दुराचार से सदाचार, दुर्जनता से सज्जनता की ओर बढ़ना चाहिए। संस्था के चेयरमैन श्री ओंकारनाथ मिश्र, प्रबंधक श्री अभयकुमार मिश्र, प्रिंसिपल श्री सुनील त्रिपाठी, भदोही के विधायक की धर्मपत्नी श्रीमती सीमा बेग, त्रिवेणी कार्पेट ग्रुप के श्री शंभूनाथ पाण्डेय ने पूज्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए।

20 फरवरी, 2015 को आचार्यवर प्रातः जंगीगंज से चेतगंज की ओर प्रस्थित हुए। मार्गस्थ ककराही गांव के लोगों को पूज्यवर से पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। हसनपुर के ग्रामीणों ने पूज्यवर की प्रेरणा से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। विष्णुदासपुर प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी भी आचार्यवर की प्रेरणा से नशामुक्ति हेतु संकल्पित हुए। कार्यक्रम के दौरान आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में राग-द्वेष को प्रतनु बनाने की प्रेरणा दी।

21 फरवरी, 2015 को आचार्यवर ने प्रातः मीरजापुर के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में नयापुर, मिश्रधाम, तिल्लठी, श्रीपट्टी, मवैया, जगदीशपुर ग्राम में सैंकड़ों ग्रामीण पूज्यवर के दर्शन से लाभान्वित हुए। पूज्यवर की सेवा में तैनात उत्तर प्रदेश पुलिस का सिपाही मुनब्बर हुसैन पूज्यप्रवर के साथ पैदल यात्रा कर भावविभोर था। वर्धमान पब्लिक स्कूल में कार्यक्रम के अन्तर्गत आचार्यवर ने कहा कि आदमी जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है। इसलिए आदमी को पापाचार से बचने का प्रयास करना चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भदोही के सांसद श्री वीरेन्द्रसिंह ने कहा कि मैं आचार्यश्री के दर्शन कर स्वयं को गौरावान्वित महसूस कर रहा हूं। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति आज की जरूरत है।

22 फरवरी, 2015 को आचार्यवर दिलमन देवरिया पधारे। मानवाधिकार ब्लाक अध्यक्ष श्री देवेन्द्र मिश्रा ने आचार्यवर की भावभीनी अगवानी की। कार्यक्रम के दौरान आचार्यप्रवर ने बारह अनुप्रेक्षाओं का उल्लेख किया और कहा कि आदमी को अनित्य शरीर के द्वारा नित्य आत्मा के कल्याण का प्रयास करना चाहिए।

23 फरवरी, 2015 को आचार्यप्रवर बंधवा-पधारे। ग्राम प्रधान श्री महेन्द्रकुमार कनोजिया ने आचार्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री सुखनंदन राज ने आचार्यवर के स्वागत में अपने भावसुमन अर्पित किए।

आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में अहंकार को मृदुता से जीतने की प्रेरणा प्रदान की। मझवा ब्लाक प्रमुख डॉ. शिवजी सोनकर, विद्यालय के प्राध्यापक श्री श्रीकान्त पाठक आदि ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

24 फरवरी, 2015 को आचार्यवर बनारस के जालान गेस्टहाउस में पधारे। कार्यक्रम के अन्तर्गत आचार्यवर ने

कामना के तीनों प्रकारों का उल्लेख कर प्रमोद भावना के विकास की प्रेरणा प्रदान की।

उत्तर प्रदेश भाजपा के पूर्व संगठन मंत्री राकेश जैन, श्री कैलाश सेठिया तथा बेंगलुरु तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री गौतमचन्द कोठारी ने अपनी प्रस्तुति दी। आज प्रवचन के उपरान्त हरिद्वार से समागत स्वामी अच्युतानंदजी तथा स्वामी सर्वानंदजी ने आचार्यवर के दर्शन किए। मध्याह्न में उत्तर प्रदेश विधान परिषद के पूर्व सदस्य श्री अशोक धवन ने आचार्यवर के दर्शन कर पावन प्रेरणा प्राप्त की। रात्रि में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीशचन्द्र त्रिपाठी ने आचार्यवर के दर्शन किए।

25 फरवरी, 2015 को आचार्यवर वाराणसी के महमूरगंज-शिवपुरवा स्थित कल्याणी वाटिका में पधारे। यहां निर्मित प्रवचन पण्डाल में समायोजित कार्यक्रम में आचार्यवर ने पाप से विरत रहने की प्रेरणा प्रदान की।

वाराणसी के मेयर श्री रामगोपाल मोहिले, स्थानीय तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र मालू, मंत्री श्री राजेन्द्र सेखानी, सहमंत्री श्री पवन सुराणा, श्री शेषपाल जैन, तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री श्रीमती कविता भंसाली, पूर्व अध्यक्ष श्रीमती पुखराज बैद, पूर्व मंत्री श्रीमती मीना डोसी ने आचार्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी।

26 फरवरी, 2015 को आचार्यवर पार्श्वनाथ जैन मंदिर में पधारे। हनुमान मंदिर के निकट बड़ी संख्या में खड़े ग्रामीण लोगों को आचार्यवर से पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। अनेक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संसदीय कार्यालय प्रभारी श्री शिवचरण पाठक की प्रार्थना पर आचार्यवर रवीन्द्रपुरी स्थित उनके कार्यालय में पधारे और प्रधानमंत्री के लिए अपना संदेश प्रदान किया।

आचार्यवर यहां से प्रस्थान कर पार्श्वनाथ विद्यापीठ में पधारे। संस्थान के सचिव श्री इन्द्रभूति बरड़ आदि कार्यकर्ताओं ने पूज्यवर का आस्थासिक्त स्वागत किया। कार्यक्रम में लाइब्रेरियन श्री गोपी सिंह, श्री मृगेन्द्रराज भंसाली, संस्थान के सचिव श्री इन्द्रभूति बरड़, संयुक्त निदेशक डॉ. श्री प्रकाश पाण्डेय, प्रो. मारुतिनंदन आदि ने आचार्यवर का अभिनंदन किया और पूज्यवर के करकमलों में अनेक ग्रंथ उपहृत किए गए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के जैन-बौद्ध दर्शन विभागाध्यक्ष श्री अशोक जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में ज्ञान के महत्त्व को प्रतिपादित किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकारिणी सदस्य श्री इन्द्रेशजी ने आचार्यवर के दर्शन किए।

आचार्यवर की पावन सन्निधि में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के संस्कृत धर्म विज्ञान संकाय के अन्तर्गत जैन बौद्ध दर्शन विभाग द्वारा एक कार्यक्रम

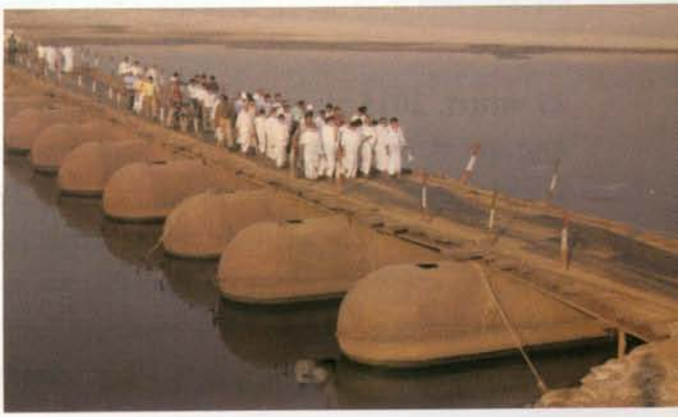

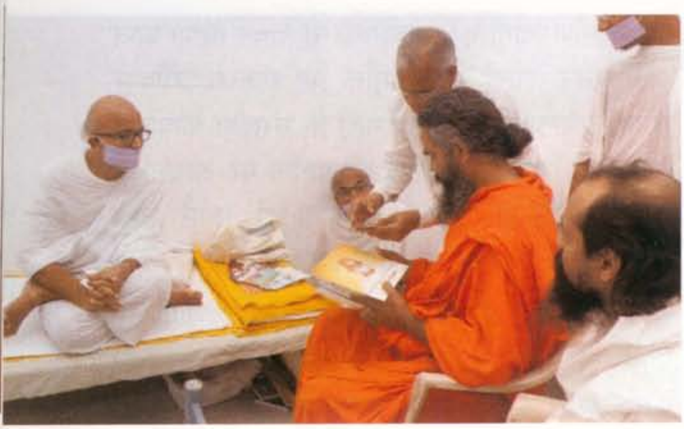

समायोजित हुआ, जिसमें मानव जीवन में अहिंसा और नैतिकता की प्रासंगिकता विषय पर कार्यक्रम समायोजित हुआ। इस कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी, वेद विज्ञान के प्राध्यापक डॉ. उपेन्द्र त्रिपाठी, जैन एवं बौद्ध दर्शन के पूर्व विभागाध्यक्ष श्री अशोक जैन, अहिंसा यात्रा प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। आचार्यप्रवर ने आमदी की श्रेष्ठता और अधमता पर प्रकाश डाला और अच्छाई व श्रेष्ठता को विकसित और बुराई व अधमता को तिरोहित करने की प्रेरणा दी।

वाणिज्य विभाग के प्रो. आशाराम त्रिपाठी, एकेडेमिक स्टॉफ कॉलेज के डायरेक्टर श्री आनंदवर्द्धन शर्मा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीशचन्द्र त्रिपाठी आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

रात्रि में नेपाल के संचार मंत्रालय के अन्डर सेक्रेटरी श्री निरंजन रिसाल ने आचार्यवर के दर्शन कर पावन प्रेरणा प्राप्त की।

27 फरवरी, 2015 को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार से प्रस्थान कर आचार्यवर केदार घाट के निकटस्थ विद्यामठ की ओर पधारे। कतारबद्ध खड़े वेद विद्या के विद्यार्थियों (बटुकों) ने वेद मंत्रों का समुच्चारण करते हुए आचार्यवर का स्वागत किया। आश्रम के बाहर ज्योतिष्पीठ और द्वारकापीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंदजी सरस्वती के प्रमुख शिष्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने आचार्यवर की भावभीनी अगवानी की। उपस्थित बटुकों (विद्यार्थियों) को पूज्यवर से पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। आचार्यवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के संकल्प भी करवाए। आचार्यवर के परिपार्श्व में स्वामी अविमुक्तेश्वरानंदजी के साथ अन्य अनेक संन्यासी, तहजीब-ए-गंगोजमन के अध्यक्ष श्री सोराज सिद्दीकी आदि चल रहे थे। कार्यक्रम में मैत्री भवन के निदेशक फादर चन्द्रकान्त, खान बाबा मस्जिद के हाजी मोहम्मद नुरुद्दीन शाह की ओर से निजामुद्दीन कामरेड, नीचीबाग गुरुद्वारा के ग्रंथी सरदार धर्मसिंह, अन्नपूर्णा मन्दिर के महन्त श्री रामेश्वरपुरीजी, विद्यामठ के प्रभारी तथा शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती के मुख्य शिष्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंदजी, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो. हरिशंकर पाण्डेय तथा श्री मनोज गुप्ता ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

आचार्यप्रवर ने कार्यक्रम के उपसंहार में कहा कि हम सभी धर्मों को सदभावना की दृष्टि से देखें।

अहिंसा यात्रा की व्यवस्था के दायित्व हस्तान्तरण के क्रम में बिहार-नेपाल स्तरीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री नेमचन्द बैद तथा उत्तर प्रदेशीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री कैलाश सिंघी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं ने बिहार-नेपाल के कार्यकर्ताओं को अहिंसा यात्रा की व्यवस्थाओं के प्रतीक के रूप में जैन ध्वज सौंपा।

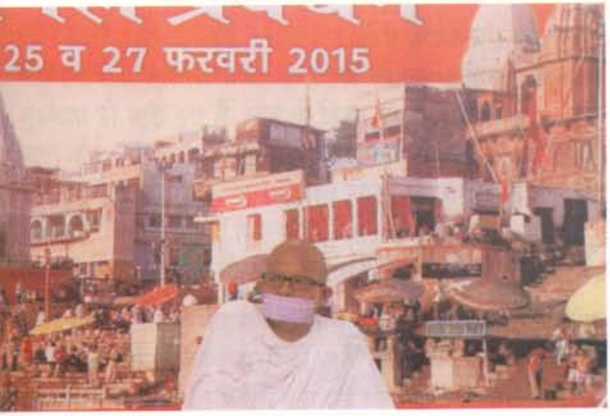

रात्रि में पिंडरा-वाराणसी के विधायक श्री अजयराज ने पूज्य आचार्यवर के दर्शन कर पावन प्रेरणा प्राप्त की।

28 फरवरी, 2015 को आचार्यप्रवर भगवान बुद्ध की प्रथम उपदेश स्थली के निकटस्थ महाबोधि सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा संरक्षित 'मूलगंध कुटी विहार' में पधारे। सोसायटी के अध्यक्ष श्रीलंका के भिक्षु विमलरत्न तथा करमापा लामा के शिष्य सोनम लामा ने आचार्यवर की अगवानी की। तिब्बती बौद्धों के चार मुख्य सम्प्रदायों - गिलूग, करग्यूय, सक्या और निमा में से करग्यूय सम्प्रदाय के प्रमुख करमापा लामा ओग्येन त्रिनले दोर्जे ने आचार्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया।

आचार्यवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति दी। करमापा लामा ने अपनी पुस्तक 'द हार्ट इज नोबल' आचार्यवर को समर्पित की। अहिंसा यात्रा प्रबन्धन समिति के जनसंपर्क प्रभारी श्री किशनलाल डागलिया ने उन्हें साहित्य भेंट किया।

आचार्यवर तिब्बती उच्च विद्या संस्थान में पधारे। कार्यक्रम में बौद्ध दर्शन के प्रो. भिक्खू वांग्चुक दोर्जे नेगी ने आचार्यवर का अभिनंदन करते हुए बौद्ध दर्शन में अहिंसा के महत्व को प्रतिपादित किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में अहिंसा यात्रा के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। तिब्बती उच्च विद्या संस्थान के कुलपति भिक्खू प्रो. लोजङ नोरबु शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्यवर ने साधु के पांच महाव्रतों की चर्चा करने के बाद हिंसा के तीन प्रकारों - आरंभजा, प्रतिरोधजा और संकल्पजा का उल्लेख करते हुए गृहस्थ समाज के लिए संकल्पजा हिंसा को परित्याग करने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ एवं न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़ भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में अहिंसा यात्रा प्रबन्धन समिति के जनसंपर्क प्रभारी श्री किशनलाल डागलिया ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री कुमारश्रमणजी ने किया।

सूचना

केंद्रीय संवादों के आदान प्रदान हेतु जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का शिविर कार्यालय परम श्रेद्धय आचार्य श्री महाश्रमण की सेवा में संलग्न है आचार्यप्रवर के नेपाल प्रवास के दौरान शिविर कार्यालय के संपर्क सूत्र इस प्रकार रहेंगे - हेमन्त बैद - + 977 98010 96960

काशी में सर्वधर्म सम्मेलन

अहिंसा यात्रा के दौरान महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी की सन्निधि में काशी स्थित कल्याणी वाटिका में सर्वधर्म सम्मेलन समायोजित हुआ, जिसमें मैत्री भवन के निदेशक फादर चन्द्रकान्त, खान बाबा मस्जिद के हाजी मोहम्मद नुरुद्दीन शाह की ओर से श्री निजामुद्दीन कामरेड, नीचीबाग गुरुद्वारा के ग्रंथी सरदार धर्मसिंह, अन्नपूर्णा मन्दिर के महन्त श्री रामेश्वरपुरीजी, विद्यामठ के प्रभारी तथा शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती के मुख्य शिष्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंदजी आदि ने सहभागिता की। इनके अतिरिक्त अनेक धर्मानुरागी व्यक्ति भी इसमें सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए फादर चन्द्रकान्त ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमणजी की यात्रा काशी के लिए ही नहीं, संपूर्ण विश्व के लिए गौरव की बात है। आचार्यश्री ! हम सभी आपके साथ हैं। स्वर्ग को धरती पर लाने की आपकी अवधारणा को हम साकार बनाएं, यही कामना करता हूं।

खान बाबा मस्जिद के हाजी मोहम्मद नुरुद्दीन शाह की ओर से श्री निजामुद्दीन कामरेड ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी की तकरीर को सुनने का मौका मिला, यह हमारी खुशनसीबी है।

नीचीबाग गुरुद्वारा के ग्रंथी सरदार धर्मसिंह ने कहा कि आज अहिंसा यात्रा में हम सभी संभागी बने हैं। यह यात्रा सफल हो। जन-जन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की चेतना पुष्ट हो, यही मंगलकामना करता हूं।

अन्नपूर्णा मन्दिर के महन्त श्री रामेश्वरपुरीजी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा बहुत बड़े संकल्प के साथ की जा रही यह विशाल पदयात्रा महायज्ञ के समान है। आचार्यश्री इस यात्रा के माध्यम से समस्त देशवासियों को अहिंसा का सन्देश देने निकले हैं। आप अपने लिए नहीं, सृष्टि के उद्धार के लिए इतना बड़ा पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह सहज कार्य नहीं, बहुत कठिन कार्य है। सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना से की जाने वाली इस यात्रा के लिए मैं आचार्यश्री महाश्रमणजी को कोटि-कोटि वन्दन करता हूं। आचार्यश्री का यह सन्देश जन-जन का उद्धार करे।

विद्यामठ के प्रभारी तथा शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती के मुख्य शिष्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंदजी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी अपने धवल चरित्र से चारों दिशाओं में अपना और अपनी गुरु परंपरा का यश फैलाते हुए अपनी धवल सेना के साथ विश्व कल्याण की

भावना से अहिंसा यात्रा करते हुए बाबा विश्वनाथ की नगरी में आए हैं। अहिंसा यात्रा के तीनों उद्देश्य अहिंसा के साथ सूक्ष्मता से जुड़े हुए हैं और वे हिंसा के मूल को नष्ट करने वाले हैं। आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा में सम्मिलित होना बहुत सुखद रहा। आचार्यश्री की सेना को धवल सेना कहा जाता है किन्तु आज हम लोगों के आपकी सेना के साथ जुड़ने से यह रंग-बिरंगी सेना बन गई।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कार्यक्रम के उपसंहार में कहा कि आज यहां विविध धर्मों से जुड़े लोगों का समागम हुआ है। कौन-सा धर्म (संप्रदाय) सबसे प्राचीन है? इसका उत्तर विवाद अथवा अनुसंधान का विषय हो सकता है। किन्तु अहिंसा धर्म सबसे प्राचीन (शाश्वत) है, ऐसा मैं कह सकता हूं। जैसे गायों के शरीरों का रंग अलग-अलग हो सकता है, किन्तु दूध सबका सफेद ही होता है। इसी प्रकार हम संन्यासियों की वेशभूषा पृथक-पृथक हो सकती है, किन्तु अहिंसा हम सबका धर्म है। हम सभी धर्मों को सदभावना की दृष्टि से देखें। परस्पर कटुता न रहे। विविध धर्मों के लोगों द्वारा हमें सम्मान-स्नेह मिला। हम उनकी भावना का सम्मान करते हैं। हम सभी आत्मकल्याण के साथ परकल्याण का कार्य करते रहें। धर्मगुरु अपने-अपने अनुयायियों पर, शिक्षण अपने-अपने विद्यार्थियों पर, माता-पिता आदि अभिभावक अपने बच्चों पर तथा मीडिया अपने-अपने पाठकों अथवा दर्शकों पर सत्संस्कारों की वर्षा करते रहे, यह काम्य है। इस प्रकार चतुर्मुखी वर्षा होती है तो भारत का अच्छा निर्माण हो सकता है। हम सभी संत आत्मोत्थान के साथ-साथ जनोत्थान का प्रयास करते रहें।

अहिंसा यात्रा में सहभागी कार्यकर्तागण

महामनीषी आचार्य श्री महाश्रमण जी की जन कल्याणकारी अहिंसा यात्रा में फरवरी, 2015 के दौरान महासभा के उपाध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया के सहयोगी के रूप में जिन कार्यकर्ताओं ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं और जन संपर्क का कार्य किया, उनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं – **चेन्नई** के श्री कुशल बांठिया, श्री रवि पटावरी, **कांदीवली, मुंबई** के श्री तेजकरण चोरड़िया, श्री नवीन डागलिया, श्री ज्ञानमल भंडारी, श्री भेरूलाल डागलिया, **विरार, मुंबई** के श्री तेजराज हिरण, श्रीमती लीलाबाई सोलंकी, श्री मुकेश बाफना, श्री राकेश सोलंकी, श्री कन्हैयालाल जैन, श्री राजमल बेताला, श्री रमेश कुमार हिगंड, श्री मनीष बाफना, श्री जयंत रांका, श्री तिलोकचंद चोरड़िया, श्रीमती रेखा मनीष बाफना, **टोहाना** के श्री विनीत कुमार जैन, श्री प्रवेश जैन, श्री समीर जैन, श्री नीरज जैन, **गोहाटी** के श्री सुरेश मालू, श्री अंकुश महणोत, श्री अशोक कुमार बोरड़, **जोरहाट** के श्री रोहित दुगड़, **पूर्णिया** के श्री राहुल गिड़िया एवं श्री नवरत्न दुगड़, श्री चेतन नाहटा, श्री आशीष कोचर, **सायन कोलीवाड़ा, मुंबई** के श्री सुरेश मेहता, श्री सुभाष मेहता, श्रीमती सीमा जैन, श्री अरविंद जैन, **सांताक्रुज, मुंबई** के श्री नरेंद्र बाबेल, श्री लक्ष्मीलाल चपलोत, श्री महेश कोठारी, श्री शैलेस वडाला, श्री भूपेंद्र वडाला, श्रीमती कामिनी जैन, भायंदर, मुंबई के मीठालाल बरलोटा, श्री भूपेंद्र कुमार, श्री राजू कोठारी, श्री भरत कोठारी, श्री मदन राठौर, श्री भगवतीलाल बारमेचा, श्री प्रवीण कुमार जैन, श्री निर्मल जैन, श्री अर्जुनलाल हिंगड़, श्री दिलीप कोठारी, **गोरेगांव, मुंबई** के श्री सुरेश ओस्तवाल, श्री महावीर चंडालिया, श्री राकेश जैन, श्री मनोहरलाल चौधरी, श्री अशोक चौधरी, **मलाड** के श्री रोशन डागलिया, श्री राजेंद्र मुणोत, श्री भेरूलाल चपलोत, श्री रतनलाल लोढ़ा, श्री गणेशलाल कोठारी, श्री ललित बाफना, श्री ज्ञानचंद बाफना, श्री उत्तमचंद लोढ़ा, श्री भीमराज कच्छारा, श्री देवेंद्र कावड़िया, श्री रमेश सोलंकी, श्री मनसुख धींग, श्री मनोहर, श्री प्रकाशचंद सिंघवी, श्री मदनलाल सिरोया, **मुंबई सभा** के श्री विनोद कच्छारा, श्री भगवतीलाल सुराणा, श्री सुनील कच्छारा, श्री भीकमचंद नाहटा, श्री अर्जुन बाफना एवं श्री भेरूलाल, **ए एम वी एन एफ** के श्री सुमेर सुराणा, श्री महेश अग्रवाल, श्री मनोज चोरड़िया, श्री नरेंद्र पोरवाल, श्री नवरत्न सुराणा, श्री मीठालाल सिसोदिया, श्री प्रकाश सिसोदिया, श्री प्रदीप ओस्तवाल, श्री सुजित जवेरी, श्री नरेंद्र मुणोत, श्री रमेश सिंघवी और श्रीमती शान्ता सुराणा।

ज्ञानशाला संवाद

ज्ञानशाला लोकोत्तर ज्ञान व संस्कार निर्माण का महत्वपूर्ण उपक्रम है। इसमें ज्ञान, आचार, विचार, संस्कार व व्यवहार का विकास कराया जा सकता है। इसी दृष्टिकोण के तहत पूरे देश में सभाओं के माध्यम से ज्ञानशालाओं का संचालन किया जाता है। यहाँ प्रस्तुत है ज्ञानशाला से संबंधित गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बोईसर द्वारा ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बोईसर के तत्त्वावधान में बोईसर में त्रिदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 1, 2, 3 फरवरी, 2015 को किया गया। शिविर में प्रशिक्षण देने के लिए अहमदाबाद से उपासक संयोजक श्री डालिमचन्द नौलखा का पधारना हुआ। 21 बहिनों ने इस शिविर में तीन दिनों तक अलग-अलग विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षकों ने तत्त्वज्ञान, भिक्षु विचार दर्शन, जैन परम्परा का इतिहास, अध्यापन शैली व ज्ञानशाला का संचालन आदि विषयों पर उपयोगी प्रशिक्षण प्रदान किया। श्री डालिमचन्द ने सभी विषयों को बहुत ही सरलता और रुचिपूर्वक समझाया।

दिनांक 1 फरवरी, 2015 को रात्रिकालीन संगीत संध्या का आयोजन किया गया। श्री नौलखा ने म्यूजिकल ट्रेक पर मधुर संघीय गीतों का संगान किया। कार्यक्रम में भाई-बहिनों एवं बच्चो की अच्छी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीमती करुणा ढालावत, श्री दिलीप राठोड़, श्री विनोद चत्रावत, श्री चन्द्रप्रकाश सोलंकी, श्री राकेश खोखावत, श्री गौतम ओरतवाल, श्री भावेश परमार आदि महानुभावों ने अपने श्रम और समय का नियोजन किया।

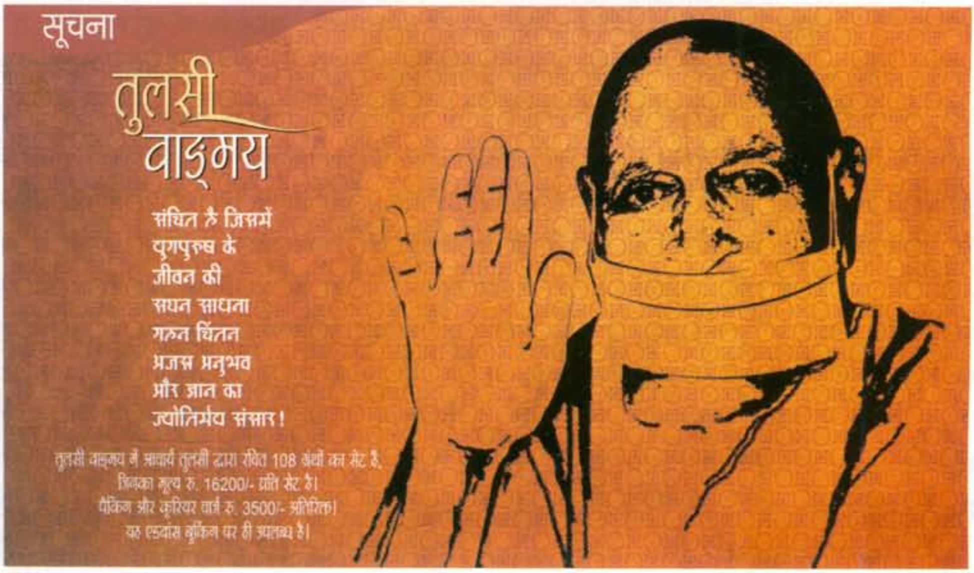

सभा संवाद

तेरापंथी श्रावक समाज के विकास में देशभर में फैली सभाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। उसका लक्ष्य है तेरापंथी समाज को आत्मोन्नयन की दिशा में अग्रसर करना और उनके सर्वविध कल्याण के लिए कार्य करना। धर्म, अध्यात्म, मानव कल्याण तथा व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में गुरुप्रवर के इंगित के अनुसार कार्य करते हुए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना भी उसका उद्देश्य है। इस प्रयोजन की पूर्ति हेतु देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित सभाओं द्वारा केंद्र के दिशानिर्देश के अनुसार विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया जाता है।

सभाओं में विराजित चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में सभाओं के तत्वावधान में विभिन्न धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में समय-समय पर भिन्न-भिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि पूरे देश में संस्कारित समाज का निर्माण और आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व का विकास हो सके। महासभा द्वारा इस पत्रिका के माध्यम से सभाओं के क्रियाकलापों की जानकारी प्रस्तुत कर अन्य सभाओं एवं समाज के लोगों को प्रेरित करने का प्रयास किया जाता है। इसी क्रम में प्रस्तुत है विभिन्न सभाओं द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी।

साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा

यादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी व्याख्यान माला का आयोजन

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के संदर्भ में सामाजिक एवं धार्मिक समरसता में अनेकान्त की भूमिका को विश्लेषित करने वाला एक सेमिनार यादवपुर विश्वविद्यालय एवं साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशन, बंगाल के अंतर्गत यादवपुर विश्वविद्यालय के इन्दुमती सभागृह में आयोजित किया गया।

समणी निर्देशिका डॉ. सत्यप्रज्ञाजी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि सच्चाई को समझने के लिए अनेक आयाम चाहिए। बगीचे में विविध फूल आकर्षण का हेतु बनते हैं।

बहुआयामी दृष्टि से ही समग्रता की समझ संभव है। अनेकान्त इन्हीं आयामों की ओर इशारा करता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ की पंक्तियों को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा -

सत्य उतना ही नहीं जितना कि मैं हूं जानता
व्योम उतना ही नहीं जितना कि मैं हूं मानता।
यह असीम, इसे न अपने सदन तक सीमित करो
पर-सदन में भी गगन, इस सत्य को स्वीकृत करो।

प्रमुख वक्ता समणी डॉ. रोहिणीप्रज्ञाजी ने पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन के साथ अंग्रेजी भाषा में अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ व वर्तमान में आचार्य महाश्रमण दूरद्रष्टा आचार्य हैं। इन्होंने एक संप्रदाय के आचार्य होते हुए भी सार्वभौम की स्थापना व नैतिक समाज निर्माण का दिशा-दर्शन दिया। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, अहिंसा-प्रशिक्षण, सापेक्ष अर्थशास्त्र, सद्भावना का प्रसार, नैतिकता के प्रति निष्ठा आदि धर्म के व्यापक रूप हैं। अनेकांत का सामाजिक-धार्मिक समन्वयपरक रूप है। सभी अपने धर्म में स्थिर रह कर उच्च श्रद्धा का परिचय देते हैं, दूसरों का खण्डन न करते हुए उनके प्रति भी सम्मान व्यक्त करते हैं। अनेकांत के इस सूत्र से सौहार्द चेतना को सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

की नोट एड्रेस में अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रो. अरुण कुमार मुखर्जी, डायरेक्टर, सेंटर फॉर कम्पेरेटिव रिलीजन, एन.सी.ई.बंगाल ने कहा कि जैन दर्शन का महत्वपूर्ण सिद्धांत अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह है। अनेकांतवाद दूसरों के विचारों को सम्मान देते हुए सही ढंग से जीना सिखाता है। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के अवदान सामाजिक समरसता को सुदृढ़ बनाने में बहुत महत्व रखते हैं। आचार्य श्री तुलसी ने सामाजिक क्षेत्र में एकता की बुनियाद प्रस्तुत करते हुए कहा कि इंसान पहले इंसान। यह सिद्धांत उनके समूचे जीवन में क्रियान्वित होता रहा। उनका सारा प्रयत्न मानवीय एकता की दिशा में महत्त्वपूर्ण अवदान के रूप में सदा याद किया जाएगा।

आचार्य महाप्रज्ञ एक महान शिक्षक थे। मैं स्वयं को उनके एक विद्यार्थी के रूप में मानता हूँ। जैन तत्त्व चिंतन को जीवन व समाज में कैसे लागू किया जा सकता है - यह दृष्टि सदा वे देते रहे हैं। इस व्याख्यान माला का प्रारंभ उन्हीं के अवदानों की एक अभिव्यक्ति देने का अवसर है। साउथ सभा कलकत्ता का भी इस आयोजन में बड़ा योगदान है। आचार्य श्री की दृष्टि व साउथ सभा के व्यवस्थाओं ने इस कार्य को सुगम बनाया

है। यादवपुर यूनिवर्सिटी समाज शास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रुबी सेन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज शास्त्र व धर्म के संदर्भ में कार्य हेतु यू. जी. सी. ने एक विशेष क्षेत्र हमें प्रदान किया है। समाज को समझने के लिए धर्म को समझने की जरूरत है। इतिहास के परिप्रेक्ष्य में धर्म और समाज के अध्ययन से मानव, समाज और विकास के अनेक सूत्र हमें हस्तगत हो सकते हैं।

अध्यक्षीय भाषण प्रदान करते हुए जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ ने आचार्य श्री तुलसी के जीवन व अवदानों की विस्तृत चर्चा की। आचार्य तुलसी के संदर्भ में हो रही यादवपुर यूनिवर्सिटी में व्याख्यान माला के लिए उन्होंने शुभकामनाएँ दी।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल की रमन पटावरी द्वारा प्रस्तुत किया गया। स्वागत भाषण प्रोफेसर आनंद देब मुखर्जी, जनरल सेक्रेटरी एन.सी.ई.बंगाल द्वारा दिया गया। धन्यवाद ज्ञापन साउथ कलकत्ता सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल बैद ने किया। कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी सुश्री सुस्मिता ने किया।

होली स्नेह मिलन एवं हास्य कवि सम्मेलन

साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता द्वारा बृहस्पतिवार दिनांक 5 मार्च, 2015 को कला मंदिर में होली स्नेह मिलन एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

देश के मूर्धन्य कवियों में डॉ. कैलाश मण्डेला, श्री सुरेन्द्र दुबे, डॉ. कीर्ति काले, श्री गोविन्द राठी एवं श्री नन्द किशोर 'अकेला' की कविताओं में सामाजिक विषयों पर गंभीर मगर सटीक चुटकियों के साथ सामाजिक कुरीतियों पर जहां कवियों ने कटाक्ष किया, वहीं समाज में बेटियों एवं नारी शक्ति की महत्ता को उजागर करने वाली कविता 'कुण केवे तने काली' प्रस्तुत कर खचाखच भरे ऑडिटोरियम को भावविभोर कर दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की सदस्या डॉ. सुनीता सेठिया ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ की। सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल बैद ने स्वागत भाषण दिया तथा आमंत्रित कविवृंद व जनमेदिनी को होली की शुभकामनाएं देते हुए सभा की गतिविधियों का उल्लेख किया। आगंतुक कविगण का परिचय संयोजक श्री जीवराज सेठिया ने दिया। आमंत्रित कवियों का सभा के मुख्य न्यासी श्री बाबूलाल बोथरा, उपाध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा कोठारी, मंत्री श्री विजय चोरड़िया, सहमंत्री श्री भूपेन्द्र दुगड़, उपाध्यक्ष एवं संयोजक श्री जीवराज सेठिया ने दुपट्टा एवं गुलदस्ता भेंट कर सम्मान किया।

महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़, महामंत्री श्री विनोद बैद व विकास परिषद के सदस्य श्री बनेचन्द मालू एवं श्री बुद्धमल दुगड़, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया एवं जीतो, कोलकाता के अध्यक्ष श्री विनोद दुगड़, जय तुलसी फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी श्री सुरेन्द्र कुमार दुगड़, महासभा के न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़, साउथ सभा के सहमंत्री श्री भूपेन्द्र दुगड़, श्री खेमचन्द रामपुरिया की उपस्थिति ने इस आयोजन की सफलता में श्रीवृद्धि की।

काव्य संध्या के समापन पर साउथ सभा के मंत्री श्री विजय चोरड़िया ने आमंत्रित कवियों, प्रायोजकों, उपस्थित महानुभावों, सभा के कार्यकारिणी सदस्यों व कार्यकर्ताओं को हार्दिक साधुवाद दिया एवं श्री शैलेन्द्र बोरड़, श्री कमल कोचर, श्री बाबूलाल डागा, श्री महाबीर दुगड़ एवं उनकी टीम के सहयोग हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उदयपुर

निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा एवं चित्तरंजन मोबाइल यूनिट के संयुक्त तत्वावधान में उदयपुर में अणुव्रत चौक स्थित तेरापंथ भवन में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री राजकुमार फत्तावत द्वारा किया गया। शिविर में 104 रोगियों की ब्लड शुगर, थायराइड, एच.बी.ए.1 सी, ब्लड प्रेशर, न्यूरोपेथी तथा नाक, कान की जांच कर आवश्यक परामर्श दिया गया। शिविर में मोबाइल यूनिट प्रभारी डॉ. राजेन्द्र सामर इ. एन. टी. विशेषज्ञ डॉ. भानु प्रकाश ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं। इस अवसर पर तेरापंथी सभा के श्री शांतिलाल सिंघवी, श्री सुबोध दुगड़, श्री अर्जुन खोखावत, श्री धीरेन्द्र मेहता, श्री विनोद माण्डोत, श्री दीपक सिंघवी, श्री विनोद माण्डोत द्वितीय, श्री हेमंत जैन, श्री लादूलाल मेड़तवाल आदि ने अपनी सराहनीय सेवाएं दीं।

स्वस्थ एवं सुखी सम्बन्ध पर संगोष्ठी का आयोजन

साध्वीश्री कनकश्रीजी, ठाणा-5 के सान्निध्य में तेरापंथी सभा उदयपुर के तत्वावधान में महाप्रज्ञ विहार में सुखी एवं स्वस्थ सम्बन्धों पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर साध्वीश्री कनकश्रीजी ने कहा कि हम सम्बन्धों में जीते हैं। सम्बन्ध का होना और उसका सुखद होना दोनों अलग-अलग है। रिश्तों में एक-दूसरे की भावनाओं को समझना होता है, तभी वे स्वस्थ हो सकते हैं। स्वस्थ शरीर के लिए खुश रहना जरूरी है। आज आदमी गुस्सा, चिंता, निराशा, भय में रह रहा है। रिश्ते तार-तार हो रहे हैं। रिश्तों में गरिमा, माधुर्य होना चाहिए। कई परिवार आज भी सामूहिक रूप से रहते हैं। उनसे सुखी संभवतः कोई नहीं। परिवार ही बचपन, जवानी और बुढ़ापे की स्थली है। परिवार में महिला अपने दायित्व का तो पुरुष अपने दायित्व का निर्वहन करते हैं। आज बड़े परिवार बहुत कम देखने को मिलते हैं। मां-बाप अकेले रहते हैं। जब 70 वर्ष के बुजुर्ग ये कहते हैं कि हम परिवार के कारण आपके दर्शन के लिए

सूचना

तुलसी स्मृति ग्रंथ

जो समर्पित है...
उनकी प्रभावना को
उनके विचारों को
उनकी कहानियों को
और स्वयं उनको।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष पर प्रकाशित तुलसी स्मृति ग्रंथ आगामी शताब्दियों के लिए अद्वितीय साबित होगा। अध्ययन और प्रेरणा का स्रोत बनेगा। ग्रंथ का आध्यात्मिक पहलू इसे अलौकिक बनाता है और संस्मरण जे जुड़ा भाग मानवीय पहलू दिखाता है।

तुलसी स्मृति ग्रंथ एडवांस बुकिंग पर ही उपलब्ध है। ग्रंथ का विक्रय मूल्य पैकिंग एवं कूरियर चार्ज सहित रु. 6500/- है।

कृपया स्मृति ग्रंथ के बुकिंग हेतु महासभा के प्रधान कार्यालय से संपर्क करें।

नहीं आ पाते तो खुशी होती है। जीवन शैली संतुलित होती है तो सब कुछ स्वस्थ होता है। मानवीय मनोवृत्तियां बदल गई हैं। परिवार में विश्वास मिले, वात्सल्य, विवेक, विनय मिले, यह जरूरी है।

साध्वीश्री मधुलता ने कहा कि सुखी और स्वस्थ सम्बन्धों के लिए तीन सूत्र हैं - समझना, सम्मान देना और सहन करना। जो इन तीन का पालन कर ले, वह सबसे सुखी है। सुखी एवं प्रसन्न सम्बन्धों के लिए कुछ झुकना आना चाहिए तो कुछ झुकाना भी आना चाहिए।

सुविवि के जैन एवं प्राकृत विभाग के संस्थापक एवं जैन विद्वान प्रो. प्रेमसुमन जैन ने कहा कि स्वस्थ एवं सुखी सम्बन्धों के लिए आपसी सामंजस्य काफी आवश्यक है। आज के इस युग में पुरुषों व महिलाओं दोनों की महती आवश्यकता है। आपस के सम्बन्धों को भूलना नहीं चाहिए। आपसी सम्बन्ध सुखी होंगे तो सब कुछ सर्वदा सुखी होगा।

साध्वीश्री मधुलताजी, साध्वीश्री मधुलेखाजी, साध्वीश्री वीणाकुमारीजी एवं साध्वीश्री समितिप्रभाजी ने सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की।

मंगल भावना समारोह

उदयपुर सभा द्वारा साध्वीश्री कनकश्रीजी ठाणा-5 के विदाई समारोह के अवसर पर अणुव्रत चौक स्थित तेरापंथ भवन में मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि साधु-संतों का तो आना भी मंगल होता है और जाना भी मंगल। कहते हैं ना कि पानी और संत एक जगह ठहर जाएं तो अच्छे नहीं लगते। साधु संतों को तो जनता का मार्गदर्शन करना है। आज यहां तो कल वहां उन्हें तो निरंतर चलते ही रहना है। उन्होंने कहा कि नौ माह के प्रवास के दौरान निरंतर जैन श्रावक-श्राविकाओं ने धर्म लाभ लिया। हम आपकी मंगल भावनाओं को अपनी भक्ति और शक्ति के रूप में लेते हैं। उन्होंने कहा कि जागरूकता का जीवन जीएं। अपने प्रति, अपनी सोच के प्रति तथा अपने व्यवहारों के प्रति जागरूक रहें। किसी के प्रति दुर्भावना न रखें और स्वयं को सदैव प्रसन्न रखें।

साध्वीश्री मधुलता ने कहा कि देव, गुरु, धर्म के प्रति अटूट श्रद्धाशील बने रहें। हमेशा अच्छा ही अच्छा होगा। साध्वीश्री समितिप्रभा ने गीत प्रस्तुत किया जिस पर पूरा सभागार ओर अर्हम् की ध्वनि से गूंज उठा।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री राजकुमार फत्तावत, तेयुप अध्यक्ष श्री अभिषेक पोखरना, सभा के मुख्य परामर्शक श्री छगनलाल बोहरा ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन उपाध्यक्ष श्री सुबोध दुगड़ ने किया। आभार तेयुप मंत्री श्री अजित छाजेड़ ने जताया। आरंभ में मंगलाचरण चन्द्र पोखरना एवं मिनी सिंघवी ने किया।

अध्यात्म और विज्ञान विषय पर पाँचवीं आचार्य महाप्रज्ञ व्याख्यानमाला

साध्वीश्री कनकश्रीजी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उदयपुर और सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में महाप्रज्ञ विहार में पांचवीं आचार्य महाप्रज्ञ व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री कनकश्रीजी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अध्यात्म को विज्ञान के साथ जोड़ा। मानवीय, संवेदनशील समस्याओं के समाधान के लिए दोनों का समावेश जरूरी है। इस वैज्ञानिक युग में विज्ञान खोज कर ही रहा है। सत्य की खोज करो, अन्वेषण करो।

मुख्य वक्ता प्रो. पी. एम. अग्रवाल ने कहा कि जैन धर्म में छह द्रव्य जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल का समावेश है। पांच द्रव्यों की विशेषता अध्यात्म है लेकिन विज्ञान भी इन पांचों की महत्ता को मानता है।

संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने व्याख्यानमाला की अध्यक्षता करते हुए कहा कि अगर प्रयोजन पूर्ण न हो तो ऐसे विज्ञान-अध्यात्म की आवश्यकता नहीं है। तपस्वियों, ऋषि मुनियों का हमारा देश है। जो अनुभूत किया गया, वह ज्ञान है। पारंपरिक, सार्वभौमिक, सार्वकालिक ज्ञान ही विज्ञान है। ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय तीनों अलग-अलग हैं। जो अनुभूत हो सके, उसे अंगीकार करना चाहिए। भूखे को भोजन मिले, यही प्राथमिकता है। किस तरह की थाली, पत्तल में मिले यह नहीं।

इससे पूर्व साध्वी मधुलता ने कहा कि पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने अपना जन्म दिन आचार्य महाप्रज्ञ के चरणों में मनाया। आचार्यश्री ने उनसे कहा कि आप मिसाइलमैन हैं। आप ऐसी मिसाइल बनाएं कि विश्व में शांति और सद्भावना का विकास हो।

साध्वीवृंद मधुलताजी, समितिप्रभाजी, वीणाकुमारीजी, मधुलेखाजी ने मधुर गीतिका प्रस्तुत की। सॉफ्टवेयर इंजीनियर के बाद वैराग्य धारण करनेवाली साध्वीश्री समितिप्रभाजी ने कहा कि ऋषि-मुनियों ने अतीन्द्रिय चेतनाओं से जो ज्ञान उजागर किया, जो भीतर का ज्ञान है, वह अध्यात्म है। सुख-सुविधाओं की उपलब्धता आज विज्ञान के कारण है। दोनों की अवस्थिति को नकारा नहीं जा सकता। आध्यात्मिकता और वैज्ञानिकता का समन्वय जरूरी है।

सभाध्यक्ष श्री राजकुमार फत्तावत ने कहा कि सुविवि के विवेकानंद सभागार से आरंभ हुई यह व्याख्यानमाला सतत जारी है। उस वैज्ञानिक महामानव को श्रद्धांजलि अर्पित करने का सभा का उद्देश्य है जिसके क्रम में ये व्याख्यानमालाएं हो रही हैं। आचार्य महाप्रज्ञ की शिक्षा दीक्षा किसी विश्वविद्यालय में नहीं बल्कि आचार्य तुलसी के सान्निध्य में ही हुई। विश्व भर के विद्वान आचार्य महाप्रज्ञ की विद्वता से अचंभित थे। विज्ञान महाविद्यालय में हुए कार्यक्रम में वहां के न सिर्फ छात्र बल्कि फेकल्टी मेंबर्स तक चकित थे।

सूचना

सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एक सुंदर, आकर्षक एवं उपयोगी स्मारिका आचार्यप्रवर के चित्र एवं जन्म शताब्दी के मीनाकारी युक्त लोगो सहित सिल्वर प्लेटेड कॉइन के साथ प्रकाशित की गई है। इस स्मारिका में कॉइन के साथ गुरुदेव के जीवन से जुड़े विशिष्ट प्रसंगों की सचित्र प्रस्तुति दी गई है। सचित्र कॉइन युक्त यह स्मारिका प्रत्येक परिवार हेतु एक संग्रहणीय निधि है।

इसे यथासंभव तेरापंथी समाज के सभी परिवारों के साथ-साथ जन-साधारण तक पहुँचाने की दृष्टि से प्रति स्मारिका (कॉइन सहित) मात्र 300 रु. की सहयोग राशि पर सुलभ कराया जा रहा है। इसकी अग्रिम बुकिंग हेतु महासभा कार्यालय से संपर्क करें।

दिल्ली में राज्य सभा सांसद एवं पांचजन्य के पूर्व संपादक माननीय श्री तरुण विजय जी को उनके आवास स्थल पर आचार्य तुलसी सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका भेंट करते हुए महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ एवं न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़।

आभार ज्ञापन सभा के उपाध्यक्ष श्री सुबोध दुग्गड़ ने व्यक्त किया। इससे पूर्व सभा के मार्गदर्शक श्री छगनलाल बोहरा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री अभिषेक पोखरना, श्री अजीत छाजेड़, श्री कपिल इंटोदिया आदि ने अतिथियों का उपरणा, साहित्य व स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनंदन किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता

सम्मेद शिखर में साध्वी त्रिशलाकुमारीजी, ठाणा-5 का भावभरा अभिनंदन

दिनांक 15 फरवरी, 2015 को बृहत्तर कोलकाता एवं वर्द्धमान, दुर्गापुर, आसनसोल, चास-बोकारो आदि अनेक क्षेत्रों के श्रावक समाज की उपस्थिति में 20 तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि पावन धरा सम्मेद शिखर में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता के आयोजकत्व में दिल्ली से कोलकाता की यात्रा के मध्य साध्वी त्रिशलाकुमारीजी, ठाणा-5 का शिखरजी पदार्पण पर अभिनंदन समारोह मनाया गया।

कोलकाता के विभिन्न क्षेत्रों से बसों, ट्रेन व निजी वाहन के माध्यम से लगभग 350 की संख्या में श्रावक समाज सम्मेद शिखर पहुंचा। साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी अपनी सहवर्तिनी साध्वीवृंद साध्वीश्री मणिप्रभाजी, साध्वीश्री पुनीतप्रभाजी, साध्वीश्री कल्पयशाजी व साध्वीश्री रश्मिप्रभाजी के साथ फरीदाबाद से दिनांक 16 नवम्बर 2014 को पदयात्रा प्रारंभ कर हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करती हुई दिनांक 13 फरवरी 2015 को सम्मेद शिखर की पावन धरा पर पधारीं।

साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी, साध्वीश्री पुनितप्रभाजी व साध्वीश्री रश्मिप्रभाजी ने दिनांक 14 फरवरी को सम्मेद शिखर का आरोहण किया व पारसनाथ की पहाड़ी पर ध्यान-स्वाध्याय किया। रास्ते की सेवा में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने भी साध्वीवृन्द की सम्मेद शिखर की चढ़ाई के समय सेवा-उपासना का अच्छा लाभ लिया।

दिनांक 15 फरवरी, 2015 को श्वेताम्बर कोठी के विशाल प्रांगण में साध्वीवृंद के अभिवन्दन का कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी ने उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी कार्य की सफलता के लिए भक्ति, शक्ति व अनुरक्ति की आवश्यकता होती है। कोलकाता का श्रावक समाज विनम्र है। उसमें आराध्य के प्रति अपार भक्ति है, वह संघ सेवा में सक्षम है, शक्तिशाली है तथा साधु-साध्वियों के प्रति अनुरक्त है। श्रावक समाज के रोम-रोम में निष्ठा के भाव हैं। रास्ते की सेवा में कोलकाता सभा ने अध्यक्ष श्री जंवरीलाल नाहटा के नेतृत्व में पूरी निष्ठा से सेवा की है। सभा द्वारा नियुक्त सेवा प्रभारी श्री अमरचन्द दूगड़ ने अच्छा कार्य किया है। यह सेवा भावना प्रवर्धमान रहे व कोलकाता सभा पूज्य गुरुदेव की यात्रा में भी रास्ते की सेवा के दायित्व के लिए तत्पर रहे यही मंगलकामना है।

कार्यक्रम में दक्षिण कोलकाता सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल बैद, कोलकाता सभा की ओर से सेवा प्रभारी श्री अमरचन्द दूगड़, पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सामसुखा, महिला मंडल की मंत्री श्रीमती संगीता सेखानी, बाली-बेलुड़ के अध्यक्ष श्री जुगराज सिंघी, मध्य-उत्तर कोलकाता के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र संचेती, टॉलीगंज की ओर से श्री निर्मल सुराना, सेवार्थी भाई श्री नरेन्द्र पुगलिया, दुर्गापुर सभा के अध्यक्ष श्री विजयसिंह श्यामसुखा, चास-बोकारो के अध्यक्ष श्री मदन मोहन चोरड़िया, उत्तर हावड़ा सभा के मंत्री श्री राकेश संचेती ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। महिला मंडल एवं युवकों ने सुमधुर गीतों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभा के मंत्री श्री सुशील कुमार जैन (चोरड़िया) ने सम्मेद शिखर के

तेरापंथ के इतिहास से जुड़े संदर्भों का उल्लेख किया व बताया कि पारसनाथ की टोंक पर तेरापंथ के नवमाधिशास्ता आचार्य तुलसी विक्रम संवत् 2016 का कोलकाता चातुर्मास सम्पन्न कर राजस्थान की ओर यात्रा के दौरान पधारे थे। वहां उन्होंने उपस्थित श्रावक समुदाय को देशना दी व साथ ही श्रावकों व पारिवारिकजनों के निवेदन पर मुमुक्षु कला की दीक्षा की घोषणा की। यहीं मुमुक्षु कला तेरापंथ द्विशताब्दी के अवसर पर केलवा में दीक्षित होकर साध्वी कनकप्रभा बनी व आज संघ महानिदेशिका साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के रूप में संघ को अपनी अन्यतम सेवाएं प्रदान कर रही हैं।

साध्वीश्री पुनीतप्रभाजी ने श्रावक समुदाय को संबोध प्रदान किया। साध्वीश्री कल्पयशाजी ने प्रेरणा देते हुए कहा कि साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी सरलमना हैं और उसी अनुरूप हमारी मांग श्रावक समाज से सरल ही है। हम अच्छी संख्या में मासखमण, तत्वज्ञानी व वैरागी चाहते हैं। साध्वीवृन्द ने सामूहिक गीतिका का संगान किया।

साध्वीश्रीजी ने महती कृपा कर दिनांक 27 फरवरी को बंग भूमि में संभावित प्रवेश की घोषणा की व होली चौमासा दुर्गापुर प्रवासियों को बक्शाया। कोलकाता सभा की ओर से कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभा के मंत्री श्री सुशील कुमार जैन (चोरड़िया) ने साध्वीश्रीजी से महावीर जयन्ती 2015 का कार्यक्रम महासभा भवन में करवाने की पुरजोर अर्ज की, जिस पर कृपा करते हुए साध्वीश्रीजी ने महावीर जयन्ती महासभा भवन में करवाने की अनुमति प्रदान की।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दार्जिलिंग

होली चातुर्मास के अवसर पर कार्यक्रम

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी, ठाणा-6 का असम गौहाटी की ओर यात्रा करते हुए पहाड़ों की रानी दार्जिलिंग पदार्पण हुआ। साध्वीश्रीजी ने महती कृपा कर इस क्षेत्र को होली चातुर्मास प्रदान किया। पूरा दार्जिलिंग श्रावक समाज साध्वीश्रीजी की इस कृपा के प्रति गदगद एवं भावविभोर हो गया और उनके प्रति तहेदिल से कृतज्ञता ज्ञापित की। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस नगरी में श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धा-भक्ति के फूलों से भावभीना स्वागत किया।

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरणादायी उदबोधन में कहा कि दार्जिलिंग का प्राकृतिक सौन्दर्य दुनिया में मशहूर है। ऐसा लग रहा है कि प्रकृति ने अपना सारा सौन्दर्य यहां मुक्त हाथों से लुटाया है। पूज्य गुरुदेवश्री की कृपा से हमारा यहां आगमन हुआ है। श्रावकों की होली-चातुर्मास की भावना पूर्ण हुई है। अनेकों सिंघाड़ों का यहां पदार्पण हुआ है किन्तु होली चातुर्मास पहली बार मिला है। होली का अर्थ है - पवित्रता, निर्मलता। हमारी आत्मा पवित्र, निर्मल एवं उज्ज्वल बने। प्रकृति की सुन्दरता की तरह हम अपने मन को भी सुन्दर बनाएं। अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र खटेड़, श्री कमल भंसाली, श्री नरेश राखेचा, श्री विजय बरड़िया, श्री महावीर जैन आदि सभी

ने अपनी जिम्मेदारी का सम्यक निर्वहन किया है।

साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ने प्रेरक पाथेय प्रदान किया। साध्वीश्री सुधाप्रभाजी, साध्वीश्री मैत्रीप्रभाजी, साध्वीश्री समत्वयशाजी, साध्वीश्री कर्णिकाश्रीजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

श्री बाबूलाल लुणावत, श्री रतनलाल लुणावत, श्री कमल भंसाली, श्रीमती सारिका लुणावत, श्रीमती नीतु राखेचा, सुश्री सोनाली खटेड़ आदि ने अपने श्रद्धासिक्त भाव व्यक्त किए।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दुर्गापुर

दुर्गापुर में साध्वीवृंद का प्रवास

साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी दिल्ली से उग्रविहार करती हुई अपनी सहवर्तिनी साध्वियों के साथ होली चातुर्मास हेतु दुर्गापुर में पधारी। ज्ञातव्य है कि दुर्गापुर सभा ने साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी का सम्मेद-शिखर में दर्शन किया और दुर्गापुर में होली चातुर्मास के लिए अर्ज किया, जिसे साध्वीश्री द्वारा महती कृपा कर स्वीकार कर लिया। इसके पूर्व 27 फरवरी, 2015 को बराकर में गुजराती जैन समाज ने कोलकाता सभा के साथ बंग धरा पर साध्वीवृंद के प्रवेश पर उनका अभिनंदन किया।

दुर्गापुर पधारने पर साध्वीश्रीजी का दिनांक 4 मार्च का प्रवास कल्याणमित्र श्री सुरेश गोयल की फैक्ट्री में हुआ। श्री सुरेश गोयल ने अपने फैक्ट्री में साध्वीश्रीजी का व आगन्तुक सभी भाई-बहनों का हार्दिक अभिनंदन किया।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी ने कहा कि आज सहज में ही एक शुभ सहयोग मिला। आज स्व. श्री विष्णुदयालजी की वार्षिक पुण्यतिथि और स्व. श्रीमती तिलकसुन्दरी की मासिक पुण्य तिथि थी। श्री विष्णुदयाल के सम्बन्ध में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि वे आचार्यों के विशेष कृपापात्र एवं श्रद्धा भक्ति से ओत-प्रोत व्यक्ति थे। उन्होंने धर्मसंघ की जो सेवा की, विशेष रूप से उन्होंने अपने परिवार को जो संघ निष्ठा, गुरु निष्ठा के संस्कार दिए हैं वे वास्तव में बेजोड़ हैं।

फैक्ट्री के कर्मचारियों को संबोधित करते हुए साध्वीश्री ने फरमाया कि ये दुर्लभ मानव जीवन हमें मिला है। इसका हमें सदुपयोग करना है। इसे व्यसन में बरबाद नहीं करना है। जो व्यसन मुक्त होना है वही टेन्शन मुक्त होता है।

साध्वीश्री पुनीतप्रभाजी, साध्वीश्री कल्पयशाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीश्री रश्मिप्रभाजी की सुमधुर गीतिका से सभा भाव विभोर हो उठी।

कार्यक्रम के प्रारंभ में दुर्गापुर महिला मंडल ने मंगल संगान किया।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कांकरोली

होली के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन

साध्वीश्री कनकश्रीजी के सान्निध्य में कांकरोली सभा द्वारा होली के अवसर पर कांकरोली स्थित तेरापंथ भवन में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। 'रंगों का त्योहार होली' के संदर्भ में प्रवचन करते हुए कहा साध्वीश्री ने कहा कि मानवीय व्यक्तित्व और रंगों का अटूट संबंध है। रंग व्यक्ति की चित्तवृत्तियों, व्यवहारों और स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। जैसा संग वैसा रंग और जैसा रंग वैसा ढंग - आदतें और जीने का तरीका यह कहावत काफी अर्थपूर्ण है। सत्संगति, सकारात्मक सोच और अच्छी आदतें जीवन को सुनहरा बना सकती हैं। अपेक्षा है वर्तमान पीढ़ी प्रवाहपाती न बनकर अपनी जिंदगी को बदरंग बनने से बचाएं। लोक पर्व होली के मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक पक्ष को उजागर करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि हमारा बाहरी जगत और अंतर्जगत दोनों रंगमय है। प्रकृति के कण-कण में रंगों का मेला है। सूरज की सतरंगी रश्मियां जीव-जगत को

नई ऊर्जा प्रदान करती हैं। नवग्रहों के अपने रंग हैं। मंत्रों, तीर्थंकरों के अपने रंग हैं। हमारे भाव जगत के भी अपने रंग हैं। हम एक दूसरे से प्रभावित होते रहते हैं। अपेक्षा है चमकीले, सुनहरे और पवित्र रंगों का चुनाव करें। अपने भाव जगत को बदलें और व्यक्तित्व का रूपांतरण करें।

साध्वीश्री मधुलताजी आदि साध्वीवृंद ने 'होली का त्योहार सुरंगा जीवन बन जाए' इस भावपूर्ण गीत का संगान कर उपस्थित जनसभा को अध्यात्म के रंगों से रंगारंग बना दिया। साध्वीश्री मधुलेखाजी ने अपने विचार रखे। साध्वीश्री मधुलताजी ने कलर थेरेपी और कलर मेडीटेशन का महत्व बताते हुए मंत्रों के आधार पर ध्यान का प्रयोग कराया। साध्वीश्री की प्रेरणा से धर्मपरिषद में उपस्थित भाई-बहनों ने रंगों आदि से होली खेलने का त्याग किया। तेरापंथी सभा के मंत्री विनोद बडाला ने आभार ज्ञापन किया।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गांधीनगर-बैंगलोर

गांधी आश्रम में आचार्य श्री तुलसी का अमर आलेख

कुमारापार्क गांधी आश्रम में साध्वीश्री कंचनप्रभाजी, साध्वीश्री मंजुरेखाजी व साध्वीश्री चेतनाश्रीजी के आगमन पर स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री कंचनप्रभाजी ने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा कि इस वल्लभ निकेतन गांधी आश्रम के निरीक्षण में हमने अनुभव किया है कि यहाँ कण-कण में अध्यात्म बोल रहा है, हर मानस में मानवीय पवित्र व्यवहारों द्वारा प्रेम छलक रहा है। हमें प्रसन्नता है कि आचार्य श्री तुलसी के उस चातुर्मास में कर्नाटक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री सीताशरण शर्मा अध्यक्ष थे। उन्हीं के सुपुत्र श्री सिद्धार्थ शर्मा अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष हैं तथा इस आश्रम में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

साध्वीश्री मंजुरेखाजी ने कहा कि इस गांधी आश्रम में आचार्य श्री तुलसी के उस चातुर्मास की मैं स्वयं साक्षी हूँ। राष्ट्र सन्त आचार्य श्री तुलसी के प्रवचन में सैकड़ों जैन अजैन भाई-बहिनें अध्यात्म से ओतप्रोत होकर नशामुक्त नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त करते थे। आचार्य श्री तुलसी एवं भूदान आन्दोलन के प्रणेता विनोबा भावे का मिलन जन-जन के लिए परमार्थ चेतना की जागृति का संदेश था जो हर इन्सान के लिए प्रासंगिक है।

अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष श्रीर सिद्धार्थ शर्मा ने कहा कि भारतीय संस्कृति की विरासत है ऋषि परम्परा। इस आश्रम में ऋषि-महर्षि एवं सन्तों के द्वारा अनेक दस्तावेज लिखे गए हैं। आचार्यश्री तुलसी ने राष्ट्रसन्त विनोबा भावे के आत्मीय अनुरोध पर इसी आश्रम में सन् 1969 में चातुर्मासिक प्रवास कर एक कालजयी दस्तावेज लिखा था और एक नारा दिया - इन्सान पहले इन्सास, फिर हिंदू या मुसलमान। इस उद्‌घोष से न केवल कर्नाटक में बल्कि पूरे भारत में मानवतावादी विचारधारा पल्लवित हुई, अच्छाइयों की बुराइयों पर विजय हुई।

कार्यक्रम में श्री मनीष गिड़िया, श्री दिनेश नाहर, श्री मिलापचन्द दूगड़ आदि उपस्थित थे।

साध्वीश्री कंचनप्रभाजी को शासनश्री अलंकरण प्रदान किए जाने पर अभिनन्दन

कानपुर में संपन्न 151वें मर्यादा महोत्सव के ऐतिहासिक क्षणों में महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा साध्वीश्री कंचनप्रभाजी को शासनश्री अलंकरण प्रदान किए जाने के उपलक्ष्य में बैंगलोर तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में गांधी नगर स्थित तेरापंथ भवन में अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर तेरापंथ धर्मसंघ की यशस्वी आचार्य परम्परा को प्रणाम करते हुए साध्वीश्री कंचनप्रभाजी ने कहा कि शैक्षणिक विकास के साथ ज्ञान, दर्शन,

चारित्राराधना का आशीर्वाद दिया गुरुदेव श्री तुलसी, गुरुदेव श्री महाप्रज्ञजी ने। गुरुदेव श्री महाश्रमणजी के आशीर्वाद तथा महती अनुकम्पा से पूज्यवरों की कृपा से मुझे सहवर्ती साध्वियों का सुन्दर सुयोग मिला। मैं अनन्त-अनन्त कृतज्ञता के साथ विनयभाव से प्रणत हूं। महामहिम महाप्राण आचार्य श्री महाश्रमणजी के प्रति, आपश्री ने मुझे आशीर्वाद के रूप में सम्बोधन प्रदान किया। बैंगलोर का यह चतुर्मास की स्मृति में रहेगा।

साध्वी मंजुरेखाजी ने सिम्पोजियम की प्रस्तुति करते हुए कहा - तेरापंथ धर्मसंघ की अनेक प्रतिभाओं में एक प्रतिभा है साध्वीश्री कंचनप्रभाजी, जिन्होंने ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा तप की आराधना करते हुए चारों ओर अध्यात्म की रोशनी फैलाई।

साध्वी मंजुरेखाजी आदि चारों साध्वियों के साथ समणी निर्देशिका भावितप्रज्ञाजी, समणी जिनप्रज्ञाजी, समणी विपुलप्रज्ञाजी, समणी आदर्शप्रज्ञाजी, समणी संघप्रज्ञाजी तथा समणी शान्तिप्रज्ञाजी ने सुमधुर स्वर लहरियों के साथ पूज्यवरों एवं महाश्रमणीजी के संदेशों को प्रस्तुति दी तथा विशाल सभा को बताया कि साध्वीश्री कंचनप्रभाजी ने सहज ऋजुता, विद्वत्ता एवं विविध आयोजनों से शासन की श्रीवृद्धि की।

इस कार्यक्रम में तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री गौतमजी कोठारी, तेयुप अध्यक्ष श्री दिनेश छाजेड़, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा गन्ना, श्री दीपचन्द नाहर, ज्ञानशाला संयोजिका श्रीमती नीला गादिया, टी.पी.एफ. अध्यक्ष श्री माणकचन्द बदलोटा, विजयनगर सभा के मंत्री श्री पन्नालाल लूणिया, कोलकाता तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री मालचन्द भंसाली ने इस सम्मान कार्यक्रम में साध्वीश्री कंचनप्रभाजी को उनकी उपलब्धि में बधाइयां दी। कार्यक्रम का सफल संचालन सभा के मंत्री श्री कमलसिंह दूगड़ ने किया।

होली के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन

साध्वीश्री कंचनप्रभाजी ने मदनचन्दजी नाहर के आवास पर तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि पर्व जीवन में बहार लेकर आते हैं। उनका सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्य होता है। आज होली का त्योहार है, यह रंगों का त्योहार भी है। रंग हमारे जीवन व्यवहार को प्रतिष्ठित करते हैं, प्रभावित करते हैं।

साध्वीश्री मंजुरेखाजी, साध्वीश्री उदितप्रभाजी, साध्वीश्री निर्भयप्रभाजी एवं साध्वीश्री चेलनाश्रीजी ने होली पर्व प्रसंग पर सुमधुर प्रेरक गीतिका का संगान किया।

इस अवसर पर प्रबुद्ध श्रावकोत्तम श्रावक श्री बजरंग जैन ने रंगों का मूल्य एवं लेश्या ध्यान के संबंध में कहा कि संतुलित व स्वस्थ जीवन शैली के लिए लेश्या ध्यान का महत्त्व है। उन्होंने प्रेक्षाध्यान पद्धति में लेश्या ध्यान का प्रयोग करवाया।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री गौतम कोठारी, उपाध्यक्ष श्री बद्रीलाल पितलिया, श्री रतनचन्द सिरोहिया, श्री जसवन्त गादिया, श्री भूपेन्द्र मुथा, यशवन्तपुर तेरापंथी सभा के मंत्री श्री गौतम मुथा, टी.पी.एफ. अध्यक्ष श्री माणकचन्द बलदोटा, श्री चम्पालाल नाहर, श्री देवराज नाहर, श्री मीठालाल मुथा आदि गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, डाबड़ी

समणीत्रय का डाबड़ी गांव में सफल प्रवास

समणी कमलप्रज्ञाजी, समणी करुणाप्रज्ञाजी व समणी सुमनप्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य में डाबड़ी में प्रवचन, ज्ञानशाला, घरों की सार संभाल के साथ-साथ विशेष रूप से अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र का संचालन तथा डाबड़ी के अन्तर्गत स्कूलों व कॉलेजों में प्रभावशाली कार्यक्रम आयोजित हुए।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पाली

पाली में संघीय गतिविधियों का संचालन

आचार्य प्रवर की विशेष कृपा दृष्टि से पाली क्षेत्र को

साधु-साध्वियों के चातुर्मास प्रतिवर्ष प्राप्त होते रहते हैं। उसी शृंखला में इस वर्ष उसे वयोवृद्ध साध्वीश्री विनयश्रीजी बोरावड़ का ठाणा-5 का चातुर्मास प्राप्त हुआ। चातुर्मास काल में तप, त्याग, ज्ञान, ध्यान का कर्म बहुत अच्छा चला।

सभा द्वारा संचालित कार्यक्रमों में मुख्य रूप से ज्ञानशाला का संचालन, आचार्यश्री तुलसी जन्म शताब्दी समारोह में केन्द्र द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों का संपादन, श्रमण संस्कृति संकाय द्वारा आयोजित जैन विद्या परीक्षाओं का संचालन एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन, साधु-साध्वियों के रास्ते की सेवा, आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा प्रारंभ अहिंसा यात्रा के दौरान एक माह तक चौका व्यवस्था। इस वर्ष आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के शुभ अवसर के सन्दर्भ में पाली के मुख्य मार्ग मण्डिया रोड़ पर आचार्य तुलसी सर्कल का निर्माण करवा कर लोकार्पण किया गया।

पाली में उदारमना समाज बन्धुओं के सहयोग से अणुव्रत द्वार का निर्माण श्री भैरचन्दजी भरत कुमार जी गोगड़ परिवार द्वारा निर्माण करवाया। अहिंसा द्वार का निर्माण श्रीमान श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री अमरचन्द पदमचन्द गादिया परिवार के द्वारा करवाया गया।

आचार्यश्री तुलसी सर्कल का निर्माण श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री भैरूलाल महावीरचन्द परिवार द्वारा करवाया गया।

गुरुदेव तुलसी का 1990 का ऐतिहासिक चातुर्मास पाली में हुआ था। उस समय नगर परिषद की ओर से महावीर नगर में अणुव्रत वाटिका का नाम दिया गया। जहां आवास व्यवस्था की गई थी उसे अणुव्रत नगर का नाम दिया गया था। अब उस स्थान का नाम स्थाई रूप से अणुव्रत नगर हो गया है।

पाली क्षेत्र की एक बड़ी विशेषता यह रही है कि तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य महाश्रमणजी भिक्षु के शासनकाल से लेकर आचार्य महाश्रमणजी के शासनकाल तक कोई भी वर्ष सम्भवतया चारित्रात्माओं के चातुर्मास के बिना नहीं रहा है।

महासभा द्वारा की जा रही संगठन यात्रा के क्रम में दिनांक 16 फरवरी, 2015 को जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री कमल दुगड़ के नेतृत्व में महासभा का प्रतिनिधि मंडल का पाली में आगमन हुआ और उसके द्वारा सभा की सार संभाल की गई। सभा द्वारा प्रतिनिधि मंडल को सभी निर्माणाधीन स्थलों का अवलोकन करवाया गया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नागपुर

नागपुर सभा में संघीय गतिविधियों का संचालन

गुरुदेव की कृपा से साध्वीश्री राकेशकुमारीजी एवं उनकी सहयोगी साध्वीश्री मलयविभाजी, साध्वीश्री विपुलयशाजी व साध्वीश्री जिज्ञाशाप्रभाजी का नागपुर में लगभग दो महीने का सफल व प्रभावी प्रवास रहा। प्रवास के दौरान संघीय प्रभावना के कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें मर्यादा महोत्सव, प्रेक्षाध्यान शिविर, भ्रूणहत्या रोकथाम, होली चातुर्मास आदि व महिला मंडल के अनेकानेक कार्यक्रम शामिल थे। साध्वीश्री की मेहनत व प्रेरणा से श्रावक-श्राविकाओं में अच्छी धर्म जागृति एवं अध्यात्म भावना का नव संचार हुआ। सभा ने रास्ते की सेवा का अच्छा लाभ उठाया। रास्ते की पैदल सेवा में सुश्री ज्योति, श्री संजय, सुश्री मधु, सुश्री अनीता, सभा के मंत्री श्री विजय, श्री शांतिलाल, श्री अमोलकचन्द्र, श्री मुकेश, उपासक श्री आदित्य, श्री राकेश, सुश्री हेमलता, सुश्री ललिता धारीवाल, श्रीमती माया सेठिया, श्री गौतम गुलगुलिया आदि ने प्रतिभागिता की।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सेमड़

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

सेमड़ सभा के तत्वावधान में एवं बिसलपुर भेरव नेत्र

अस्पताल के सम्मिलित प्रयासों से श्री अम्बालाल देवीचन्द तलेसरा माध्यमिक विद्यालय, सेमड़ में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा एवं लेंस, मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 400 मरीजों का इलाज किया गया। सभी रोगियों को निःशुल्क दवाइयां वितरित की गईं एवं बिसलपुर भेरव नेत्र अस्पताल में 77 मोतियांबिन्द मरीजों के ऑपरेशन किए गए।

इस अवसर पर श्री भैरव नेत्र यज्ञ एवं श्री भैरव नेत्र चिकित्सालय बिसलपुर के प्रधान ट्रस्टी श्री जिवराज कटारिया की अध्यक्षता में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में सायरा थाना प्रभारी श्री लीलाधर मालवीय उपस्थित थे।

वरिष्ठ समाज सेवी श्री तख्तमल ओरड़िया एवं समाज सेवी श्री दिलीप भोगर ने केम्प प्रभारी के रूप में विशेष सेवा प्रदान की।

शिविर में प्रधान अध्यापक, माध्यमिक विद्यालय के श्री रघुवीरसिंह झाला, सरपंच श्री मनीष मेवाड़ा, उप-सरपंच श्री अनिल मेवाड़ा, श्री कल्याणसिंह राजपूत, श्री महेन्द्र मेवाड़ा, श्री फतेलाल जोशी आदि ने प्रतिभागिता की।

श्री सोहनलाल तलेसरा एवं श्री बाबुलाल तलेसरा द्वारा आगंतुक मेहमानों का स्वागत एवं अभिनंदन शाल एवं माल्यार्पण के द्वारा किया गया। वरिष्ठ समाज सेवी श्री तख्तमल ओरड़िया ने ऑपरेशन एवं प्राथमिक उपचार की जानकारी दी। इस अवसर पर उपासक श्री सोहनलाल तलेसरा ने भी अपने विचार रखें।

कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रपति द्वारा सेवा पुरस्कार प्राप्त श्री प्रेमशंकर श्रीमाली द्वारा किया गया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरत

स्मृति सभा का आयोजन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरत एवं स्थानीय वाव तेरापंथ समाज के संयुक्त तत्त्वावधान में समणी निर्देशिकाश्री ज्योतिप्रज्ञाजी के सान्निध्य में वाव निवासी एवं सूरत प्रवासी तेरापंथ श्री चम्पकभाई मेहता की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती रसीलावेन के देवलोक गमन पर सोमवार 9 मार्च, 2015 को एक स्मृति सभा का आयोजन तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में किया गया।

ज्ञातव्य है कि धर्मसंघ की सुश्राविका श्रीमती रसीलावेन की चार दिन की संलेखना के बाद उनकी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वीश्री ज्योतिप्रभाजी ने गुरु आज्ञा से उन्हें संथारे का प्रत्याख्यान करवाया था। दिनांक 8 मार्च, 2015 रविवार को प्रातः लगभग 11 बजे (चार दिन का संथारा एवं 8 उपवास के साथ) उनका संथारा सीझ गया। संथारा-साधना उत्कृष्ट भावना और उच्च परिणामों के साथ सुसंपन्न हुई। वाव समाज का यह 15वां संथारा था।

इस अवसर पर अपने प्रेरक उदबोधन में समणीश्री ज्योतिप्रभाजी ने कहा कि छह महीने की कठोर तपस्या से भी संथारा अधिक महत्त्वपूर्ण है फिर चाहे वह पांच मिनिट का ही क्यों न आया हो। संथारे की साधना करने वाला साधक स्वयं सिंहवृत्ति के साथ भोजन सहित संसार की समस्त सुख-सुविधाओं का स्वेच्छा से आजीवन त्याग करता है। उसे मृत्यु का भी डर नहीं रहता। उसका समग्र जीवन त्याग और संयम से ओतःप्रोत हो जाता है।

समणीश्री मानसप्रज्ञाजी ने कहा कि संथारा साधिका श्रीमती रसीला बहन का मनोबल बहुत ऊँचा था। शारीरिक कष्टों और वेदनाओं को उन्होंने बड़े समभावपूर्वक सहा।

इस अवसर पर संथारा साधिका के पति श्री चम्पकभाई ने आजीवन जमीकंद त्याग एवं रात्रि भोजन त्याग का प्रत्याख्यान किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री माणकचन्द डागा, श्री प्रवीणभाई मेहता, श्री अशोकभाई संघवी (युवक रत्न) एवं परिवारजनों ने अपनी

भावाभिव्यक्ति की। कार्यक्रम का संचालन श्री राजेश मेहता ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गंगाशहर

मंगल भावना समारोह

गंगाशहर सभा के तत्वावधान में साध्वीश्री पुण्यप्रभाजी आदि साध्वीवृंद के विहार के अवसर पर मंगल भावना समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अपनी भावना व्यक्त करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि यहां का श्रावक समाज बहुत ही श्रद्धावान, विनयनिष्ठ एवं संघ व संघपति के प्रति पूर्ण समर्पित है। इनमें सेवा भावना बेजोड़ है।

इस अवसर पर साध्वीश्री पुण्यप्रभाजी ने भी अपने विचार रखते हुए इस स्थान को बहुत ही साताकारी और हर बात में अच्छा बतलाया। साध्वीश्री ज्ञानवतीजी, साध्वीश्री मनुयषाजी, साध्वीश्री विजयकंवरजी आदि साध्वीवृन्द ने समूह गीतिका के माध्यम से विदाई दी। मंगलाचरण श्री चैनरूप छाजेड़ ने किया।

तेरापंथ सभा के सहमंत्री श्री धर्मेन्द्र डाकलिया ने सम्पूर्ण श्रावक समाज की ओर से साध्वीश्री चन्द्रकलाजी, साध्वीश्री पुण्यप्रभाजी तथा उनकी सभा की सभी साध्वीवृन्द को सफल चाकरी हेतु बधाई देते हुए सेवा करने वाली सभी साध्वियों की सरलता, सहजता, विनम्रता और सौम्य प्रवृत्ति को अनुकरणीय और प्रशंसनीय बतलाया। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री श्री किशन बैद ने किया।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, हासन

ईबीड विद्यालय में अणुव्रत का कार्यक्रम

कर्नाटक के मंलाड क्षेत्र में साध्वी काव्यलताजी अपनी सहयोगिनी साध्वियों के साथ धर्मसंघ की प्रभावना एवं श्रावक समाज की सारणा-वारणा कर रही हैं।

साध्वीश्री जी विहार के बीच ईबीड विद्यालय में प्रिंसिपल रामाचार्य के निवेदन पर अणुव्रत का कार्यक्रम रखा, जिसमें लगभग 300 विद्यार्थी एवं अध्यापक उपस्थित थे। इस अवसर पर साध्वीश्री काव्यलताजी ने अपने उद्‌बोधन में विद्यार्थियों को अणुव्रत के संकल्पों को स्वीकार करने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री ज्योतियशाजी एवं साध्वीश्री सुरभिप्रभाजी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। साध्वीश्री वैभवयशाजी ने कन्नड़ भाषा में लियेमा की चर्चा की। अध्यक्ष श्री चान्दमल एवं श्री फूलचन्द ने जीवन विज्ञान की पुस्तिका एवं प्रमाणपत्र भेंट किए। प्रिंसिपल ने आभार ज्ञापन किया।

साध्वीवृंद का आचार्यप्रवर द्वारा निर्दिष्ट चौखलों में विहरण करते हुए हासन में पदार्पण हुआ। पूरे जैन समाज के श्रावक-श्राविकाओं ने साध्वीश्रीजी की अगवानी की।

साध्वीश्रीजी ने श्रावक-श्राविकाओं की भावनाओं का आदर करते हुए होली चातुर्मास भी हासन में किया।

इस प्रवास के दौरान श्रावक-श्राविकाओं में अच्छी धर्म जागृति आई। दोपहर में जैन विद्या की कक्षाएं, तत्त्वज्ञान की कक्षाएं भी चलाई गईं। साध्वीश्री ज्योतियशाजी, साध्वीश्री सुरभिप्रभाजी व साध्वीश्री वैभवयशाजी का श्रम सराहनीय रहा।

अहिंसा यात्रा का बहु-आयामी उद्देश्य

सद्‌भावना का संप्रसार
नैतिकता की प्रतिष्ठा
नशामुक्ति अभियान

उपासक श्रेणी, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

सूचना

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के दिशानिर्देश के अनुरूप जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा उपासक श्रेणी के विकास हेतु निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में सहयोगी उपासक-उपासिकाओं के लिए निम्नलिखित सूचना जारी की जा रही है :

- **प्रवक्ता उपासक बने** - अनेक सहयोगी उपासक-उपासिकायें कई वर्षों से ग्रुप लीडर के रूप में अपनी महत्वपूर्ण सेवायें दे रहे हैं। उनमें अनुभव और योग्यता है। अब उनसे ये अपेक्षा है कि वे प्रवक्ता उपासक बनने की प्रक्रिया पूरी करें।

  प्रवक्ता उपासकों का निर्धारित पाठ्यक्रम इस प्रकार है - 1. कालचक्र व तीर्थंकर, 2. भगवान ऋषभ व पार्श्व का जीवन, 3. प्रभावक जैनाचार्य, 4. चयनित कथाएं (ये चारों उपासना पुस्तक से) इसके साथ-साथ निर्धारित विषयों पर कुछ लेख।
- **प्रभावक जैनाचार्य** - आचार्य जंबू, प्रभव, शय्यंभव, यशोभद्र, सम्भूतविजय, भद्रबाहु, स्थूलभद्र, श्यामाचार्य, (प्रथम कालकाचार्य), कुंदकुंद, देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण, सिद्धसेन, भद्रबाहु (द्वितीय), मानतुंग, हरिभद्र, हेमचन्द्र, हीरविजय, लोंकाशाह, तेरापंथ की आचार्य परम्परा।
- **कथायें** - राजर्षिप्रसन्नचंद्र, अर्जुनमालि, अणगारमेघ, दशार्णभद्र, नंदिषेणकुमार, श्रमणोपासकआनंद, श्रमणोपासक कामदेव, श्राविका सुलसा।
- **निर्धारित विषय पर लेख** - 1. मोक्षमार्ग, 2. आत्मवाद, 3. कर्मवाद, 4. लोकवाद, 5. अनेकान्त, 6. दान और दया, 7. तेरापंथ और मूर्तिपूजा, 8. तेरापंथ : उद्‌भव और सिद्धान्त।

  इन विषयों पर लेख उपासक पाठ्यक्रम पुस्तक में संकलित हैं।
- **प्रवक्ता उपासकों की चयन प्रक्रिया (परीक्षा)** - उपरोक्त पाठ्यक्रमानुसार तैयारी आप अपने स्तर पर करें। प्रवक्ता उपासकों के लिए केन्द्र में प्रशिक्षण शिविर का आयोजन नहीं होगा। प्रशिक्षण शिविर का आयोजन केवल नये उपासक बनने वालों के लिए होगा। प्रवक्ता उपासकों के लिए 1-2 दिनों के लिए सम्पर्क कक्षाओं का आयोजन हो सकता है। लिखित, वक्तृत्वशैली व समूह चर्चा (ग्रुप डिस्कसन) इन तीन प्रारूपों में चयन परीक्षा आयोजित होगी। इस वर्ष विराटनगर में पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में 12 अगस्त को लिखित परीक्षा संभावित है। इससे पूर्व के दिनों वक्तृत्व शैली व समूह चर्चा का आयोजन होगा। अतः प्रवक्ता उपासक बनने के इच्छुक भाई-बहन 8 अगस्त तक वहां पहुंचने का लक्ष्य रखें।
- **केन्द्रीय प्रशिक्षण शिविर व सेमिनार** - परम पूज्य गुरुदेव की पावन सन्निधि में विराटनगर में आगामी दिनांक 04 अगस्त से 14 अगस्त 2015 तक प्रशिक्षण शिविर व सेमिनार की समायोजना की गई है।
- **नए उपासक बनने वालों के लिए** -दिनांक 04 अगस्त को मध्याह्न प्रवेश परीक्षा ली जाएगा। दिनांक 5 से 12 अगस्त तक प्रशिक्षण व चयन का क्रम रहेगा। दिनांक 12 अगस्त को लिखित परीक्षा संभावित है।
- **उपासक सम्मेलन व सेमिनार** - दिनांक 12-13-14 अगस्त को उपासक सम्मेलन व अहिंसा दर्शन पर सेमिनार का आयोजन किया गया है। इसमें सहयोगी व प्रवक्ता सभी उपासक भाग ले सकते हैं।

कमल कुमार दुगड़	**डालमचन्द नौलखा**	**विनोद बैद**
अध्यक्ष	राष्ट्रीय संयोजक- उपासक श्रेणी	महामंत्री

॥ अर्हम् ॥

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

द्वारा प्रायोजित

प्रथम

अन्तरराष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर

भावी पीढ़ी में संस्कार निर्माण का सुनहरा अवसर

दिनांक : 15 मई 2015 से 22 मई 2015

काठमांडु (नेपाल)

(केवल 13-18 वर्ष के बालकों के लिए)

परम पावन **महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण** की प्रथम विदेश यात्रा के अवसर पर पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में दिनांक 15 मई 2015 से 22 मई 2015 तक काठमांडु (नेपाल) में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा प्रथम **अंतरराष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिवर** का आयोजन किया जा रहा है।

इस शिविर के समायोजन का मुख्य उद्देश्य समाज के नौनिहालों को संस्कारी बनाना है। इस शिविर में जीवन जीने की कला तथा जीवन में अर्हताओं के विकास के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण सभी बिंदुओं पर विस्तृत रूप से प्रशिक्षण दिया जाएगा।

इस शिविर का मुख्य आकर्षण होगा परम पावन अमृत पुरुष आचार्य श्री महाश्रमण जी

का साक्षात पावन सान्निध्य।

इस बहुआयामी, बहु-उपयोगी शिविर में आप अपने नौनिहालों को सुसंस्कारों से आप्लावित करने के लिए, उनके बेहतर जीवन निर्माण के लिए एवं ग्रीष्मावकाश के सदुपयोगार्थ अवश्य भेजें।

अध्यक्ष
कमल कुमार दुगड़

महामंत्री
विनोद बैद

संयोजकीय संपर्क सूत्र

राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिवर

Vinod Lunia
c/o Oswal Weldmesh (P) Ltd
17, Mill Road, Coimbatore - 641001, Tamilnadu, M. +91 93677 35799
E-mail : sanskarnirman@gmail.com

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

शताब्दी अक्षय निधि कोष के महायज्ञ में योगदान हेतु आंतरिक आह्वान

महासभा की शताब्दी अक्षय निधि कोष योजना के तहत मुक्त हस्त से सहयोग कर महासभा की विभिन्न परियोजनाओं को संपोषित करने और महासभा को समाज सेवा के क्षेत्र में गौरवशाली भूमिका निभाने में योगदान हेतु पुन: निवेदन

महासभा की इस प्रगतिकामी परियोजना से आप सभी अंतर्मन से जुड़ें और इसे पूर्ण सफल बनाएं।

अनुदान का महायज्ञ प्रारम्भ हो चुका है, समग्र समाज अक्षय निधि कोष से जुड़कर दायित्व बोध का परिचय दें एवं गौरव की अनुभूति करें।

- "शताब्दी अक्षय निधि कोष" की स्थापना का उद्देश्य है कि कोष को अक्षुण्ण रखते हुए इसकी आय से संस्था की आवश्यकताओं के साथ-साथ अन्य सामाजिक अपेक्षाओं की संपूर्ति की जाए।
- संपूर्ण समाज को कंधे से कंधा मिलाकर नव उन्मेषों के आरोहण में सहभागी-सहयोगी बनने हेतु प्रेरित किया जाए।
- एकरुपता एवम् सुव्यवस्था की दृष्टि से प्रति सदस्य सहयोग राशि ग्यारह हजार प्रस्तावित है परन्तु आप अपनी भावना के अनुरूप अधिक या कम राशि का भी योगदान कर सकते हैं। मूल लक्ष्य समाज के प्रत्येक सदस्य की इस महान उपक्रम में सहभागिता है।

अब तक घोषित राशि Rs. 4,99,24,223/- | अब तक प्राप्त राशि Rs. 3,55,92,112/-

शताब्दी अक्षय निधि कोष के फरवरी-2015 के सहयोगी

2,91,000/-	श्री दिलीप सिंघवी, जोधपुर
1,11,111/-	श्री बसन्त कुमार विजय कुमार नौलखा, बीकानेर
1,00,000/-	श्री गोविन्दलाल सरावगी, कोलकाता (स्व. महादेव लाल जी सरावगी की पुण्य स्मृति में)
51,000/-	श्री मोतीलाल, निर्मल, अनिल, अभय, अंकित, अपूर्व, वंश भूरा परिवार, नोखा- कोलकाता
11,000/-	मास्टर अपूर्व भूरा (सुपुत्र- अनिल भूरा, सुपौत्र - दुलीचन्द भूरा), नोखा - कोलकाता
11,000/-	श्री जेठमल शान्तिलाल प्रकाशचन्द लूनावत परिवार, गंगाशहर
11,000/-	श्री हरि सिंह पारख, कोलकाता
11,000/-	श्री रतनलाल बच्छावत, सरदारशहर
11,000/-	श्री जयकरण बच्छावत, सरदारशहर
11,000/-	श्री सुन्दरलाल दुगड़, मनेन्द्रगढ़
11,000/-	श्री अभय कुमार कमल कुमार सेठिया, कोलकाता
11,000/-	श्री राजेन्द्र पुगलिया, कोलकाता
11,000/-	श्री सुयश पुगलिया, कोलकाता
11,000/-	श्री रिषभ पुगलिया, कोलकाता

सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका फरवरी 2015 तक 7711 नग बिक्री की गई है, जिसका मूल्य रु. 23,13,300/- है। सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका से संगृहीत राशि का नियोजन शक्षाब्दी अक्षय निधि कोष में किया जा रहा है।

महासभा की विभिन्न प्रवृत्तियों में अनुदान की राशि निम्नलिखित अनुदानदाताओं से अथवा उनके सद्प्रयासों एवं प्रेरणा से प्राप्त हुए।

(दिनांक : 01.02.2015 से 28.02.2015)

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह

31,11,111/- श्री दिलीप सिंघवी, जोधपुर
1,00,000/- श्री राजेन्द्र सेठिया, औरंगाबाद
1,00,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, यशवन्तपुर
1,00,000/- श्री चम्पालाल गिड़िया, अगरतला
1,00,000/- श्री जयनारायण राजलीवाला, बरवाला
1,00,000/- श्री प्रवीण जैन, हांसी
1,00,000/- श्री शीतल जैन, हांसी
50,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मंडी आदमपुर

स्मारक स्थल

5,00,000/- श्री भंवरलाल दुगड़, मुम्बई
50,000/- श्री प्रकाश कोठारी, रायपुर

महासभा की विविध गतिविधियों हेतु

1,20,000/- श्री नोरतनमल डागा, शिवाकाशी (अमृत योगक्षेम कोष)
21,000/- श्री अजीत सिंह, छत्तर सिंह, कमल सिंह पगारिया, कोलकाता
11,000/- श्री सम्पतराय दस्सानी, कोलकाता
11,000/- श्री नरेन्द्र, महेन्द्र, जितेन्द्र, वीरेन्द्र आंचलिया, कोलकाता
5,100/- श्री रतनलाल बच्छावत, सरदारशहर

श्री बुधमल दुगड़ साहित्य संवर्द्धन स्थायी कोष

25,00,000/- सर्वश्री बुधमल, सुरेन्द्र, तुलसी, कमल दुगड़, रतनगढ़-कोलकाता

अहिंसा यात्रा

11,00,000/- श्री दिलीप सिंघवी, जोधपुर

विशिष्ट सभा पुरस्कार

51,000/- श्री मांगीलाल छाजेड़, बैंगलोर

सहभागिता योजना

35,650/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पंचकूला
29,800/- साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हावड़ा
12,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जयगांव
12,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, राजनांदगांव
4,350/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, विलासपुर

सभाओं में चुनाव

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सलेम

चुनाव की तारीख		26.12.2014
अध्यक्ष	:	श्री घीसूलाल संचेती
उपाध्यक्ष	:	श्री महावीर डूंगरवाल
		श्री तरुण सेठिया
मंत्री	:	श्री प्रवीण बोहरा
सहमंत्री		श्री रमेश आंचलिया
कोषाध्यक्ष	:	श्री नीतेश फूलफगर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सायरा

चुनाव की तारीख		28.12.2014
अध्यक्ष	:	श्री ख्यालीलाल सिसोदिया
उपाध्यक्ष		श्री कांतिलाल मोगर
मंत्री	:	श्री जयन्तीलाल कोठारी
सहमंत्री		श्री जीतमल जसराज मेहता
कोषाध्यक्ष	:	श्री जवाहरचंद सिसोदिया
सह-कोषाध्यक्ष	:	श्री मोतीलाल भंवरलाल मोगर

विनोद बैद, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता - 700 001 से प्रकाशित एवं प्रेषित और आकार अक्षर प्रेस प्रा. लि. द्वारा मुद्रित।

अहिंसा यात्रा के अवसर पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय में आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति महानुभावों के भाव

हमारा सौभाग्य है कि आप अहिंसा यात्रा के साथ हमारे इस परिसर में पधारे। अहिंसा यात्रा के तीनों उद्देश्य स्वस्थ समाज की सरंचना के लिए आवश्यक हैं, आधारभूत हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि इस परिसर में रहने वाले लगभग बीस हजार छात्रों के मन-मस्तिष्क पर अहिंसा यात्रा का एक स्वस्थ और स्थायी प्रभाव पड़ेगा। आप आशीर्वाद दें कि हम महामना मदनमोहन मालवीयजी के सपनों को साकार बना सकें।

- **प्रो. गिरीशचन्द्र त्रिपाठी,** कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

गौतम बुद्ध के प्रथम उपदेश की भूमि काशी का पुण्योदय है कि आचार्यजी के यहां चरण पड़े हैं। आचार्यश्री संयम और शुद्ध चारित्र की प्रतिमूर्ति हैं। आप साधना की दृष्टि से उत्कर्ष पर हैं। आप प्रखर चिन्तक, कुशल नियोजक और आगमज्ञ हैं। जैनों के चार संप्रदायों में तेरापंथ सबसे ज्यादा अनुशासित संगठन है। दो महापुरुषों ने अहिंसा को अपना अस्त्र बनाया - महात्मा गांधी और आचार्यश्री महाश्रमण। दोनों की यात्रा मोहन नाम से शुरू होती है। महात्मा गांधी बीसवीं सदी के महामानव हैं तो आचार्यश्री महाश्रमणजी इक्कीसवीं सदी के महामानव हैं।

डॉ. श्री प्रकाश पाण्डेय, संयुक्त निदेशक, पार्श्वनाथ विद्यापीठ

आचार्यश्री महाश्रमणजी अपने धवल चरित्र से चारों दिशाओं में अपना और अपनी गुरु परंपरा का यश फैलाते हुए अपनी धवल सेना के साथ विश्व कल्याण की भावना से अहिंसा यात्रा करते हुए बाबा विश्वनाथ की नगरी में आए हैं। अहिंसा यात्रा के तीनों उद्देश्य अहिंसा के साथ सूक्ष्मता से जुड़े हुए हैं और वे हिंसा के मूल को नष्ट करने वाले हैं। महाश्रमण नाम का तात्पर्य है कि आचार्यश्री का पूरा जीवन 'महाश्रम' का पर्याय है तथा 'ण' नमस्कार महामंत्र के पांचों पदों का प्रतिनिधित्व करता है।

स्वामी अविमुक्तेश्वरानंदजी, विद्यामठ, काशी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष के ऐतिहासिक अवसर पर आज इस विश्वविद्यालय में आचार्यश्री महाश्रमणजी का पदार्पण हुआ। मैं विश्वविद्यालय परिवार की ओर से आपका अभिनंदन करता हूं। इस सभागार में आचार्यश्री के मुख से जो सन्देश सुना, निश्चित रूप से वह विश्वव्यापी होगा। आचार्यश्री ने हमें जो शपथ दिलाई, मैं स्वयं उसका पालन करते हुए अपने संकाय में उसे प्रसारित करूंगा। मैं अपने विद्यार्थियों को बताऊँगा कि सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के मार्ग पर चलकर हम अच्छे राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

प्रो. आशाराम त्रिपाठी
वाणिज्य विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

अहिंसा यात्रा

सद्भावना • नैतिकता • नशामुक्ति

भारत नेपाल भूटान

WITH REVERENCE

urja

B. N. GROUP

VINOD ARIHANT BAID FOUNDATION

FORT® GROUP
The Fourth Dimension of Space

BMD
Sincere Service
BMD GROUP OF COMPANIES
KBD Foundation
Budhamall Surendra Dugar Foundation
Budhamall Tulsi Dugar Foundation
Budhamall Kamal Dugar Foundation

Himachal Futuristic Communications Ltd.

BENGAL ENERGY

SUBHKAM VENTURES

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

(ISO 9001 : 2008 प्रमाणित संस्था)

3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता - 700 001
दूरभाष : 2235 7956, 2234 3598, फैक्स : 033 2234 3666
email: info@jstmahasabha.org